भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक श्री साइमन हैक्सी द्वारा लिखित "Tory
.P." नामक अंग्रेजी ग्रंथ का संक्षिप्त अनुवाद है। इसमें वर्तमान
श पार्लिमेंट के उस दल का वर्णन मिलेगा, जिसके हाथ में इस
य संपूर्ण बृटिश साम्राज्य का शासनाधिकार है। यह दल अपने
"राष्ट्रीय दल" (National Party) के नाम से पुकारता
किंतु इसमें किस प्रकार के लोग भरे हैं और उनके विचार एवं
द्धांत किस प्रकार के हैं यह पुस्तक को पढ़ने से ही मालूम होगा।
यहाँ दोहराने की जरूरत नहीं। इस दल का संगठन और
करण सन् १९३१ में किया गया था। अस्तु, इसी "राष्ट्रीय दल"
नग्न स्वरूप और इसी के तमाम सदस्यों की सच्ची-सच्ची हुलिया इस
तक में चित्रित की गयी है।

'अंग्रेजी की मूल पुस्तक इंग्लैंड में जुलाई सन् १९३९ में प्रकाशित
थी। छपते ही यह वहाँ इतनी अधिक लोकप्रिय हुई, कि इसकी
कापियाँ तत्काल हाथों-हाथ बिक गई। चार ही महीने में
नवम्बर मास तक इसके तीन संस्करण निकल चुके। हम
वासियो के लिए भी इस पुस्तक की उपयोगिता कुछ कम नहीं
जा सकती, कारण कि इस देश के भी भाग्य-विधाता वे ही
हैं, जिन के हाथ में बृटिश शासन की इस समय नकेल है।
लोगों से हमें स्वराज्य का अधिकार प्राप्त करना है वे कैसे हैं
उनके विचार एवं व्यवहार किस प्रकार के हैं इसका ज्ञान
स्वातन्त्र्य युद्ध की सफलता के लिए उपयोगी ही नहीं, बल्कि
भी कहा जा सकता है। अस्तु इसी विषय का ज्ञान कराने
लिए यह अनुवाद सामने है।

पुस्तक में वृटिश शासक-दल को राष्ट्रीय दल के नाम से नहीं पुकारा गया है, बल्कि 'टोरी' (या 'अनुदार दल') के नाम से पुकारा गया है. कारण, जैसा कि पुस्तक को पढने से मालूम होगा, यह दल वास्तव मे पुराने टोरी-दल का ही एक परिवर्तित रूप मात्र है। अब यह पुराना टोरी दल क्या था इसे समझने के लिए इग्लैंड के पुराने इतिहास मे जाना पडेगा। साथ ही वृटिश पार्लिमेंट के सम्बन्ध मे भी थोडा सा हाल जान लेना पुस्तक के अध्ययन में सुविधाजनक होगा। अतएव नीचे सक्षेप में हम वही बतलाने जा रहे हैं।

हम जानते हैं कि अग्रेजी शासन का सपूर्ण अधिकार इस समय वृटिश पार्लिमेंट के हाथों मे है। यह पार्लिमेट दो सभाओं से मिल कर बनी है, जिनमे से पहली सभा का नाम 'हाउस आफ लार्ड्स' है और दूसरी का नाम 'हाउस आफ कामन्स' है। हाउस आफ लार्ड्स में देश के तमाम बडे-बडे खान्दानी सरदार, सामत एव लार्ड-उपाधिधारी अमीर लोग बैठते हैं, और हाउस आफ कामन्स में केवल प्रजा के चुने हुए सदस्य बैठा करते हैं। मन्त्रियों का चुनाव इन्हीं सदस्यों द्वारा किया जाता है, और प्रत्येक मत्री अपने कार्य के लिए पूर्ण रूप से पार्लिमेंट के प्रति उत्तरदायी रहता है।

इस वृटिश पार्लिमेंट का जन्म और विकास तेरहवीं शताब्दी से दिखाई देता है। उस समय इगलिस्तान में राजा और सामतों के बीच राजनैतिक शक्ति के लिए नित्य ही लड-झगड़ रहा करती थी कभी राजा शक्तिशाली हो जाता था, तब सामंतों को दबना पड़ता था। और कभी सामतों की शक्ति बढ जाती थी, तब राजा को दबना पड़ता था। सन १२१५ में राजा की शक्ति कमजोर पड़ी और सामतों की शक्ति प्रबल हो गई। अतएव उसे मजबूर हो कर सामतों के सामने एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना पडा, जो इग्लैंड के इतिहास में एक बडी प्रसिद्ध घटना थी। प्रत्येक अग्रेज इस प्रतिज्ञा

बराबर बढते गये, यहाँ तक कि आगे चल कर राजा एक दिखावटी खिलौना मात्र रह गया।

किंतु पार्लिमेंट की यह शक्ति सहज ही इतनी अधिक नही बढ गयी। इसके लिए उसे राजाओं के साथ बहुत दिनों तक झगडे और लडाइयाँ करनी पड़ीं, जिसका विवरण इंग्लैंड के इतिहास से मालूम किया जा सकता है। ट्यूडर राजवश के समय तक पार्लिमेंट की शक्ति कुछ अधिक नही बढ़ पायी थी। इस वंश के प्रायः सभी शासक एक प्रकार से बिल्कुल निरकुश थे। साथ ही उनमें इतनी समझ भी थी कि उन्हो ने कभी पार्लिमेंट से खुल कर झगड़ा नहीं किया। किंतु स्टुअर्ट वश का राज्यकाल आते ही झगड़ा-बखेड़ा शुरू हो गया। इस वश का पहला राजा, जेम्स प्रथम, आरंभ में केवल स्काटलेंड का शासक था, किंतु रानी एलिजबेथ के मरते ही वह इंग्लैंड का भी राजा बना दिया गया। इसका दावा था कि राजा को प्रजा पर राज्य करने का ईश्वरदत्त अधिकार है और कोई व्यक्ति उसके इस अधिकार पर हस्तक्षेप नही कर सकता। निदान पार्लिमेंट के साथ उसका झगड़ा शुरू हो गया। यह झगड़ा उसके जीवन पर्य्यंत बराबर बढता ही गया। सन् १६२५ में उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद जब उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम गद्दी पर बैठा, उस समय इस झगडे ने और गभीर रूप धारण किया। सन् १६२८ में पार्लिमेंट ने इस राजा की सेवा में एक निवेदन-पत्र पेश किया,

इसके बाद यह झगड़ा विकराल रूप धारण करने लगा,
के परिणामस्वरूप सन् १६४२ मे राजा और पार्लिमेंट के बीच
भयंकर गृहयुद्ध छिड़ गया। राजा के पक्ष में बहुत से सामन्त
र सर्दार थे तथा सेना के अधिकांश सिपाही थे। और पार्लिमेंट
पक्ष मे लंदन के नागरिक तथा अनेक बड़े-बड़े अमीर व्यापारी
र्लिमेंट-पक्ष का नेता आलिवर क्रामवेल था, जो एक बहादुर और
ा योग्य व्यक्ति था। यह युद्ध कई वर्ष तक चलता रहा। अन्त मे
त पार्लिमेंट की हुई और चार्ल्स कैद कर लिया गया। सन् १६४६ ई०
उस पर न्यायालय मे मुक़दमा चलाया गया और पश्चात् उसे
ाँसी दे दी गयी। यह खबर योरोप के देशो मे जिस समय पहुँची
सर्वत्र एक भयंकर सनसनी सी फैल गई और वहाँ के तमाम राज-
हासन एकबारगी भय से हिल उठे।

इसके बाद इंगलैण्ड में आलिवर क्रामवेल के अधीन एक
जातंत्र की स्थापना की गई। किन्तु सन् १६५८ मे क्रामवेल की
ृत्यु हो गई और उसके दो वर्ष पश्चात् वह प्रजातंत्र भी समाप्त
ो गई। अब अंग्रेजो का राजप्रेम फिर जाग उठा और उन्होने
स्वर्गीय चार्ल्स के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को फ्रास से बुला कर राजगद्दी
र बैठाया। किन्तु यह व्यक्ति केवल एक विलासी पुरुष था और
अपने भोग-विलास के आगे किसी दूसरी बात की चिन्ता ही नहीं
करता था। अतएव इसके राज्यकाल मे कोई नई बात नही हुई।
किन्तु उसके मरते ही जब उसका भाई जेम्स द्वितीय गद्दी पर बैठा,
तब राजा और पार्लिमेट के बीच झगड़ा फिर आरम्भ हो गया।
यह झगड़ा धार्मिक और साम्प्रदायिक प्रश्नो पर था। किन्तु पार्लिमेट
के आगे जेम्स की कुछ भी न चली और उसे अपने प्राण लेकर
फ्रास भाग जाना पड़ा। अब पार्लिमेंट ने एक दूसरे व्यक्ति को राजपद
के लिए चुना। इसका नाम विलियम था। इसका विवाह राजघराने
की एक कन्या 'मेरी' के साथ हुआ था। अतएव विलियम और मेरी

अब संयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शका या प्रश्न करने का साहस नहीं हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनों जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-संस्था के नाम से नहीं पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इग्लैण्ड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमे एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नहीं रहता था। कहते हैं सन् १७९३ ई० में हाउस आफ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा में तो लार्ड उपाधिधारी बड़े-बड़े सामत जमींदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा मे भी अधिकतर सदस्य

यहाँ तक तो बृटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन
आ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना ज़रूरी है।
टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए
हले-पहल सन् १६७८ ई० के क़रीब किया गया था। उस समय राजा
और पार्लिमेंट के झगड़े में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया
। उन्हीं के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे
। राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर
जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदें प्राप्त थीं।
स प्रकार प्रायः तमाम बड़े-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी
ारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई
ते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे
और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो
ोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे
व्हिग पार्टी' (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार
र्लिमेंट के तमाम सदस्य 'व्हिग' और 'टोरी' दो दलों में विभक्त
गये थे।

सन् १८३२ के सुधार क़ानून के समय इन दोनों दलों का
ाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'**
Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और
ग पार्टी का नाम **'लिबरल'** (या **'उदार') पार्टी** पड़ गया। आगे
ल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर
किया गया। उस समय प्रधान मंत्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल
ल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल
अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव
ब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'**
खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही
क तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

यहाँ तक तो बृटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन हुआ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना ज़रूरी है। 'टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए पहले-पहल सन् १६७८ ई० के करीब किया गया था। उस समय राजा और पार्लिमेट के झगडे में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया था उन्ही के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे जो राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर से जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदें प्राप्त थीं। इस प्रकार प्रायः तमाम बडे-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी धारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई देते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो लोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे **'व्हिग पार्टी'** (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार पार्लिमेंट के तमाम सदस्य 'व्हिग' और 'टोरी' दो दलो में विभक्त हो गये थे।

सन् १८३२ के सुधार क़ानून के समय इन दोनों दलों का नाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'** (Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और ह्विग पार्टी का नाम **'लिबरल'** (या **'उदार'**) **पार्टी** पड़ गया। आगे चल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर से किया गया। उस समय प्रधान मन्त्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल बिल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल से अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव अब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'** रक्खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही एक तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

अब संयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शका या प्रश्न करने का साहस नही हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनों जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-सस्था के नाम से नही पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इंग्लैण्ड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमे एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नहीं रहता था। कहते हैं सन् १७९३ ई० मे हाउस आफ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा में तो लार्ड उपाधिधारी बडे-बडे सामत-जमीदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा में भी अधिकतर सदस्य प्रभावशाली जमींदार और रईस ही लोग हुआ करते थे। गरीबों और मध्यश्रेणी वालों का उसमे कोई प्रतिनिधित्व नही दिखाई देता था। चुनाव में बेईमानी और रिश्वतबाजी का बाजार भी उस समय खूब गर्म था। अन्त में प्रजा के बहुत दिनों तक आन्दोलन करते रहने पर सन् १८३२ ई० मे एक सुधार कानून पास किया गया, जिससे निर्वाचकों की सख्या में वृद्धि की गयी। आगे चल कर समय-समय पर यह संख्या और अधिक बढायी गई और अब इस समय वहाँ पार्लिमेंट के चुनाव मे वोट देने का अधिकार प्रत्येक बालिग स्त्री और पुरुष को प्राप्त हो गया है।

इस समय वहुत से नवाव लोग मौजूद हैं। मन्त्रिमंडल के अंदर इस समय कम से कम एक मार्केस, तीन अर्ल, दो वाईकाउन्ट, एक वेरन तथा एक वेरनेट दिखाई देते हैं, और यह मंत्रिमंडल केवल कामन्स-सभा की मर्जी पर ही टिका हुआ है।

किंतु इन तमाम उपाधियो का उन गंभीर प्रश्नो से क्या वास्ता है, जिनसे हमे नित्य मुकावला करना पड़ता है? इस समय राष्ट्र की अनेक ऊँची से ऊँची जगहे इन्ही पदवीधारी नवावो से भरी हुई हैं। तव क्या ये नवाव ही अग्रेजी शासन-विधान के सव से उत्तम सरक्षक कहे जा सकते हैं? इन्हे इस प्रकार शक्ति से सम्पन्न ऊँचे-ऊँचे आसनों पर वैठाने वाला अनुदार राजनैतिक दल है, जो अपने पक्ष के कामन्स सभा मे वैठनेवाले ४५० मेम्वरों को छोड़ कर परराष्ट्र-सचिव, शिक्षा मत्री तथा भारत-मत्री के पदो के लिए लार्ड्स सभा के ही आदमियो को ज़्यादा पसद करती है।

वृटिश अनुदार दल मे रईसो और नवावों का इतना महत्वपूर्ण भाग है कि इनका अध्ययन यहाँ की राजनैतिक संस्थाओं को समझने मे वड़ा उपयोगी सिद्ध होगा।

कामन्स-सभा मे इस समय जितने सदस्य उपाधिधारी घरानों के हैं, उनमे से वहुतेरो की उपाधि का इतिहास उन्नीसवीं शताब्दी मे मिलता है और कुछ की उपाधियाँ तो इससे भी अधिक पुरानी हैं। शेष अनुदार सदस्यो को अभी हाल मे ही उपाधियाँ दी गई हैं, कारण कि इधर हाल की सरकारो ने, और विशेष कर सन् १९३१ के वाद की अनुदार सरकार ने तो उपाधि-वितरण के कार्य मे अपनी वेहद उदारता दिखाई है।

पहिले जो कुछ थोड़े से उपाधिधारियो के नाम गिना आये हैं, उन्हे देखने से जान पड़ता है कि कामन्स सभा और लार्ड्स सभा के अनुदार सदस्यों में वहुत ही घनिष्ट सम्वध है। तव क्या लोगों की यह धारणा

ठीक है कि वर्तमान वृटिश शासन मे लार्डस सभा मध्यकाल की बची हुई एक लाश के समान रह गयी है ? अथवा यह ठीक है कि देश की शासन-नौका को चलाने मे उसका भी एक शक्ति-शाली भाग रहता है ? क्या लार्डस सभा और कामन्स सभा मे अग्रेजी नवावो का दोहरा प्रतिनिधित्व इस बात को पूरी तौर से साबित नही करता कि इन नवावो के हाथ मे अब भी एक जबर्दस्त ताकत और राजनैतिक जिम्मेदारी मौजूद है ? लेकिन क्या जनतत्रात्मक सस्थाओ के प्रति भी उन्हे अपनी कुछ जिम्मेदारी का ज्ञान है, अथवा उनका एक मात्र उद्देश केवल ओहदा और अपने स्वार्थों की रक्षा करना भर है ?

इन महत्वपूर्ण प्रश्नो का जवाब देने के लिए हमे इस सामतमडल के उस भाग का विश्लेपण करना होगा, जिसका अधिकतर सवन्ध कामन्स सभा से है, किंतु यह कार्य।केवल पुराने इतिहास मे घुसने से ही पूरा हो सकता है।

वृटिश सामन्तवाद का जन्म अग्रेजी 'फ्यूडलिज्म' (Feudalism) अर्थात् जागीरदारी के जमाने मे हुआ था। 'फ्यूडलिज्मा' का शुद्ध अर्थ है **'जमींदारों का शासन'**, और जो उपाधियॉ इन जमींदारो अथवा जागीरदारो को दी जाती थीं, वे केवल उनकी राजनैतिक एव आर्थिक शक्तियो को ही सूचित करने के लिए हुआ करती थी। फ्यूडल सिद्वात के अनुसार इगलिस्तान की सारी भूमि का स्वामी वहॉ का राजा समझा जाता था, और बाकी जितने जागीरदार या जमींदार थे वे केवल उसके आसामी थे। राजा के बाद जागीरदारो और जमीन्दारो की एक के नीचे एक शृंखलाबद्ध श्रेणियॉ सी बनी हुई थी, जिससे एक छोटे-से छोटे भूमि के टुकडे का भी मालिक किसी न किसी व्यक्ति का मालगुजार हुआ करता था और इन सबो का प्रधान जमींदार केवल राजा समझा जाता था। उपाधियो की प्राप्ति केवल भूमि के अधिकार पर निर्भर थी, और अग्रेजी नवावो की पदवी केवल

उन्ही लोगो को मिलती थी जिनके पास बहुत ज्यादा जमीन हुआ करती थी।

ये अग्रेजी नवाब (या ताल्लुकेदार) लोग सदैव एक दूसरे से तथा राजा के साथ भी लड़ते-झगड़ते रहते थे, किंतु फिर भी इनकी स्थिति मे किसी प्रकार की कमजोरी नही आने पायी। मध्यकाल के पिछले भाग तक उपरोक्त उपाधियॉ न केवल जमीन के ही अधिकार को सूचित करती थी, बल्कि राजनैतिक अधिकारो की भी सूचक थी।

नये नवाबो की भर्ती किसी एक पीढी मे बहुत ही थोड़ी हुआ करती थी और वह भी केवल भूमि की प्राप्ति से ही हो सकती थी। आगे चल कर यद्यपि भूमि की शर्त इसके लिए बनी हुई थी, किंतु अब यह भूमि बडे-बडे व्यापारियो और व्यवसाइयो के हाथ मे आने लगी, जो भारतवर्ष तथा अन्य बाहरी देशों को लूट-लूट कर धनकुबेर बन रहे थे, और जिन्होंने इग्लैंड आकर अपने लिए जमीन तथा पार्लिमेट की मेम्बरी प्राप्त करने मे पानी की तरह धन बहाना आरभ कर दिया था। इससे भूमि का मूल्य इतना अधिक बढा कि वहॉ के पुराने खान्दानी नवाबो के लिए भी एक खासी समस्या पैदा हो गयी, कारण कि उन बेचारो को केवल अपनी खान्दानी बॅधी हुई आमदनी का ही भरोसा था और इसलिए वे पार्लिमेट मे अपनी ताकत कायम रखने के हेतु इन नये नवाबो के बराबर पैसे नही खर्च कर सकते थे। बाद मे ज्यो ज्यो अग्रेजी व्यापारियों का नये-नये उपनिवेशो मे लोहा सोना, ताम्बा, कोयला, तेल आदि की खानो, बैको, बीमा कपनियो और दूसरे प्रकार के कारखानो का कारबार बढ़ने लगा, त्यो-त्यो उनके राजनैतिक रुतबे और शक्ति मे भी वृद्धि होती गयी। आजकल जो बहुत से अग्रेज नवाब दिखाई देते हैं उनकी भर्ती प्रायः इन्ही बडे-बडे व्यवसाइयो मे से की गयी है।

बृटिश राज्य-क्राति के समय से कामन्स सभा की शक्ति देश भर मे प्रधान हो गयी। अस्तु, अब मन्त्री लोग भी राजा के प्रति उत्तरदायी

न होकर कामन्स सभा के प्रति उत्तरदायी हो गये। किंतु कामन्स सभा की शक्ति के बढने से अग्रेजी नवाबो की शक्ति मे किसी प्रकार की कमी नही आने पायी। प्रत्युत् अब उन्हे और भी स्वच्छन्दता मिल गयी, कारण कि पहले तो उन्हे सदा राजा की कृपादृष्टि पर निर्भर रहना पड़ता था, जिससे उनकी स्थिति बहुत स्थिर नही कही जा सकती थी, किंतु अब कामन्स सभा मे अधिकार जमाना उनके लिए विशेष कठिन न था, और इसलिए शासन की सारी शक्ति उन्ही की हाथ मे आ गयी। गवर्नमेंट के तमाम विभागो पर इन्ही नवाबो का आधिपत्य दिखाई देने लगा। पार्लिमेट की दोनो सभाओ पर इनका प्रभाव था ही। अतएव तमाम सरकारी नियुक्तियाँ सब इन्ही के हाथ की चीज हो गयी। स्थानीय शासन तथा केन्द्रीय शासन मे हर जगह इन्ही के नातेदार और रिश्तेदार भरे जाने लगे। इस प्रकार समस्त देश एकबारगी इनके पजे के नीचे आ गया।

'परम्परा के अधिकारो का सम्पूर्ण ढॉचा जमीन और जायदाद का सूचक है। और हर एक काल मे किसी न किसी ढग की जायदाद ही नवाबी सनद और उपाधियो की प्राप्ति के लिए सब से बड़ी योग्यता समझी जाती रही है। पहले जमाने मे इन उपाधियो और सनदों का देने वाला राजा था, और यद्यपि आज भी सिद्धाततः इनका वितरण उसीके नाम से किया जाता है, किंतु, जैसा कि सब को विदित है, इन उपाधियो एव सनदो की सूची अब सदैव उन लोगो के हाथ से तैयार हुआ करती है, जिनके हाथ मे देश का शासन है। किंतु आज भी जो नवाबी की सनद बडे-बडे व्यापारिक महारथियो को दी जाती है, उसका मूलाधार वास्तव मे वही है जो सोलवहीं शताब्दी मे बडे-बडे जमीन्दारों और ताल्लुकेदारो को नवाब बनाने मे था।

इगलिस्तान के जो सब से पुराने नवाबी वश हैं उनकी अधिकतर सम्पत्ति वस्तुतः भूमि ही है। ड्यूक आफ बक्लू (Duke of Buccleuch) और ड्यूक आफ डेवान शायर (Duke of

Devonshire) इस वर्ग के सबसे प्रसिद्ध वश कहे जा सकते हैं। किंतु उन्नीसवी शताब्दी मे जायदाद और सम्पत्ति का रूप बदल गया। अतएव उस समय से नवाबो की भर्ती बड़े-बड़े व्यवसायिक नेताओ में से की जाने लगी।

जिस समय सम्पति का मुख्य स्वरूप भूमि के रूप मे था, उससमय यहॉ के नवाब लोग जमीदार और ताल्लुकेदार हुआ करते थे। किंतु जब यहॉ व्यवसायो का महत्व बढ़ा, तब ये लोग बडे से बडे व्यवसाय-पतियो के वर्ग में पाये जाने लगे। इस समय अधिकाश नये-नये व्यवसाय के डायरेक्टरो मे नवाबों की सख्या मौजूद है। हर एक पीढ़ी के नये नवाब पुराने नवाबो के साथ इस प्रकार हिल-मिल कर एक हो गये हैं कि उनमें अब कुछ भी अतर नहीं दिखाई देता।

यद्यपि इसमें सदेह नही कि आरभ में कुछ दिनो तक प्राचीन वश के नवाब नये रगरूटो के प्रति हार्दिक घृणा और विरोध-भाव दिखाया करते थे। किंतु बाद में जब उन्होंने समय के बहाव को देखा तब अपना रुख भी उसी के अनुकूल बना लिया। जो कुछ थोड़े से लोग अपने हठ पर अड़े रहे वे राजनैतिक क्षेत्र मे पीछे ढकेल दिये गये और उनकी जगह नये-नये व्यापारी-नवाबो ने लेली। साधारण तौर पर प्राचीन वश वालो ने विजयी पक्ष का साथ पकड़ने मे ही अपनी कुशल समझी। अब वे इस समय सब एक है और मुख्यत: बड़े-बड़े व्यवसायो का नेतृत्व अपने हाथ में रखते है तथा अनुदार पक्ष के मुख्य स्तभ है।

अनुदार पक्ष वास्तव मे लार्ड्स सभा का दल है, कामन्स सभा का नही। किंतु फिर भी इसने अपना प्रभाव केवल लार्ड्स सभा तक ही परिमित नही रखा। कामन्स सभा मे भी यह अपना पूरा प्रभाव बनाये रखने के लिए सदा से सचेष्ट रहा है। बेजहाट (Bagehot) नामक लेखक इस सम्बध मे टीका करते हुए लिखता है:—

"बडे-बड़े सामत लोग अपना प्रभाव हाउस आफ लार्डस के बजाय हाउस आफ कामन्स में जमाने के लिए अधिक क्रियाशील रहते थे।

पाकर नवाबी रुतबे तक पहुँचा दिये जाते हैं। वास्तव मे उपाधियो का मुख्य तात्पर्य राजनैतिक दृष्टि से अल्प-सख्यक अमीरो के सगठन को सुरक्षित रखना तथा सुदृढ बनाना ही है। अस्तु, आजकल उपाधियो के वितरण को केवल "बडे-बडे आदमियों" की "सार्वजनिक सेवा" के लिए सम्मान-प्रदर्शन की रस्म-अदाई मात्र नही मान लेना चाहिए, बल्कि उसे सरकारी पक्ष के सब से ऊँचे स्थानो मे ऐसे लोगो की भर्ती समझनी चाहिए, जिन्होने बृटिश साम्पत्तिक और व्यावसायिक क्षेत्र मे नेतृत्व का स्थान प्राप्त कर लिया है।

अपने उपरोक्त कथन की पुष्टि मे हम कुछ ऐसे लोगों का ब्यौरा देंगे, जो अभी हाल मे सन् १९३१ के बाद, अर्थात् वर्तमान बृटिश राष्ट्रीय सरकार के ही शासन-काल में, नवाबो के दर्जे मे भर्ती किये गये हैं।

इस प्रकार का व्यौरा कई दृष्टियो से उपयोगी जान पडता है। प्रथम तो इस से यह विदित हो जायगा कि जनता मे से किस प्रकार के आदमी नवाबी दर्जे मे भर्ती किये जाते हैं। दूसरे, इसके द्वारा वर्तमान बृटिश सरकार के स्वरूप को समझने मे भी बहुत कुछ सहायता मिलेगी, कारण कि जैसे लोगो को वह सम्मानित करना पसद करती है उन्ही के अनुकूल उसका स्वाभाव भी होगा।

सन् १९३१ से अब तक वर्तमान बृटिश सरकार द्वारा कुल ९० मनुष्यो को नवाबी उपाधियाँ बाँटी गई हैं। इस सख्या मे वे लोग भी सम्मिलित है जो यद्यपि नवाब पहले ही से बने हुए थे किंतु जिनकी उपाधियाँ अब और ऊँची कर दी गयी हैं। इन ९० मनुष्यो मे से ६० ऐसे है जो व्यापारी कपनियो के डायरेक्टर है। जिन कम्पनियो के ये डायरेक्टर हैं उनकी कुल सख्या करीब ४२० से भी ऊपर है। इनमें से ४२ व्यक्ति बैंको तथा बीमा कंपनियो के डायरेक्टर हैं, जिनकी सख्या ८६ है। ये लोग अब लार्डस सभा मे बैठते हैं। (इनके अतिरिक्त अनुदार पक्ष के १६ अन्य बैंक-डायरेक्टर तथा ४३ बीमा-कंपनी के डायरेक्टर

कामन्स सभा में भी बैठते हैं। ब्यौरा के लिये नीचे बैंक आफ़ इंग्लैंड तथा अन्य पॉच मुख्य बैंको के उन डायरेक्टरो की सूची दी जाती है, जिन्हे सन् १९३१ के बाद नवाबी (Peerage) का खिताब दिया गया है। स्मरण रहे कि इनमें ऐसे लोग भी सम्मिलित हैं जो पहले ही से नवाब (Peers) थे किंतु जिनकी पदवी अब और ऊँची कर दी गयी है।

नये नवाबों की सूची

बैंक		हाउस आफ़ लार्ड्स
बैंक आफ़ इगलैंड	...	लार्ड सेट जस्ट (१९३५) लार्ड स्टाम्प (१९३८)
लायड्स बैंक	...	**चेयरमैन :** लार्ड वाडिंग्टन (१९३६)
(सदस्य कैपिटल काउन्टीज़ बैंक कमिटी)		वाईकाउन्ट वीयर (१९३८) वाईकाउन्ट ब्लेडिस्लो (१९३५) वाईकाउन्ट हार्न आफ स्लैमेनन (१९३७)
नैशनल प्राविंशल बैंक	.	लार्ड रिवरडेल (१९३५) लार्ड पेन्डर (१९३७) लार्ड पेरी (१९३८)
मिडलैंड बैंक	...	लार्ड डेविस (१९३२) लार्ड विग्राम (१९३५) लार्ड मैक्गाउन (१९३७)
वेस्टमिंनिस्टर बैंक	...	मार्क्वैस आफ वेलिंग्टन (१९३६) वाईकाउन्ट रन्सीमैन (१९३७)
बार्क्लेज बैंक	.	लार्ड ईसेन्डन (१९३२)

उपरोक्त सूची से यह न समझना चाहिए कि इन बैंको के बोर्ड आफ़ डायरेक्टर्स मे केवल इतने ही पियर (Peer) या नवाब हैं। ये तो केवल उन लोगों के नाम हैं जिन्हे सन् १९३१ के बाद नवाबी का पद प्राप्त हुआ है।

(कामन्स सभा मे इस व्यवसाय से सम्बध रखने वाले लगभग १८ अनुदार सदस्य हैं।)

७—बेतार का तार इत्यादि

लार्ड पेन्डर (१९३७) **गवर्नर तथा मैनेजि डायरेक्टरः** केबुल ऐन्ड वायरलेस लिमिटेड (तथा कोडक लिमिटेड)

(कामन्स सभा मे भी इसी कपनी का एक डायरेक्टर अनुदार सदस्य है)।

८—तेल

लार्ड कैडमैन (१९३७) चेयरमैन : ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी।

९—बिस्कुट

लार्ड पामर (१९३३) हन्टले ऐन्ड पामर्स।

१०—बिजली

लार्ड एल्टिस्ले (१९३४) .. एडमडसन्स एलेक्ट्रिसिटी कार्पोरेशन तथा अन्य।

११—एलेक्ट्रिकल एजिनियरिंग

लार्ड हर्स्ट (१९३४) ... चेयरमैन : जेनरल एलेक्ट्रिक कपनी तथा अन्य।

ये कुल नवाब केवल सन् १९३१ से लेकर सन् १९३८ तक के अन्दर ही बनाये गये हैं। अस्तु, जब गत वर्ष के इस थोडे से समय में ही इतने अधिक व्यवसाय-पतियो की सख्या नवाबों के वर्ग मे शामिल की जा सकती है तो यह आसानी से सोचा जा सकता है कि बृटिश राष्ट्र की सम्पत्ति पर बृटिश नवाबों का कितना भारी अधिकार

है। साथ ही यह भी प्रत्यक्ष है कि एक वास्तविक सम्पत्तिशाली व्यक्ति के लिए इग्लिस्तान में नवाब बनकर हाउस आफ लार्ड्स मे बैठने की कितनी भारी सभावना है।

इन नवीन उपाधि-प्राप्त नवाबो में से बहुतेरे तो ऐसे हैं जो दर्जनों भिन्न-भिन्न कपनियो के डायरेक्टर हैं। उदाहरण के तौर पर वाईकाउन्ट ग्रीनवुड का नाम लिया जा सकता है, जो सन् १९३३ से अनुदार दल के कोषाध्यक्ष हैं और जिन्हे नवाबी की उपाधि सन् १९३७ में दी गई है। यह निम्नलिखित कपनियो के डायरेक्टर अथवा चेयरमैन हैं :—

पद	कम्पनियों के नाम
चेयरमैन :	एयरेटेड ब्रेड कपनी
चेयरमैन :	एग्रीकल्चरल मार्गेज कपनी आफ़ पैलेस्टाइन
चेयरमैन :	बाउजफील्ड स्टील कम्पनी
डायरेक्टर :	ब्रिटिश स्ट्रक्चरल स्टील कम्पनी
डिपुटी चेयरमैन :	डार्लिंग्टन रोलिंग मिल्स कम्पनी
डायरेक्टर :	डार्मन लाग (अफ्रिका)
चेयरमैन :	डार्मन लाग ऐन्ड कम्पनी
डायरेक्टर :	ला डिबेंचर कार्पोरेशन
चेयरमैन :	ल्युई बर्जर ऐन्ड सन्स
डायरेक्टर :	माटेगु बर्टन
डायरेक्टर :	पियर्सन ऐन्ड डार्मन लाग
डायरेक्टर :	फेनिक्स एश्योरेन्स कम्पनी
चेयरमैन :	रेडपाथ ब्राउन ऐन्ड कम्पनी
डायरेक्टर :	{ सोसाइटी इंटरनैशनेल ड' [illegible] हाइड्रो एलकट्रिक (सि[illegible]

पद	कंपनियों के नाम
चेयरमैन	टीज साइड ब्रिज ऐन्ड एंजीनियरिंग वर्क्स
चेयरमैन .	आप्टन कोलियरी कम्पनी

कुछ लोगो को नवावी रुतवा उनकी दानशीलता अथवा किसी पेशे मे सफलता के कारण भी दिया गया है। इनमे से एक उल्लेखनीय नाम लार्ड होर्डर का है, जो डाक्टरी पेशे के एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। दानशीलता के लिए उपाधि प्राप्त करने वाले व्यक्तियो मे दो नाम उल्लेख योग्य हैं। प्रथम तो वाईकाउन्ट नफील्ड का, जिन्होने अपनी विशाल सम्पत्ति का एक बहुत बडा भाग सार्वजनिक हित के कार्यों मे दे डाला है। नवीन आक्सफोर्ड कालेज की स्थापना, अस्पतालो तथा वैज्ञानिक प्रयोगो के लिए उन्होने काफी रकम दी हैं। दूसरा नाम लार्ड डूवीन का है, जिन्हाने पिछले कुछ वर्षों मे अपने देश को कला सम्वन्धी बहुमूल्य वस्तुओं का एक ऐसा खजाना अर्पित कर दिया जैसा कदाचित् अभी तक किसी भी रईस ने नहीं किया।

इनके अतिरिक्त वहुत से कानूनदॉ (जैसे लार्ड माधम जो आजकल वृटिश सरकार के लार्ड चान्सलर हैं) तथा कितने ही सैनिक, नाविक एव राजनैतिक कर्मचारी भी हे। प्राचीन प्रथा के अनुसार इन तमाम पेशो के मुख्य-मुख्य व्यक्तियो को नवाव (Peer) की उपाधि से विभूपित कर दिया जाता है। अनेक राजनैतिक नेता भी इन्ही मे शामिल हैं यथा.—अर्ल वाल्डविन, लार्ड रशक्लिफ, दो राष्ट्रीय मजदूर पक्ष के पार्लिमेंटी सदस्य, एक लिवरल, और एक मजदूर दल का पार्लिमेंटी सदस्य।

इसमे मे केवल दो एक व्यक्तियो को छोड़ कर शेप सब के सब नवीन उपाधिधारी नवाब अनुदार पक्ष के ही प्रतिनिधि हैं, जिससे इन

यहाँ तक तो ब्रुटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन हुआ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना ज़रूरी है। 'टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए पहले-पहल सन् १६७८ ई० के क़रीब किया गया था। उस समय राजा और पार्लिमेंट के झगड़े में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया था उन्हीं के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे जो राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर से जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदें प्राप्त थीं। इस प्रकार प्रायः तमाम बड़े-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी धारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई देते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो लोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे **'व्हिग पार्टी'** (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार पार्लिमेंट के तमाम सदस्य 'व्हिग' और 'टोरी' दो दलों में विभक्त हो गये थे।

सन् १८३२ के सुधार क़ानून के समय इन दोनों दलों का नाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'** (Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और ह्विग पार्टी का नाम **'लिबरल' (या 'उदार') पार्टी** पड़ गया। आगे चल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर से किया गया। उस समय प्रधान मन्त्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल बिल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल से अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव अब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'** रक्खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही एक तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

उपाधियों के प्रगाढ़ राजनैतिक स्वरूप का सच्चा परिचय मिल जाता है। यही नहीं, इन ९० नवाबों में से कम से कम ४८ व्यक्ति ऐसे हैं जो पहिले कामन्स सभा के भी सदस्य रह चुके हैं। अस्तु, यों समझना चाहिए कि ये उपाधियाँ पूर्ण राष्ट्रीय होने के बजाय केवल अनुदार दल वालों द्वारा अनुदार दल वालों में ही बाँट दी जाती हैं। अर्थात् लार्ड्स सभा के नवाब लोग इधर तो अपने भाई-बन्धुओं को कामन्स सभा में भेजते हैं और उधर अपने राजनैतिक सहायकों को लार्ड्स सभा में भी भर्ती करते हैं।

हाउस आफ कामन्स में सरकारी पक्ष के 'नाइट' उपाधिधारी कुल सदस्य इस समय ७७ है, जिनमें से ४० को उपाधि वर्तमान राष्ट्रीय सरकार द्वारा मिली थी और १० को वह भूतपूर्व अनुदार सरकार द्वारा दी गयी थी। उपाधियाँ पाने वालों के नाम प्रधान मंत्री चुनता है, किंतु इस काम में वह कामन्स सभा के उन तमाम अनुदार पक्षीय रईसों के प्रति उत्तरदायी भी रहता है, जिन पर उपाधियों की इस प्रकार वर्षा की जाती है।

जैसा कि पहिले कह आये हैं, बेरन, अर्ल या ड्यूक की उपाधि व्यवसायिक क्रांति के पहले जमीन और जायदाद के ही अधिकार की सूचक थी। अवश्य कभी-कभी किसी प्रसिद्ध जज अथवा सैनिक को भी यह उपाधि दे दी जाती थी, किंतु उस अवस्था में उपाधि के साथ-साथ कुछ जमीन अथवा धन भी उसे जरूर दिया जाता था। आज भी जैसा कि हम ऊपर देख आये हैं यह बेरन, वाईकाउन्ट अथवा अर्ल की उपाधि जायदाद और सम्पत्ति की पूर्ववत् सूचक है, किंतु अब वह जायदाद और सम्पत्ति भूमि के रूप में नहीं बल्कि व्यवसायिक सम्पत्ति के रूप में दिखाई देने लगी है। यद्यपि यह सच है कि उपाधि प्राप्त होने के समय नवाब लोग अब भी प्राचीन प्रथा के अनुसार कुछ भूमि खरीद लिया करते हैं, किंतु आजकल उनकी उपाधि जिस सम्पत्ति

की परिचायक है वह भूमि की सम्पत्ति नही है, बल्कि व्यवसायिक सम्पत्ति है।

अस्तु, जो उपाधियाँ आज लोगो को बृटिश सरकार द्वारा दी जाया करती हैं वे वास्तव मे धन और जायदाद के ही सम्मानार्थ हैं। एक अनुदार पक्षीय सदस्य जब यह लिखता है कि "हमे अपने रईसों के लिए अभिमान करना चाहिए न कि लज्जा", तो वह केवल खुले शब्दों मे उसी सिद्धात का प्रतिपादन करता है जिसका व्यवहार प्रधान मन्त्री अपने उस कार्य द्वारा कर दिखाता है जिसमे वह बडे-बडे बेंक वालों, शराब वालो, गोलाबारूद के कारखाने वालो एव जहाज के मालिकों को नवाब बनाये जाने की सम्राट् से सिफारिश किया करता है। अस्तु, उपाधि-प्रदान की वर्तमान शैली का अर्थ वास्तव मे जनता से यह कहना है कि "अमुक धनवान की तुम सब लोग इसलिए इज्जत करो, कि वह धनवान है"।

अधिकतर लोग नवाबो के भिन्न-भिन्न दरजों से एव राजकीय अवसरों पर पहने जाने वाले उनके लिबासों से तो अच्छी तरह परिचित रहते हैं किंतु यह नही जानते कि कौन नवाब कितनी कम्पनियो का डिरेक्टर है। बात यह है कि मध्यकाल की तड़क-भड़क और दिखावे का पुराना ढंग अग्रेजी नवाबो मे अब तक आश्चर्यजनक रीति से बराबर मौजूद है। कितु पुराने जमाने मे इन नवाबो के छोटे-बडे अलग-अलग दरजे उनकी जमींदारी की हैसियत से रखे गये थे। उदाहरणार्थ एक ड्यूक (Duke) का पद यह बतलाता था कि उसकी जमींदारी एक अर्ल (Earl) की जमीदारी से बड़ी है। इसी प्रकार एक अर्ल का पद एक बेरन (Baron) के दरजे से अधिक श्रेष्ठ जमींदारी का सूचक था। यही हाल और बाकी दर्जो का भी था। आधुनिक अवस्था में यद्यपि यह सच है कि एक ड्यूक की भूमि साधारणतः एक अर्ल अथवा बेरन की भूमि से अब भो अधिक हुआ

करती है, किंतु उनको क्रमागत दरजो में रखना और भाँति-भाँति की उपाधियों से सजाना अब बिलकुल अर्थहीन हो गया है।

फिर भी इनसे एक मतलब अवश्य निकलता है। वर्तमान बृटिश समाज में, जो पूर्ण जनतत्रवाद की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील दिखाई देता है, अमीरो की इज्जत करने वाले सिद्धात के साधारण रूप में स्वीकृत हो जाने की विशेष आशा नही की जा सकती। इसी प्रकार प्राचीन काल मे भी ग़रीब किसानों और मजदूरों की निगाह में कोई तब तक इज्ज़त पाने की आशा नही कर सकता था जब तक वह ऊपरी तड़क-भड़क और उपाधियों की सजावट से सजा हुआ न हो। अस्तु, उपाधियो की यह सजावट और ऊपरी तड़क-भड़क कम से कम साधारण मनुष्य के चित्त को तो अपनी ओर आकर्षित रखने में समर्थ रहती ही है। सब जानते है कि एक बीमा कपनी के डायरेक्टर अथवा शराबवाले की अपेक्षा एक अर्ल अथवा बेरन की कहानी अधिक मनोरजक और रोमाचकारी हुआ करती है।

अस्तु, इस महान आकर्षण को कायम रखने के लिए एक जबर्दस्त प्रचारकर्त्री मशीन बराबर काम किया करती है। इसका कुछ हिस्सा तो "आतरिक" उपयोग के लिए हुआ करता है—जैसे अधिक खर्चीले स्वजातीय पत्र और पत्रिकाएँ आदि और—कुछ साधारण जनता में इन अमीरो के वैभव और स्थायित्व का विश्वास उत्पन्न करने के लिए काम मे लाया जाता है। प्रमाण के तौर पर स्वय अर्ल विंटर्टन (Earl Winterton), जो किसी समय 'वर्ल्ड' नामक पत्र का सम्पादन किया करते थे और जो इस सम्पादन-कार्य को अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति मानते हैं, इस पत्र के उद्देश्यों और कार्यो का वर्णन निम्नलिखित शब्दों मे करते हैं :—

"[ये पत्र] अपने माल का प्रदर्शन एक ऐसे समाज के सामने किया करते थे जो इज्जतदार होता हुआ भी नितान्त असभ्य और

अहंकारी था। यह समाज वास्तव में उन लोगों से बना था जिन्हें अपने सम्बंध की बातें पढ़ने का विशेष चाव था और जो राजकीय घराने के लोगों की बाबत हरएक जानने योग्य बातों को जानने के लिये नित्य बेचैन रहा करते थे। इन लोगों के बड़प्पन का कारण केवल उनका जन्म था, अथवा कोई विशेष कार्य था, अथवा ये दोनों ही थे।"

समाज के पिछड़े हुए लोगों में एक (उपाधिहीन) धनवान की अपेक्षा एक उपाधिधारी के प्रति सम्मान-भाव पैदा करना ज्यादा आसान है। वाल्टर बेजहाट (Bagehot) नाम का लेखक, जो अमीरों और नवाबों का सदा से हिमायती रहा है, इस बात को अच्छी तरह जानता था। अतएव उसने लिखा है —

"नवाबी ओहदे का मुख्य कार्य साधारण प्रजा पर रोब जमाना है ।"

उपाधियाँ मनुष्य को धनिकों के समाज में, जहाँ उसे सदा रहना पड़ता है, एक प्रकार का गौरव प्रदान करती हैं। साथ ही यह उसके प्रभाव को भी उन चापलूसों के हृदय में बढ़ा दिया करती हैं, जो वैसा ही धन और उपाधि प्राप्त करने के लिए सदा लालायित रहते हैं। साथ ही ये इस बात की भी सूचक हैं कि उपाधि प्राप्त करने वाला मनुष्य शासकों के वर्ग में भर्ती कर लिया गया। इस प्रकार उपाधिधारी व्यक्तियों की यह देवसेना शासकवर्ग को सुसंघटित रखने में सदा सहायक हुआ करती हैं, साथ ही समाज के सहस्रों उम्मीदवारों की आँखों में अपने लटकते हुये तमगों और सनदों का जादू डालकर उन्हें अन्त तक अपना आज्ञाकारी गुलाम भी बना रखती है। इसके अतिरिक्त ये उपाधियाँ एवं उच्चवर्ग की तमाम सामाजिक रीतियाँ धनिकवर्ग के हृदय में एक ऐसी भावना पैदा कर देती हैं जिसका सिद्धांत होता है "धनिकों का गौरव"। राजनैतिक दृष्टि से यही सिद्धांत धनिकों के शासन के रूप में प्रकट हुआ करता है, जो, जैसा कि हम

ऊपर देख आये है, अनुदार राजनीति का वास्तविक उद्देश्य और ध्येय है।

हाउस आफ लार्ड्स, जिसमे यह उपाधिधारी नवाबी पल्टन बैठा करती है, वैधानिक रूप से यद्यपि पूर्वापेक्षा बहुत कुछ शक्तिहीन बना दिया गया है, किंतु फिर भी अभी किसी प्रस्ताव पर अड़ङ्गा लगाने की कानूनी शक्ति उसमे बहुत कुछ विद्यमान है। एकमात्र आर्थिक प्रस्ताव (Money Bill) को छोड़ कर अन्य सब प्रकार के प्रस्तावो को यदि वह चाहे तो कम से कम दो वर्ष तक के लिए रोक सकता है अस्तु, एक जनतत्रवादी अथवा मज़दूर सरकार का यह कर्त्तव्य होगा कि वह इस लार्ड्स सभा का मूलोच्छेद करने का पूर्ण निश्चय कर ले। यद्यपि यह सच है कि कामन्स सभा का अध्यक्ष यदि चाहे तो अब भी किसी बिल को अपने विशेषाधिकार से पास कर के उसे लार्ड्स सभा के विरोध करने पर भी कानून का रूप दे सकता है, किन्तु फिर भी लार्ड्स सभा की वर्तमान आर्थिक शक्ति और उसका अनेक प्रभावशाली पत्र-पत्रिकाओ पर अधिकार देखकर यह कहना पड़ता है कि किसी भी जनतत्रवादी सरकार के लिए उसके विरोध का सामना करना कठिन हो जायगा, जब तक कि वह सरकार लार्ड्स सभा को सदा के लिए मिटा देने पर ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति से न तुल जाय।

लार्ड रोजबरी के निम्न लिखित वाक्य, जो सन् १८९४ मे महारानी विक्टोरिया को लिखे गये थे, इस समय भी उतने ही सच जान पड़ते है जितने की उस समय :—

"जिस समय शासन का अधिकार अनुदार पक्ष के हाथ मे होता है, उस समय हाउस आफ लार्ड्स का मानो अस्तित्व ही नही रहता; जो कुछ भी अनुदार सरकार हाउस आफ कामन्स से पास कर देती है उसे वह बिना कुछ पूॅछ-तॉछ किये चुपचाप स्वीकार कर लेता है। किंतु जिस क्षण शासन की बागडोर उदार सरकार के हाथ मे आ जाती है, उसी क्षण से यह निर्जीव संस्था एक बारगी सजीव हो उठती

हैं, और फिर अपनी सारी शक्ति सरकारी पक्ष का विरोध करने मे ही लगा।दिया करती है ।"

किसी जनतन्त्रवादी देश के अन्दर एक ऐसी शासन-सस्था का होना ही विलक्षण बात है जो बडे-बडे जमीदारो, ताल्लुकेदारों, कोयले के व्यापारियों, बैंकरों एव व्यापारिक महारथियों से मिलकर बनी हो। निस्सन्देह एक मजदूर सरकार यदि चाहे तो अपने मजदूर-पक्षीय सदस्यों को काफी सख्या मे नवाबी का रुतबा देकर लार्ड्स सभा मे बैठा सकती है और इस प्रकार वहाँ के अनुदार-पक्षीय बहुमत को नीचे गिरा सकती है। यही नही, इस बात की यदि एक धमकी मात्र भी दे दी जाय तो भी वह अपना पूरा असर दिखा सकती है। सन् १६०७ मे हावर्ड एवान्स ने लिखा था :—

"हम मानते हैं कि गाइनेस (Guinness) बड़ी अच्छी चीजे बेचता है और बास तथा ऐल्सप (Bass & Allsoph) का कारखाना भी बहुत बढ़िया शराब बेचता है। लेकिन क्या यह भी कोई ऐसा कारण है कि लार्ड आर्डिलान और आईवीग तथा बर्टन और हिन्डलिप (Lords Ardilann and Iveagh and Burton and Hindlip) और उनके तमाम उत्तराधिकारी लोग इस बात के हकदार समझे जॉय कि वे सपूर्ण बृटिश प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा पास किये गये प्रस्तावों पर अपनी कलम चलावे। ग्लिन्स (Glyns) और मिल्स (Mills) और लायड जोन्स (Lloyd-Jones) आदि ने लम्बार्ड स्ट्रीट मे बड़ी भारी रकम कमा ली है, तो क्या इससे वह हमारे राष्ट्रीय धन के वास्तविक पैदा करने वाले करोड़ों मजदूरों पर नादिरशाही करेगे? अब और कब तक यह सहनशील बृटिश जनता अपनी उन्नति के पहियो मे इस प्रकार के रोडे बर्दाशत करती जायगी? आओ जान मार्ले की इस प्राचीन उद्घोषणा को एक बार फिर गुजरित कर दो कि :—"इसका सुधार हो

या अंत हो !" और अपनी लड़ाई को तब तक जारी रखो जब तक कोई अंतिम निपटारा न हो जाय।"

पिछले पचास वर्षों से बृटिश जनता के एक बहुत बड़े भाग में लार्ड्स सभा तथा उसकी उपाधियो के प्रति कुछ घृणा का सा भाव पैदा हो रहा है, जो एक प्रकार से कल्याण-कारी ही कहा जा सकता है। फिर भी कुछ अंश तक यह घृणा भी ठीक नही जान पड़ती, कारण कि लार्ड्स सभा तथा उसकी तमाम उपाधियाँ केवल पिछले जमाने के बचे हुए चिन्ह मात्र हैं, जो हमारे इस अधुनिक युग के लिए विलक्षण प्रतीत होते हैं। परन्तु इन उपाधियो के पीछे धन, जायदाद और अधिकारो की एक ऐसी जबर्दस्त ताकत छिपी हुई है, जिसका अदाजा बहुत कम लोगो को है, और वही ताकत वास्तव में बृटिश जनतन्त्रवाद पर शासन किया करती है। अनेक शताब्दियों तक ये उपाधियाँ इंग्लिस्तान पर हुकूमत रखने वाले भूमि-पतियों की शक्ति की सूचक थी, किंतु अब ये भूमिपतियों के साथ-साथ उन व्यवसाय-पतियो की शक्ति की भी सूचक है, जो अनुदार दल के नाम से इंग्लिस्तान पर शासन किया करते हैं।

प्राय: सभी महत्वपूर्ण उपाधियाँ परंपरागत हुआ करती हैं। यह वास्तव में सम्पत्ति के उस परम्परागत स्वभाव की सूचना है, जो बृटिश समाज की आर्थिक और राजनैतिक प्रणाली का मूल स्वरूप कहा जा सकता है।

इस समय शासकवर्ग के अधिकतर भाग की सम्पत्ति और हैसियत उसके पूर्वजो से ही उत्तराधिकार के रूप में मिली है। बड़े-बड़े अंग्रेज धनिको में से प्रतिशत क़रीब ८० अंग्रेज इस समय ऐसे हैं, जिनकी सम्पत्ति उन्हे उत्तराधिकार के रूप मे ही प्राप्त हुई है। केवल २० प्रतिशत बड़े व्यापारी यह गर्व कर सकते हैं कि वह अपने पैरों आप खड़े हुए हैं। यही हाल उपाधि-धारी घरानों का भी है। वर्तमान लार्ड्स सभा के तमाम सदस्यो मे इस समय केवल ४१ ही प्रतिशत व्यक्ति

ऐसे कहे जा सकते हैं, जिनकी उपाधियाँ इसी बीसवी शताब्दी में प्राप्त हुई हैं। शेष सब पुरानी हैं और परम्परा के क्रम से आई हुई है। किन्तु यह सख्या भी इस समय कुछ विशेष रूप से अधिक हो गयी है, कारण कि पिछले सात आठ वर्षों मे बहुत अधिक व्यवसाय पतियों पर यह उपाधि-वर्षा कर दी गयी थी। वस्तुतः हर पीढी मे जितने आदमियो को ये उपाधियाँ बाँटी जाती है उनकी सख्या अपेक्षाकृत बहुत थोडी है।

ऊपर जो २० प्रतिशत अपने पैरो आप खडे होने वाले धनिको का हिसाब बतलाया गया है, उनमे भी बहुत थोडे ऐसे हैं जिन्हों ने अपनी सारी सम्पत्ति केवल एक ही पीढी मे प्राप्त कर ली हो। अधिकाश को तो आरम्भ मे पैत्रिक सम्पत्ति ही प्राप्त हुई थी, यद्यपि उसी को आगे चलकर उन्होंने बहुत अधिक बढा लिया। इस प्रकार प्रत्यक्ष हैं कि आर्थिक दृष्टि से यह वर्ग सदा उत्तराधिकार पर ही निर्भर रहता है। परम्परागत उपाधियो पर उसकी विचित्र भक्ति, अपनी बशावली के अध्ययन मे उसका बेहद उत्साह तथा बर्क के 'पियरेज' (Burke's 'Peerage') जैसे भारी-भारी ग्रथों का प्रकाशन ये सब इस बात के अविचल प्रमाण कहे जा सकते है कि इस वर्ग का अस्तित्व उत्तराधिकार के सिद्धात पर ही निर्भर है।

धन की इज्जत के साथ वैसी ही इज्जत परम्परागत अधिकारों की भी होनी ही चाहिए। बृटिश शासक घरानों की परम्परागत रूढियों की निरनरता उनकी परम्परागत सम्पत्ति के साथ ही साथ दिखाई देती है। जिन स्कूलों मे उनकी शिक्षा होती है, जिस प्रकार की जीवनशैली उनके लड़को के लिये निश्चित की जाती है और विशेष कर जिस प्रकार की राजनैतिक विचारधारा मे वे लोग बहते रहते हैं उन सबो मे इसी प्राचीन रूढ़ि-पालन का सिद्धात दिखाई देता है।

अन्यत्र यह दिखा चुके हैं कि किस प्रकार शताब्दियों से नवाबी घरानों की सतान निरन्तर एक शृङ्खला के रूप मे कामन्स सभा की

कुर्सियों पर अपना अधिकार जमाये हुए हैं। साथ ही यह भी हम देख आये हैं कि पिछले दो सौ वर्षों से किस प्रकार इन्हीं घरानों के आदमी मन्त्रिमण्डल में भी अपना अधिकार जमाये रहते हैं। व्यवसायिक क्रान्ति के द्वारा बृटिश समाज में अनेकों महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गये, जिससे उनकी विचारशैली में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। लेकिन एक बात जो अब तक नहीं बदली वह यह है कि ये नवाब अब भी अपने धन और अधिकारों की रक्षा के लिए देश को अपनी राजनैतिक अधीनता में रखना उसी प्रकार आवश्यक समझते हैं जैसा पहले।

सातवाँ अध्याय

अनुदार राजनीतिज्ञों की सामाजिक व्युत्पत्ति

पिछले अध्याय मे जिन नवाबों की चर्चा की गयी है, वे कामन्स सभा के अनुदार-पक्षीय सदस्यों मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बल्कि यो कहा जा सकता है कि सरकारी नेताओ पर उनका प्रभाव बड़ा जबर्दस्त है।

कामन्स सभा के तमाम अनुदार-पक्षीय सदस्यो मे इन उपाधिधारी नवाबो और उनके बन्धु-बान्धवो की सख्या इस समय लगभग आधी होगी। इसी प्रकार मन्त्रिमडल मे भी तथा उपमन्त्रियों एव अन्य ऊँचे कर्मचारियो के पद पर इनकी संख्या कुल मिला कर आधी से कुछ कम कही जा सकती है।

इससे प्रकट है कि एक काफी सख्या ऐसे अनुदार सदस्यो की भी है जो न तो अभी नवाब बनाये गये हैं और न नवाबी घराने में कोई वैवाहिक सम्बन्ध ही रखते हैं। इनका विचार पिछले अध्याय में नही किया गया। फिर भी कामन्स सभा मे अनुदार-पक्षीय प्रतिनिधित्व के मूल-स्वरूप का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिये इन सबों का ही विचार करना आवश्यक होगा। पिछले अध्याय मे केवल उन्ही पार्लिमेंटी अनुदार सदस्यों की चर्चा की गई है, जिनकी प्रतिष्ठा और पद नवाबी वश मे जन्म पाने के कारण प्राप्त हुये हैं। साथ ही धन और सम्पत्ति के उत्तराधिकार के साथ साथ अनुदार पक्षीय रूढियों का किस प्रकार एक स्थायी लगाव चला आता है यह भी पिछले अध्याय मे दिखाया जा चुका है। अब यहाँ सम्पूर्ण अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों का वास्तविक स्वरूप समझने के पहिले यह आवश्यक जान पड़ता है कि

अब सयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शंका या प्रश्न करने का साहस नही हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनो जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-सस्था के नाम से नहीं पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इग्लैएड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमे एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नहीं रहता था। कहते हैं सन् १७९३ ई० मे हाउस आफ़ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा में तो लार्ड उपाधिधारी बडे-बडे सामत-जमीदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा मे भी अधिकतर सदस्य प्रभावशाली जमींदार और रईस ही लोग हुआ करते थे। गरीबों और मध्यश्रेणी वालों का उसमे कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिखाई देता था। चुनाव में बेईमानी और रिश्वतबाजी का बाजार भी उस समय खूब गर्म था। अन्त में प्रजा के बहुत दिनों तक आन्दोलन करते रहने पर सन् १८३२ ई० में एक सुधार कानून पास किया गया, जिससे निर्वाचकों की सख्या में वृद्ध की गयी। आगे चल कर समय-समय पर यह संख्या और अधिक बढ़ायी गई और अब इस समय वहां पार्लिमेंट के चुनाव मे वोट देने का अधिकार प्रत्येक बालिग़ स्त्री और पुरुष को प्राप्त हो गया है।

उन सबों के वश पर भी एक दृष्टि डाल ली जाय, जिसमें उनका जन्म हुआ है।

इस समय कामन्स सभा के अनुदार सदस्यो मे से करीब ३०० व्यक्तियो के पिताओ का परिचय आसानी से मिल सकता है। शेष सदस्यो के सम्बन्ध मे उनकी शिक्षा सम्पत्ति और पेशो का विचार करते हुये जान पड़ता है कि वे सब भी प्रायः इसी नमूने के लोग हैं। नीचे ३०० उक्त सदस्यों के पिताओ को उनके पेशों के अनुसार विभक्त करके प्रतिशत के आकड़ो मे रखा गया है :—

अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों के पिताओं के पेशे

१—कारखाने, बैंक और व्यापार ... २६ प्रति शत।
२—ज़मीन और जायदाद के मालिक . २० ,, ,,
३—सेना मे अफसर .. . १६ ,, ,,
४—पेशेवर राजनैतिक लोग .. १५ ,, ,,
५—पादड़ी (Church) ... . ७ ,, ,,
६—ऊँचे दर्जे के हाकिम और राजनैतिक कर्मचारी ... .. ५ ,, ,,
७—अध्यापक, डाक्टर, सालिसिटर, कारीगर इत्यादि पेशे वाले . ८ ,, ,,

इनमे से उपाधिधारी नवाबों के घराने प्रथम दो दर्जो मे, अर्थात् 'कारखाने, बेंक और व्यापार' तथा 'जमीन और जायदाद के मालिक' के वर्ग मे सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त चौथे वर्ग अर्थात् 'पेशेवर राजनैतिक लोग' मे भी अधिकतर यही जमींदार एवं नवाब लोग भरे पडे हैं, कारण कि पिछली पीढ़ी मे आजकल की अपेक्षा यह और भी अधिक कठिन था कि कोई व्यक्ति बिना किसी खान्दानी जायदाद की ताकत रखे अनुदार पक्ष की ओर से राजनैतिक पेशा प्राप्त कर सके। अस्तु, एक मात्र अध्यापक, डाक्टर, सालिसिटर, कारीगर आदि पेशे के आदमियो

को छोडकर शेष सभी वर्ग के पिताओं मे अपार धनराशि की उपस्थिति दिखाई देती है। केवल अध्यापक, डाक्टर, सालिसिटर आदि पेशे वालो मे अवश्य कुछ थोडे ही से ऐसे आदमी हैं जो भारी धनवान कहे जा सकते हैं। पादडियो, हाकमो एव राजकर्मचारियो मे भी सब नही तो अधिकाश व्यक्ति अवश्य धनवान हैं। साथ ही कुछ नवाबी घराने के लोग भी हाकिमो और राज कर्मचारियो के वर्ग मे पाये जाते हैं।

'कारखाने, बैंक और व्यापार' के वर्ग मे ऐसे-ऐसे प्रसिद्ध नाम मौजूद हैं जैसे बिर्ड ('कस्टर्ड' अर्थात् पके हुये अन्डे और दूध से मिलकर बने खाद्यविशेष के व्यवसायी), कोर्टाल्ड ('रेयन' के व्यवसायी), क्रासली (मोटर-व्यवसायी), ग्रेटेन (बियर शराब), निकोल्सन (जिन), गेस्ट (लोहा और फौलाद), हैम्ब्रो (बैंकिंग), बीट और जोल (सोना और जवाहिरात), केजर (जहाजरानी), इत्यादि। ये सब के सब अतुल सम्पत्तिशाली घराने हैं।

व्यापार-समिति (Board of Trade) के पार्लिमेंटी सेक्रेटरी तथा विदेशी व्यापार-विभाग के सचिव मिस्टर आर० एस० हडसन को अपने पिता राबर्ट वलियम हडसन से १,५०,००० पौंड उत्तराधिकार मे मिले थे। पोलेंड, रूम, नार्वे तथा अन्य योरोपीय देशों के साथ व्यापारिक समझौता कराने मे इनका हाथ विशेष रूप से रहा है।

कोर्टाल्ड (Courtalds) घराने के सबन्ध में भी जो निम्नलिखित रिपोर्ट एक दैनिक पत्र मे छपी थी वह इन बडे बडे घरानों की अतुल धनराशि का एक खासा नमूना कहा जा सकता है :—

"१९,००,००० पौंड का मुनाफ़ा केवल तीन दिन में ! कोर्टाल्ड वंश की आमदनी"

"कोर्टाल्ड वश के १,२०,००,००० पौड बोनस बॉटने की खबर ने कल (लदन के) स्टाक एक्सचेज में बड़ी भारी हलचल पैदा कर दी। ऐसी हलचल कदाचित् इधर कई साल से देखने मे नहीं आई

थी। दलाल लोग शहर को जाने वाली ट्रेना की तरफ दौड़ पड़े, और शेयर बाजार खुलने के पहिले ही लोगों की एक भारी भीड़ शेयरों का सौदा करने मे जुटी हुई थी। दलाल लोग अढ़तियो के पास तक पहुँचने के लिये धक्कामुक्की कर रहे थे। इसी प्रकार स्टाक एक्सचेंज बंद हो जाने के बाद भी लगभग तीन घटे तक शेयरो की लेवा-बेचा जारी रही।. ...इस प्रकार शेयरों के मूल्य मे जो वृद्धि हुई उससे कोर्टाल्ड घराने के लोगों ने खूब लाभ उठाया। इनमे से सोमरसेट हाउस के रजिस्टरों मे दर्ज अठारह व्यक्तियो के पास १२,०७,६७८ साधारण शेयर और ६,८७,४०६ प्रिफरेन्स शेयर मौजूद है। इनका आदि मूल्य केवल १ पौंड प्रति शेयर था, किन्तु कल रात्रि मे उनकी कीमत बढ़कर कुल १,१०,००,००० पौंड की हो गई।"

कामन्स सभा मे इस घराने के वर्तमान सदस्य मेजर जान सिवेल कोर्टाल्ड (Major John Sewell Courtauld) है। इनके अतिरिक्त मेजर राल्फ रेनर तथा मि० आर० ए० बटलर भी, जो इस समय कामन्स सभा के मेम्बर हैं इसी घराने मे ब्याहे हैं।

कुछ इने-गिने अपवादो को छोड़ कर शेष सभी पार्लिमेंटी अनुदार सदस्यो की वर्तमान ऊँची स्थिति केवल ऊँचे घरानो मे जन्म पाने के कारण ही दिखाई देती है। साथ ही ये इने-गिने अपवाद भी इस बात को प्रमाणित करते है कि एक 'खाने-पीने से खुश' मध्य-श्रेणी के मनुष्य के लिए इस प्रभावशाली दल मे स्थान पाना अत्यत कठिन काम है। ये मध्य श्रेणी के 'खाने-पीने से खुश' पिता लोग अधिकतर अध्यापक डाक्टर, एंजीनियर, कारीगर आदि पेशे वालो मे ही पाये जाते हैं, और इनकी संख्या कुल आदमियो मे ८ प्रतिशत से अधिक नहीं है।

कुल ३०० से अधिक पार्लिमेंटी मेम्बरो मे केवल एक ही व्यक्ति हमें ऐसा मिला है, जिसके पिता सचमुच 'ग़रीब' कहे जा सकते थे।

इस व्यक्ति का नाम 'सर वाल्टर वोमर्स्ले' (Sir Walter Womersley M. P.) है, जो इस समय असिस्टेन्ट पोस्ट मास्टर जेनरल है, और जिसको दस वर्ष की अवस्था मे अपनी जीविका के लिए एक कारखाने के अदर मजदूरी करनी पड़ती थी। इसी से इस समय उसको लोग 'पार्लिमेंट मे अनुदार पक्ष का अकेला मजदूर' कहा करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी तीन-चार व्यक्ति ऐसे हैं, जिनके विषय मे यह कहा जा सकता है कि वे अपने पैरो आपही खडे हुए हैं। यद्यपि इस समय ये धनवान हैं, किंतु फिर भी इनको अपने जन्म का कोई वास्तविक लाभ नही मिला था।

इस प्रकार के व्यक्तियों की इतनी अल्प सख्या अनुदार पक्ष मे होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कारण कि पेशेवर लोगो के लडके, जिन्हे यदि धन का लाभ नही तो ऊँची शिक्षा का लाभ तो अवश्य मिला था, इस अनुदार पक्ष मे बहुत कम भर्ती हो सके हैं। तारीख १४ मार्च सन् १६३६ के 'इवनिंग स्टैन्डर्ड' (Evening Standard) नामक पत्र मे श्री ए० डफ कूपर नामक एक अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य स्वय लिखते है :—

"एक निर्धन मनुष्य के लिए, यदि वह अनुदार पक्ष का है तो, कामन्स सभा मे पहुँचना उतना ही कठिन है जितना कि एक ऊँट का सूई के नाके मे घुसना। इससे यह तात्पर्य नही कि यह बात बिल्कुल ही असभव है। वास्तव मे इसकी सभावना केवल उतनी ही कही जा सकती है जितनी कि एक अमीर आदमी के लिए स्वर्ग द्वार तक पहुचने की सभावना। दोनों ही अवस्थाओ मे प्रवेश के लिए गहरी अड़चन है।"

पार्लिमेंट के अनुदार पक्षीय सदस्यो की उत्पत्ति का यह सक्षिप्त वर्णन एक बार फिर उसी बात को प्रमाणित करता है, जिसकी चर्चा पिछले अध्यायो मे कर आये हैं, अर्थात अनुदार पक्ष वास्तव मे धनाढ्यों का पक्ष है। बृटिश जाति के केवल मुट्ठीभर लोग शासन की बागडोर पर अपना सम्पूर्ण अधिकार एक ऐसी राजनैतिक पार्टी द्वारा

जमाये हुए हैं, जो हर एक बात को केवल उनकी ही आँखों से देखती है और हर एक मामले में सदा उनके ही हितो को सोचा करती है इस वर्ग के लोगो की सारी प्रतिष्ठा और हैसियत केवल उनके पूर्वजो की कमाई हुई सम्पत्ति और जायदाद पर ही निर्भर है। प्रोफ़ेसर कैनन (Prof. Cannan) सन् १९१२ के 'एकनामिक आउटलुक' (Economic Outlook) नाम पत्र मे लिखते है :—

"जो सम्पत्ति लोगो ने वसीयत और उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त की है उसकी असमानता ही समाज की साम्पत्तिक असमानता का सब से जबर्दस्त कारण है।"

धनी घरानो का एक छोटा सा समूह अपनी सत्ता को पीढ़ी दर पीढी जारी रखे है। अपने वंशजो को यह न केवल परम्परा से धन ही प्रदान करता है बल्कि अपने उस अनुदार दल का प्रबध भी उनके हाथों मे दे जाता है, जो उसके धन और अधिकारो की रक्षा करने के लिए एक जबर्दस्त हथियार बना हुआ है।

इस धनिक समूह के पुत्रों की शिक्षा-दीक्षा के लिए अलग से एक शानदार प्रबध किया गया है। एटन (Eton) और हैरो (Harrow) के स्कूल, जहाँ इनकी शिक्षा होती है, बृटिश द्वीप के सब से शानदार और खर्चीले स्कूल कहे जा सकते है। यहाँ पर एक-एक लड़के की शिक्षा के लिए लगभग ३०० पौड से कम सालाना खर्च नही पड़ा करता। करीब २३० पौड तो इन स्कूलो में केवल वार्षिक फीस ही दे देनी पड़ती है। अस्तु, जब तक कोई आदमी बहुत ही अमीर न हो तब तक वह इन दोनो में से किसी स्कूल मे अपने पुत्रों को पढाने की आशा नही कर सकता। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि ये स्कूल केवल उन बड़े-बड़े अमीर अनुदार नेताओं के ही मतलब के हैं, जिनका जबर्दस्त पजा देश की तमाम राजनैतिक सस्थाओं पर अपना मजबूत अधिकार कायम किये है।

२८ अक्तूबर सन् १९३८ को इवनिंग न्यूज नामक पत्र लिखता है :—

"मिस्टर चेम्बरलेन के मन्त्रिमंडल में परिवर्तन होने के कारण दो पुराने 'एटोनियन' ('Etonians' अर्थात् एटन स्कूल के पुराने छात्रों) की वृद्धि हुई है। अर्ल स्टैनहोप और अर्ल डि-ला-वार अब अपने स्कूल के पुराने मित्रगण वाईकाउन्ट हेल्शम, जो कि कौंसिल के लार्डप्रेसिडेन्ट हैं, लार्ड हलीफक्स, जो इस समय पर राष्ट्र सचिव हैं, बोर्ड आफ ट्रेड के मिस्टर आलिवर स्टैनली तथा डची आफ लैंकेस्टर के चान्सलर अर्ल विंटरटन के साथ आ मिले हैं। इस प्रकार अब मन्त्रिमंडल में एटन वालों का ही बहुमत है। रगबी के प्रतिनिधि-स्वयं प्रधान मन्त्री हैं और हैरो के प्रतिनिधि सर सैमुअल होर तथा मार्क्विस आफ जेटलैंड हैं। आशा है कि कैप्टेन यूवान वैलेस (Captain Euan Wallace) के आगमन से हैरो वालों की संख्या अभी और बढ़ेगी।"

लार्ड बाल्डविन भी हैरो के पुराने छात्र हैं। उन्होंने एक बार कहा था :—

"जिस समय गवर्नमेंट बनाने का मुझे निमन्त्रण मिला तो सब से पहला विचार जो मेरे मन में उत्पन्न हुआ यह था कि मेरी सरकार एक ऐसी सरकार हो, जिसके लिए हैरो को लज्जित होना न पड़े।"

अनुदार दल पर 'एटन' और 'हैरो' के प्राचीन छात्रों का अधिकार कई पीढ़ियों से बराबर चला आ रहा है। नीचे की सूची से विदित हो जायगा कि पिछले ३० वर्षों में इन दोनों स्कूलों के कितने प्रतिनिधि पार्लिमेंट के अनुदार सदस्य रहे हैं :—

सन्	कुल अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो की सख्या	एटन और हैरो वालों की सख्या
१६०५	३८६	१४४ = ३७ प्रति शत
१६०६	१५७	६७ = ४३ ,, ,,
१६०८	४१५	१२८ = ३१ ,, ,,
१६०६	४१५	१२५ = ३० ,, ,,

बहुत से अनुदार पक्षीय सदस्यो ने कहॉ शिक्षा पायी थी इसका पता नही लग सका। किंतु यह निश्चय है कि एटन और हैरो वालों के जो ऑकड़े ऊपर दिये गये हैं उनसे उनकी वास्तविक सख्या जरूर कुछ अधिक ही थी। साथ ही पार्लिमेट के अंदर अनुदार पक्षवालो मे हैरो की अपेक्षा एटन वालो की ही प्रधानता अधिक दिखाई देती रही है। सन् १६३८ में एटन वालो की सख्या १०१ थी और हैरो की केवल २४।

कुल बृटिश जनता में केवल ०·१% लोग एटन या हैरो में पढ़ते हैं। किंतु अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो मे लगभग ३०% लोग यही से शिक्षा पाये हुए हैं। इतनी ऊँची फीस देने की सामर्थ्य भी बृटिश जनता के केवल ०·१% से अधिक व्यक्तियो में नही है।

अस्तु, प्रत्यक्ष है कि ये ही स्कूल अनुदार दल के भावी राजनीतिज्ञों की ट्रेनिग के अत्यत महत्वपूर्ण केन्द्र है। इनकी गणना वस्तुतः उन तमाम सस्थाओ के सिलसिले मे की जा सकती है जो अनुदार नेताओ की विचारशैली को बनाने और स्थिर करने में भाग लिया करती है। ये स्कूल इतने महत्वपूर्ण है कि इनके विषय में कुछ और अधिक परिचय देना जरूरी जान पड़ता है।

इन स्कूलों का प्रबध किसके हाथ मे है? एटन का प्रबध १० "फेलो" (Fellows) से बना हुआ एक बोर्ड करता है। और हैरो

का प्रबध १० गवर्नरों के एक बोर्ड द्वारा किया जाता है। इन दोनों बोर्डों के सदस्य बैंक आफ इग्लैंड के डिरेक्टर है: मिस्टर केसिल लबक एटन के बोर्ड मे और लार्ड सेट जस्ट हैरो के बोर्ड मे। अन्य पॉच बडे बैंको मे से भी बार्क्लेज बैंक के डिरेक्टर सर हेरल्ड स्नैग तथा नैशनल प्राविशल बैंक के ज्वाइन्ट डिपुटी चेयरमैन आन० जैस्पर रिडले एटन के फेलो हैं।

साथ ही इनमे से प्रत्येक स्कूल के बोर्ड मे अनुदार मत्रिमडल का एक मत्री भी रहा करता है: एटन मे इस समय वाइकउान्ट हलीफक्स हैं, तथा हैरो मे मार्क्वेस आफ जेटलैंड हैं। इनके अतिरिक्त हैरो के बोर्ड मे अनुदार मत्रिमडल के दो भूतपूर्व मत्री भी अर्थात् एल० एस० एमरी साहब तथा लार्ड बाल्डविन हैं। एटन के फेलोज मे भी 'दि टाइम्स' पत्र के सम्पादक जार्फ्रे डासन साहब हैं।

दोनों स्कूलो के सचालक वर्ग मे कुछ थोडे से विद्वानो को भी जगह दी जाती है, जिनमे से एक या दो इस समय उन्नतिशील विचार के भी लोग हैं। अस्तु, प्रकट है कि इन दोनो स्कूलो की शिक्षा नीति एव प्रबंध का सम्पूर्ण भार अनुदार दल के मुख्य-मुख्य नेताओं के ही हाथ मे रहा करता है।

वास्तव मे हैरो और एटन बृटिश अनुदार नीति के दो अत्यत महत्वपूर्ण शिक्षा-केंद्र हैं। आजकल के अनुदार नेताओं मे से अधिकाश की शिक्षा उनके पूर्वजो के समान इन्ही सस्थाओं मे हुई थी, और अब उनके पुत्र भी उसी रूढ़ि के अनुसार यही तैयार हो रहे हैं।

यह बात नहीं है कि इन स्कूलो की पढाई देश भर मे सब से महॅगी केवल आकस्मिक रूप से हो। वास्तव मे यह ढग इग्लिस्तान के कुछ थोडे से कुबेर-पुत्रों को प्रजा-वर्ग के अन्य साधारण लडकों से अलग रखने के लिए ही जान बूझ कर निकाला गया है, और इन्ही थोड़े से धन-कुबेरो मे हमारे अनुदार दल के नेता लोग भी पाये जाते हैं।

विचित्रता तो यह है कि एटन और हैरो दोनो ही स्कूलो की स्थापना आरंभ में केवल 'सुयोग्य और चरित्रवान' तथा 'गरीब और असमर्थ' बालकों के लिए की गयी थी फिर भी उनके अमीर प्रबंधको ने अपना स्वार्थ साधन करने के लिए चालबाजी का रास्ता पकड़ा और विधान के शब्दो को तोड़-मरोड़ कर तथा उनका मनमाना अर्थ लगा कर अपना मनोरथ सिद्ध किया। उदाहरण के तौर पर 'ग़रीब और असमर्थ' बालक का अर्थ यह लगाया गया कि बालक के माता-पिता या अभिभावक के गरीब होने की जरूरत नहीं, केवल बालक ही के धनहीन होने से मतलब है। इस प्रकार के विचित्र अर्थ से बडे से बड़े धन-कुबेर का पुत्र भी 'ग़रीब और असमर्थ' की श्रेणी मे शामिल कर लिया गया। इसी ढग से और भी कितने ही शब्दो की दुर्दशा की गयी और फिर अपना मतलब सिद्ध किया गया।

पार्लिमेट के अन्य अनुदार सदस्यों मे से, जिनकी शिक्षा एटन या हैरो के स्कूलो में नही हुई, करीब २३ ऐसे है जिन्होने घर पर प्राइवेट अध्यापको से पढ़ा है। इस प्रकार की शिक्षा भी अत्यधिक महँगी हुआ करती है। शेष में से १५४ व्यक्तियों ने ऐसे स्कूलों में शिक्षा पायी है, जो साधारण स्कूलो की अपेक्षा अधिक महँगे कहे जा सकते हैं। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा के लिए स्कूल का चुनाव उसकी वशगत रूढ़ि के विचार से ही किया जाता है। कुछ के पिता अपने पुत्रों को एटन या हैरो में केवल धार्मिक विचार से ही नही भेजते और किसी कैथोलिक सम्प्रदाय के स्कूल मे पढ़ाते हैं।

अब स्कूलों के बाद विश्वविद्यालयो का नम्बर आता है। केवल २७२ अनुदार पार्लिमेटी सदस्यो से उनके विश्वविद्यालयो के नाम मिल सके हैं। इनमें से १८८ व्यक्ति तो आक्सफोर्ड अथवा कैंब्रिज के विद्यार्थी रह चुके हैं; ५० ने प्रातीय विश्वविद्यालयों में अथवा विदेशी विश्वविद्यालयों मे शिक्षा पायी थी और शेष ३४ व्यक्ति रायल मिलिटरी एव नेवेल कालिजो से निकले हुए हैं।

अस्तु, यहाँ भी हम देखते हैं कि शिक्षा की जो सुहूलियते अनुदार-पक्षीय लोगों को प्राप्त हैं वह ९८% बृटिश जनता को नसीब नही। अधिकाश अनुदार-पक्षीय नेताओं का आक्सफोर्ड अथवा कैम्ब्रिज के विश्व-विद्यालयो मे पढ़ना केवल इसलिए सभव हो सका कि उनके माता पिता धनवान थे। उनकी शिक्षा-सम्बधी सुविधाये वस्तुतः उनकी योग्यता के कारण नहीं, बल्कि उनकी ऊँची हैसियत के कारण प्राप्त हुई हैं। यदि सब नही तो इनमे से बहुसख्यक लोग जरूर ऐसे दिखाई देते हैं, जिनका मानसिक विकास उस दर्जे तक नहीं पहुँच सका, जिससे यह कहा जा सके कि उनका आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज मे जाकर १००० पौड के खर्च से विद्यालाभ करना उचित था। बात यह है कि मनुष्य के चुनाव के लिए उसके धन के विचार और उसकी योग्यता के विचार मे बडा वैपरीत्य पड़ जाता है।

यह बात नही है कि अनुदार दल वालो में योग्यता की कमी कुछ विशेष रूप से पायी जाती हो। जिस प्रकार साधारण जनता मे अधिकतर साधारण बुद्धि वालो की ही सख्या दिखाई देती है उसी प्रकार अनुदार दल के लोगो में भी इन्हीं साधारण लोगों की सख्या बहुतायत से मौजूद है। निस्सन्देह कुछ अनुदार दल के सदस्य पार्लिमेंट मे ऐसे भी मौजूद हैं, जिनका चुनाव उनकी योग्यता के ही लिहाज से किया गया है, लेकिन इस प्रकार के लोगो की सख्या बहुत थोड़ी है। धन और वश का विचार ही सर्वत्र प्रधान दिखाई देता है, और इसके साथ ही साथ शिक्षा के प्रति एक प्रकार की उपेक्षा का भाव भी यहाँ व्यापक रूप से मौजूद है।

अर्ल विन्टर्टन अपनी 'युद्ध के पहले' (Pre-war) नामक पुस्तक में लिखते हैं कि अनुदार वर्ग की 'दिलचस्पी किसी ऐसी बात चीत मे नहीं दीखती जिसमे मानसिक योग्यता की आवश्यकता रहती है'। मिस्टर एम० आर० हेली हचिन्सन एम० पी० भी यद्यपि

यहाँ तक तो बृटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन हुआ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना ज़रूरी है। 'टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए पहले-पहल सन् १६७८ ई० के क़रीब किया गया था। उस समय राजा और पार्लिमेट के झगड़े में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया था उन्हीं के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे जो राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर से जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदे प्राप्त थीं। इस प्रकार प्रायः तमाम बड़े-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी धारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई देते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो लोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे **'व्हिग पार्टी'** (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार पार्लिमेंट के तमाम सदस्य 'व्हिग' और 'टोरी' दो दलों में विभक्त हो गये थे।

सन् १८३२ के सुधार क़ानून के समय इन दोनों दलों का नाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'** (Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और ह्विग पार्टी का नाम **'लिबरल'** **(या 'उदार') पार्टी** पड़ गया। आगे चल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर से किया गया। उस समय प्रधान मंत्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल बिल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल से अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव अब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'** रक्खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही एक तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

एटन तथा आक्सफोर्ड मे शिक्षा-लाभ कर चुके हैं, किंतु शिक्षा के प्रति अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं :—

"अधिकांश लोग जरूरत से ज़्यादा पुस्तकें पढ़ा करते हैं। साधारण पठन-पाठन के लिये बाइबिल, विशेषकर उसका Ecclesistes and Proverbs वाला अश तथा शेक्सपियर के नाटक, मुख्यतः जूलियस सीजर और हेनरी पॉचवे को पढ लेने से ही हमारी सारी आवश्यकता पूरी हो सकती है।"

हम यह नहीं कहते कि अनुदार दल के सभी लोग हेली हचिन्सन के से विचार रखते हैं। लेकिन फिर भी उसके अधिकतर भाग की विचारशैली साधारणतया हेली हचिन्सन की ही विचारशैली के नमूने पर है, और मन्त्रिमडल मे भी कम से कम एक सदस्य इसी विचार के हैं, इसमे जरा सदेह नहीं।

किन्तु अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों के लिए यह उतना आवश्यक भी नहीं है कि वे सब के सब अपने माथे मे स्वतन्त्र बुद्धि ही रखे। केवल अनुदार पक्ष के सिद्धांतों में अविचल अधी भक्ति ही उनके लिए काफी होती है, कारण कि अनुदार शासकों का समूह अपने इन अनुयायियों से हर एक मामले पर बुद्धिपूर्वक विचार करने के बजाय केवल आँख मूँद कर अपनी आज्ञाओं का पालन ही ज्यादा उचित समझता है

अब इन अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों की जीविका पर भी एक नजर डालना है। पहिले दिखला आये हैं कि इनमे से एक बहुत बड़ी सख्या बडे-बडे व्यापारियों एवं कम्पनी-डिरेक्टरों की है। लगभग १८१ अनुदार सदस्य इस समय अनेक कम्पनियों के डिरेक्टर हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से ऐसे लोग हैं, जो अपने जीवन के किसी न किसी समय मे बड़ी-बड़ी लिमिटेड कम्पनियों के डिरेक्टर रह चुके हैं। स्थूल रूप से यह कहा जा सकता है कि अपनी पारिवारिक

सम्पत्ति को पालना-पोसना और बढाना ही धनिक परिवार के पुत्रों का खास पेशा है। कितने लोग केवल अपनी रियासत और जमीदारी के प्रबन्ध मे ही लगे रहते हैं। यद्यपि यह ठीक-ठीक नही बतलाया जा सकता कि पार्लिमेंट के कितने अनुदार सदस्यो के पास इस समय जमीन और रियासत है, अथवा कितने लोग मुख्यतः अपनी जमीदारी के प्रबन्ध मे लगे हुये हैं, फिर भी इनमे से कम से कम बीस आदमी तो ऐसे अवश्य हैं जो अपने को स्वय जमीदार कहते हैं और जिनकी जीविका के लिये इधर सिवाय जमीदारी के कोई दूसरा काम नही दिखाई देता। किन्तु यदि अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो की वसीयतों का अध्ययन किया जाय तो जान पड़ेगा कि उनमे जमीदारो की सख्या इससे कहीं ज्यादा है। कुछ न कुछ भूमि तो अधिकाश व्यक्तियो के पास है, किन्तु जिन लोगो की जीविका मुख्यतः भूमि की ही आय पर निर्भर है उनकी सख्या भी पचास या साठ से कम न होगी।

यद्यपि अपनी पारिवारिक सम्पत्ति का प्रबन्धही अधिकतर पार्लिमेंटी अनुदार सदस्यों का मुख्य रोजगार है, फिर भी लगभग २०० व्यक्ति ऐसे हैं जिनके और दूसरे-दूसरे भी रोजगार है। इन सबो के अलग-अलग ब्यौरे तो बतलाना कठिन है, किन्तु फिर भी बहुतो के ब्यौरे मालूम कर लिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं :—

रेग्युलर सेना मे अफसर	९६
बैरिस्टर	७८
सिविल सर्विस के भूतपूर्व अफसर ...	१६

इन सब पेशों मे एक बात, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण दीखती है, यह है कि इन सबो का राष्ट्र सेवा से घना सम्बन्ध है। उदाहरणार्थ सिविल सर्विस के द्वारा शासन की सपूर्ण मशीन चालू रहती है; न्याय-विभाग की तमाम ऊँची-ऊँची जगहों पर, अर्थात् ऊँची से ऊँची अदालत-अपील के जजो से लेकर साधारण वेतनभोगी मजिस्ट्रेटो तक के पदो पर

बैरिस्टरो का ही एक मात्र अधिकार रहता है; तथा फ़ौजी अफ़सरो के हाथ मे राष्ट्र की अतिम और सब से जबर्दस्त ताक़त रहा करती है।

अस्तु, इन पेशो को 'हुकूमत के पेशे' भी कह सकते हैं, इसलिए कि देश की हुकूमत में इन्ही पेशेवालो का मुख्य भाग रहता है और इसलिए भी कि देश के हाकिम अनुदार दल वाले इन्ही पेशो को पसन्द किया करते है। वास्तव में धनिको के इस समूह ने ब्रिटिश प्रजा पर अपना अधिकार दोहरे रूप में जमा रखा है। एक तो पार्लिमेंट की कुर्सियो पर कब्जा कर के और दूसरे, सरकारी नौकरियो के मुख्य-मुख्य पदों पर अपना अधिकार जमा कर। दूसरे देश के एक दर्शक ने इसी बात को सक्षेप मे इस प्रकार वर्णित किया है :—

"(इस धनिक) 'समाज' की वास्तविक शक्ति कुछ वैधानिक अधिकारो में नही, बल्कि शासन की संपूर्ण मशीन पर अपना अधिकार जमा लेने में है। राज्य के तमाम महत्वपूर्ण पदो पर जो नियुक्तियाँ की जाती हैं उन सबो पर इसी दल का प्रभाव रहता है और इसलिए केवल वे ही व्यक्ति इन पदों के योग्य समझे जाते हैं, जो अपने जन्म से ही इस समाज के आदमी हैं। × × × × × अधिकांश जज और कानूनी अफ़सर, बिशप, तथा तमाम प्रतिष्ठित चर्चों के ऊँचे-ऊँचे पादड़ी एवं स्थल और जल सेना के ऊँचे-ऊँचे अफ़सर सब इसी दल के आदमियो मे से भर्ती किये जाते है। × × × सिविल सर्विस में भी इन्ही नवाबो के उपाधिहीन छोटे बेटो, भतीजों, भाइयो तथा दूर के रिश्तेदारो की भरमार की जाती है।"

निस्सन्देह यह नही कहा जा सकता कि सभी बैरिस्टर, सेना के अफसर अथवा सिविल सर्विस के कर्मचारी लोग धनिक वर्ग से ही लिये गये हैं। उपरोक्त वर्णन में कुछ थोड़ी सी अत्युक्ति जरूर है, कारण कि इन पदो पर बहुत से लोग मध्य श्रेणी के आदिमियो में से भी अवश्य भर्ती किये जाते है। किंतु फिर भी जो पद अत्यन्त ऊँचे और बहुत ही

महत्वपूर्ण समझे जाते हैं उन सब पर अधिकतर धनी घराने के लोगों का कब्जा है।

सेना पर अनुदार पक्ष का अधिकार एक विशेष महत्व का विषय है। लोगों की यह धारणा अत्यंत भ्रमपूर्ण है कि बृटिश सेना राजनीति से बिल्कुल अलग रखी जाती हैं। वास्तव मे पार्लिमेंट के अंदर बहुसख्यक भूतपूर्व सैनिक अफसरों की उपस्थिति तो यह सिद्ध करती है कि यह सेना अनुदार पक्ष के लिये तैयार करने के लिए एक सुन्दर शिक्षा-भूमि है।

यह झूठ है कि सेना को हर प्रकार की राजनीति से अलग रखा जाता है। वास्तविक बात यह है कि अनुदार राजनीति के सिवाय और कोई दूसरे प्रकार की राजनीति वहाँ नही पहुँचने दी जाती। सेना को भड़काने के विरुद्ध जो कानून बनाये गये हैं उनका प्रयोजन सेना को राजनीति से अलग रखना नही है, बल्कि सेना मे अनुदार राजनीति की शिक्षा को सुरक्षित बनाना है। अनुदारपक्षीय सैनिक अफसर भी यह खूब अच्छी तरह जानते हैं कि सेना मे विरोधी दल की राजनीति के प्रचार को रोकने के लिये इस प्रकार के सैनिक कानून का उपयोग किस ढग से करना चाहिए।

अस्तु, दूसरे देशों मे जनतंत्रवाद के विरुद्ध जो बृटिश सेना इस्तेमाल की जाती है वह इसी ढग की सेना है, जिसपर धनी नवाबो की मडली ने अपना पूरा अधिकार जमा रखा है। इसका एक ताजा उदाहरण स्पेन का गृहयुद्ध है। बलवे का सघटन अफसरों के समुदाय ने किया था और उनकी सहायता स्पेन के तमाम धनिक जमींदार और व्यापारियों ने की थी। अस्तु, बृटिश अनुदार-पक्षीय सेना की सहानुभूति भी स्वभावतः बलवाइयों के ही पक्ष मे दिखाई पडी। प्रमाण-स्वरूप 'जर्नल आफ दि रायल यूनाइटेड सर्विसेज इन्स्टिट्यूट (Journal of Royal United Services Institute) नामक पत्र अपने एक सम्पादकीय लेख मे लिखता है :—

"प्राय· सभी सेनाएँ स्वभाव से परिवर्तन-विरोधी और देशभक्त

संस्थाएँ हुआ करती हैं, और देश की प्रतिष्ठा तथा एकता को कायम रखना ही उनका मुख्य अभीष्ट होता है। स्पेन में प्रजातंत्र-शासन के कारण जो अधःपतन तेज़ी के साथ दिखाई दे रहा था, उसने सेना के अधिकाश अफ़सरों तथा अन्य देशभक्त सैनिकों को चौकन्ना बना दिया। स्पेन की रक्षा यदि हो सकती थी तो वह इसी सेना के हाथ से हो सकती थी अस्तु, मोराको स्थित स्पेनी सेना ने जेनरल फ्रांको की अधीनता मे विद्रोह का झंडा सबसे पहले खड़ा किया।"

स्मरण रहे कि अभी बहुत समय नही हुआ कि आयर्लैंड में भी एक इसी प्रकार का विद्रोह बृटिश सेना के एक भाग ने अनुदार पक्षीय नेताओं के इशारे पर उठाने की चेष्टा की थी, जिससे पार्लिमेंट में आयरिश होमरूल बिल न पास हो सके। इन दोनो ही बलवों में एक घनिष्ठ समानता दिखाई देती है :—

"सर एडवर्ड कार्सन के जर्मन राइफलों से सुसज्जित उल्स्टर के स्वयसेवक ही इधर डेढ़ सौ वर्षों में बृटिश राज्य के अंदर पहली बार बगावत करने वाले निकले। इनका मुकाबला एक ऐसी सरकार को करना पड़ा, जो सन् १९३६ की स्पेनी सरकार के सदृश ही रेग्युलर सेना पर पूरा भरोसा नही कर सकती थी और संभव था कि कदाचित् वह इस बलवे को वही दबा देने मे असमर्थ सिद्ध होती।"

पार्लिमेंट मे तथा मंत्रि-मंडल में भी कुछ ऐसे अनुदार सदस्य मौजूद हैं, जिन्हों ने कुराग (Curragh rebellion) के बलवाइयो का साथ दिया था। प्रमाण-स्वरूप स्वयं अर्ल विंटर्टन ही इस बात को अपने जीवन चरित मे स्वीकार करते है। कैप्टेन विक्टर कैज़ेलेट तथा सर आर्नल्ड विल्सन जैसे भूतपूर्व सैनिक तथा वर्तमान पार्लिमेंटी अनुदार सदस्य इस समय जेनरल फ्रांको के सब से जबर्दस्त समर्थको मे समझे जाते हैं।

सरकारी नौकरियों पर धनिक अनुदार पक्ष का जो अधिकार जमा हुआ है उससे उसका राजनैतिक प्रभाव अत्यंत स्थायी बन गया है।

अस्तु, जिस समय पार्लिमेंट मे इस पक्ष का बहुमत न भी हो उस समय भी देश के शासन मे उसका प्रभाव बराबर काम करता ही रहेगा। वास्तव मे अनुदार पक्ष की शक्ति पार्लिमेंट की कुर्सियों के साथ-साथ सरकारी ओहदों पर भी अधिकार जमा लेने से ही कायम रह सकी है। इन दोनों ही पर इस समय प्रजावर्ग की इस नन्ही सी सकुचित विचारों वाली धनिक मडली का अधिकार कायम है।

ऊपर जिन पेशो को हम 'हुकूमत के पेशे' के नाम से परिचित करा आये है उनके मुकाबले मे अब मध्य श्रेणी के पेशो का पार्लिमेंटी अनुदार दल मे कितना प्रतिनिधित्व है इसे भी नीचे की सूची में देखिए :—

१—सालिसिटर	१०
२—पत्रकार .	१५
३—डाक्टर	६
४—एकाउन्टेन्ट .	८
५—स्कूल मास्टर	४
६—विद्वान् वर्ग (भिन्न भिन्न विषय मे)	६
७—शिल्पकार ..	२
८—दॉत बनाने वाले .	१

बृटिश जनता मे कम्पनी-डायरेक्टरो और डाक्टरो की सख्या लगभग एक सी है। किंतु अनुदार पक्ष मे डाक्टरों के प्रतिनिधि केवल ६ हैं जब कि डायरेक्टरों की प्रतिनिधि-सख्या १८१ है। इसी प्रकार स्कूल-मास्टरो की सख्या बृटिश जनसमूह मे सेनापतियो की सख्या से कही ज्यादा बढकर है, किंतु अनुदार दल मे उनकी गिनती केवल ४ है और सेनापतियो की ७६। वैज्ञानिकों, युनिवर्सिटी-प्रोफेसरों तथा लेक्चरर लोगों की भी सख्या उच्च राजकर्मचारियों की अपेक्षा कही ज्यादा है, किंतु फिर भी राज-कर्मचारियों की तादाद अनुदार पक्ष मे इन लोगों की दूनी से भी

अधिक हैं। डाक्टर, पत्र सम्पादक, सालिसिटर, युनीवर्सिटी के अध्यापकगण, शिल्पकार, दाँत बनानवाले इत्यादि मध्य-श्रेणी के तमाम पेशो के जितने आदमी अनुदार पार्लिमेंटी दल मे मौजूद हैं उनकी कुल सख्या मिलाकर भी अकेली बीमा कंपनियों के आदमियो की सख्या से विशेष अधिक नही होती।

किंतु मध्यश्रेणी की ऊपर जो सख्याएँ दी गयी है वे वास्तविक से कुछ अधिक ही हैं, कारण कि उनमे बहुत से ऐसे डाक्टर भी शामिल कर लिये गये हैं जो अब डाक्टरी नही करते। पत्र-सम्पादक और सालिसिटर लोगों मे भी अब कितने ही कम्पनी डायरेक्टर हो गये हैं। इनके अतिरिक्त १२ एजीनियर भी हैं जो अब कम्पनियों के डायरेक्टर हो गये हैं और इसलिए उनके नाम नही शामिल किये गये।

किंतु फिर भी मध्यश्रेणी का प्रतिनिधित्व अनुदार दल मे कुछ कम नहीं कहा जा सकता। वास्तव मे कम्पनी-डायरेक्टरों, भूतपूर्व सैनिको, बैरिस्टरों, भूतपूर्व राजकर्मचारियों, जमींदारो इत्यादि का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत उसमे इतना अधिक है कि उनके मुकाबले मे मध्यश्रेणी का प्रतिनिधित्व बहुत कम जान पड़ता है। मध्यश्रेणी के पेशेवर लोग इंगलिस्तान के विशेषज्ञवर्ग कहे जा सकते हैं, किंतु अनुदार दल में धनिकों के प्रतिनिधित्व का महत्व कायम रखने के लिए इन विशेषज्ञों के प्रतिनिधित्व को बिल्कुल दबा दिया जाता है।

इससे भी अधिक एक और उल्लेखनीय बात यह है कि जहाँ अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों मे मजदूर-मालिकों की संख्या इतनी अधिकता के साथ मौजूद है वहाँ मजदूरवर्ग का एक भी प्रतिनिधि नहीं दिखाई देता। वृटिश द्वीप की कुल जनसख्या मे ६० प्रतिशत से भी अधिक लोग ऐसे हैं, जो किसी न किसी प्रकार की नौकरी करके अपनी जीविका चलाते हैं। इनमे श्रमिक, दफ़्तरों मे काम करने वाले, सेल्समैन, कारखानों के फोरमैन, सुपरिन्टेन्डेन्ट भिन्न-भिन्न प्रकार के विशेषज्ञ

इत्यादि सब शामिल हैं। वास्तव मे इन्ही के मिले हुए समूह को हम बृटिश जनता के नाम से पुकार सकते हैं। इनमे का एक भी आदमी इस समय अनुदार पक्ष मे नही दीखता। केवल इनके मालिक ही मालिक उसमे दिखाई देते हैं। इस प्रकार अनुदार दल एक प्रकार का निराला दल है, जो देश के प्राय: सभी मुख्य-मुख्य पेशे वालों को पार्लिमेंट में अनुदार पक्षीय सदस्य होने से रोकता है।

अनुदार पक्षीय वोटरो को, बल्कि अनुदार पक्ष के साधारण सदस्यों तक को, अनुदार दल की नीति स्थिर करने मे कुछ बोलने का अधिकार नही है। अतएव अनुदार दल की कान्फरेसो मे यदि उत्साह का बिल्कुल अभाव दिखाई दे तो उसमे आश्चर्य ही क्या है? स्वय पीटर हावर्ड साहब, जो सन् १६३७ में स्कारबारो की अनुदार कान्फरेस में एक प्रतिनिधि की हैसियत से उपस्थित थे, और जो बोर्नमाउथ की मजदूर कान्फरेन्स मे भी सन्डे एक्सप्रेस (Sunday Express) नामक पत्र के सवाददाता की हैसियत से गये हुए थे, इन दोनों कान्फरेसो की तुलना करते हुए इस प्रकार लिखते हैं:—

"भूल मे मत पड़िए। इन वार्षिक अधिवेशनो मे साम्यवादियों ने अनुदारों को मात कर दिया है। बोर्नमाउथ सजीव था और स्कारबारो निर्जीव। पार्लिमेंट का प्रायः प्रत्येक मजदूर सदस्य और ट्रेड यूनियनों का हर एक नेता बोर्नमाउथ पहुँचा हुआ था, किंतु अनुदार पक्ष के ३७० पार्लिमेंटी सदस्यों मे से ५ प्रतिशत भी लोग स्कारबारो नहीं गये। बोर्नमाउथ—अव्वल दर्जे की वक्तृत्व-शक्ति। स्कारबारो—मध्यम श्रेणी के व्याख्यान। साम्यवादी प्रधान श्रीयुत् ऐटली साहब हर एक व्याख्यान को सुनते हुए आदि से अत तक मच पर बैठे रहे। किंतु स्कारबारो मे चेम्बरलेन साहब केवल एक ही व्याख्यान के समय मौजूद रहे और उस व्याख्यान के भी देने वाले स्वय वही थे।

"जिस समय एक अनुदार डेलीगेट मच पर खड़ा बोल रहा था, उस समय मैंने मच पर बैठने वाले १६ नेताओं को 'क्रासवर्ड पजल'

(Cross-word Puzzles) अर्थात् पहेलियाँ हल करते पाया। किंतु बोर्नमाउथ में लोगो की दिलचस्पी प्रत्येक भाषण मे प्रकट हो रही थी। स्कारबारो मे जब कोई साधारण दर्जे का डेलीगेट बोलता था तो उसके शब्द सभामंडप से उठ-उठ कर शराबखाने की तरफ़ जाने वालों की पदध्वनि मे डूब जाते थे।

"बोर्नमाउथ में वाद विवाद की मात्रा अत्यधिक दिखाई दे रही थी ...... किंतु स्कारबारो मे वाद विवाद बिल्कुल ही नही। जब तक मैं वहाँ था किसी भी प्रस्ताव के विरुद्ध एक भी वोट नही दिखाई पड़ी। क्या इसी का अर्थ टोरी प्रतिनिधियो की प्रत्येक विषय पर सहमति है? नही। इसका अर्थ है केवल यह कि जिन-जिन विषयो पर टोरी दल वाले भिन्न-भिन्न राय रखते थे, वे टोरी कान्फरेस मे विचार के लिए रखे ही नही गये। अनुदारो की एक गुप्त समिति होती है, जो हर एक ऐसे प्रस्ताव को अलग कर देती है जिसपर मतभेद जान पड़ता है।

'बोर्नमाउथ से प्रतिनिधिगण उत्साह से भरे हुए वापस गये। स्कारबारो से प्रतिनिधिगण केवल घर लौटने के लिए उत्सुक थे।"

अनुदार दल के साधारण सदस्य और समर्थक लोग भी वास्तविक अनुदार मडली से सर्वथा अलग रक्खे जाते हैं। बहुधा अनुदार दल की नीति लदन के खर्चीले क्लबों में ही तय की जाया करती है, किंतु उनमे अधिकाश अनुदार पक्ष के समर्थक प्रवेश नही कर सकते, चाहे वे उतना खर्च उठाने के लिए तैयार भी हो जॉय। उदाहरणार्थ आधे से ज्यादा पार्लिमेंट के अनुदार पक्षीय सदस्य कार्ल्टन क्लब के मेम्बर हैं, जिसका प्रवेश शुल्क ४० पौंड और वार्षिक चन्दा १७ गिन्नी है। अन्य सदस्य सिटी आफ लदन क्लब के मेम्बर हैं। इसका प्रवेश-शुल्क १०० गिन्नी है और सालाना चन्दा १५ गिन्नी है। इस प्रकार प्रायः सभी अनुदार दल के पार्लिमेंटी सदस्य किसी न किसी खर्चीले क्लब के मेम्बर बने हैं, जिनमे से उपरोक्त दोनों क्लबों मे इनकी सख्या

सबसे ज्यादा है । इनके अतिरिक्त प्रातीय क्लबो, नौका-क्लबो तथा गाल्फ-क्लबों मे भी इनकी सख्या मौजूद है । अधिकाश लदन क्लबों मे, जहाँ ये लोग जाया करते हैं, प्रवेश-शुल्क की एक गहरी रकम के अतिरिक्त कम से कम १२ से १८ पौड तक सालाना ऊपरी खर्च बैठता है ।

वास्तव मे ये क्लब भी इस धनिक समुदाय के जीवन की सामाजिक पृथकता के एक भाग है । इस प्रकार के सामाजिक जीवन से शासक ममूह और भी सुगठित बन जाता है और इसी समूह के हाथ मे अनुदार दल की तमाम नीतियो का निर्णय भी रहता है । अस्तु, नवाबी की छाप इस शासक श्रेणी के जीवन के अग-प्रत्यग पर बैठ गयी है ।

नवाबी उपाधियो और इनके महत्व एव राजनैतिक प्रभावों के विषय मे पहिले लिखा जा चुका है । किंतु इनके अतिरिक्त अनुदार वर्ग मे एक और भी समुदाय है, जो अपने विचार, सामाजिक कार्य, मन बहलाने के ढग इत्यादि के कारण साधारण बृटिश समाज से बिल्कुल अलग दिखाई देता है ।

लगभग १०० अनुदार पक्ष के पार्लिमेंटी सदस्यों का जी बहलाने का मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना, चिड़िया मारना और जगलों मे शिकार करना है । कहना न होगा कि ये तीनो ही बडे खर्चीले मन-बहलाव हैं । इनके अतिरिक्त कम से कम ३० व्यक्ति नौका-क्लबो के भी मेम्बर है । सक्षेप मे एकमात्र गाल्फ को छोड़ कर, जो कि इनमे बहुत कम खेला जाता है, शयद ही कोई ऐसा खेल इनका है जो सर्व साधारण का खेल कहा जा सके ।

लगभग आधे अनुदार पार्लिमेंटी मेम्बरों के पास अपने रहने के लिए दो-दो महल हैं, और बहुतों के पास तो तीन-तीन भी हैं । इनके अतिरिक्त एक बहुत बड़ी रकम दावतो मे भी खर्च की जाया करती है । इन दावतों में अनुदार-पक्ष के मजदूरो की तो कौन कहे मध्यश्रेणी के इज्जत-

अब सयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शंका या प्रश्न करने का साहस नही हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनों जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-सस्था के नाम से नही पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इग्लैण्ड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमे एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नही रहता था। कहते हैं सन् १७९३ ई० मे हाउस आफ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा मे तो लार्ड उपाधिधारी बडे-बडे सामत-जमीदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा में भी अधिकतर सदस्य प्रभावशाली जमींदार और रईस ही लोग हुआ करते थे। गरीबों और मध्यश्रेणी वालों का उसमे कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिखाई देता था। चुनाव में बेईमानी और रिश्वतबाजी का बाजार भी उस समय खूब गर्म था। अन्त में प्रजा के बहुत दिनों तक आन्दोलन करते रहने पर सन् १८३२ ई० में एक सुधार कानून पास किया गया, जिससे निर्वाचकों की सख्या मे वृद्धि की गयी। आगे चल कर समय-समय पर यह संख्या और अधिक बढ़ायी गई और अब इस समय वहाँ पार्लिमेंट के चुनाव में वोट देने का अधिकार प्रत्येक बालिग स्त्री और पुरुष को प्राप्त हो गया है।

दार लोग भी कितनी संख्या में पहुँच सकते हैं यह स्वय सोचा जा सकता है।

वास्तव मे जैसे लोगों के बीच में मनुष्य उठता-बैठता और रहा करता है, वैसे ही ढंग की उसकी विचार-शैली भी बन जाया करती है। पार्लिमेंट के अनुदार-पक्षीय सदस्यों का साथ बड़ी-बड़ी लिमिटेड कपनी के डायरेक्टरो से है, अपने ही समान अपने अमीरी क्लबो के अमीर मेम्बरों से है, तथा चिड़ियो पर निशान लगानेवाले, मछली पकड़ने वाले और शिकार करने वाले मित्रो से हैं। अस्तु, बस यही समाज उनकी अनुदार नीति और विचार शैली को भी स्थिर करता है। उन लोगो के रहन-सहन का ढग ही ऐसा है जो उन्हे साधारण मनुष्य के जीवन-प्रश्नो को समझने के लिए बिल्कुल अयोग्य बना दे। उनके राजनैतिक विचार एकमात्र उसी वर्ग के स्वार्थों को प्रकट कर सकते हैं जिसमें वह रहता है।

———

आठवां अध्याय

अनुदार दक्षिण पार्श्व

"स्पेन यदि फ्रांको के हाथ मे आ गया, तो जिब्राल्टर के लिए खतरा है, और उपनिवेशों से फ्रासीसी सेनाओं को भी बुलाना बोलियारिक द्वीपो की किले बदी के कारण प्रायः असभव हो जायगा। यदि ऐसी अवस्था आ गयी, तो जर्मनी फ्रान्स की वह दुर्दशा करेगा जैसी कदाचित् किसी देश ने आज तक अपने तमाम इतिहास मे न देखी होगी .. ।

"जापान से यह पूरी आशा की जा सकती है कि वह हाकाग पर अपना अधिकार करने का अवसर कदापि हाथ से न जाने देगा और इस का अर्थ वास्तव मे वही होगा जो इग्लैंड को सुदूर पूर्व से निकाल बाहर करने का हो सकता है। इगलैंड को सब कुछ सहना पडेगा जो जर्मनी और इटली उसे सहावेगा। सारी दुनिया आज इग्लैंड की वर्तमान नपुसकता पर हॅस रही है। सन् १९१४ के पूर्व वह इस अवस्था को बर्दाश्त करने के लिए कदापि तैयार न हुआ होता। इग्लैंड इस समय अपने भयकर शस्त्रीकरण द्वारा जर्मनी और इटली से आगे बढ़ने के प्रयत्न मे है। किंतु शस्त्रास्त्रों मे हमलोग इतने आगे बढे हुए हैं कि हमे कोई नहीं पा सकता।"—ताः ८ एप्रिल सन् १९३८ के मैंचेस्टर गार्जियन मे प्रकाशित प्रोफेसर मैक्स ग्रुएन (Professr Max Gruen, Nazi authority) के एक व्याख्यान से उद्धृत।

देश की रक्षा की सारी जिम्मेदारी वर्तमान सरकार पर है। लेकिन बृटेन की रक्षा उसकी सैनिक-शक्ति पर उतनी अधिक निर्भर नहीं जितनी

कि उन महत्वपूर्ण स्थानो के अधिकार पर है, जिनके द्वारा उसके व्यापारिक जहाजो का मार्ग सुरक्षित रह सकता है। इसके अतिरिक्त मित्रो की शक्ति पर भी उसे बहुत कुछ भरोसा रहा करता है। मित्रो की सैनिक शक्ति मे यदि कुछ हानि पहुँच जाय तो उसका अर्थ यही होगा कि बृटेन की शक्ति मे भी उतनी ही कमी आ गयी। इस अध्याय मे हम पार्लिमेट के अनुदार सदस्यो का रुख बृटिश द्वीप की रक्षा के सवाल पर क्या है इसका विचार करेगे। इस समय बृटिश सरकार जर्मन खतरे के विरुद्ध बड़े जोरो से तैयारी कर रही है। किंतु अनुदार पक्षीय लोग इस खतरे को किस दृष्टि से देखते है यही यहाँ देखना है। विकहैम स्टीड (Wickham Steed) का कहना है कि जर्मनी से हमें जो कुछ भय है वह उसके भीतरी शासन से है। अस्तु, अनुदार दल वाले इस शासन को किस दृष्टि से देखते है?

यदि हम कुछ अनुदार नेताओ के पिछले भाषणो पर दृष्टि डाले तो जान पड़ेगा कि वे नाजी जर्मनी के बढते हुए खतरे से बिल्कुल ही बेसुध रहते आये हैं। उदाहरणार्थ सन् १९३३ में एक अनुदार पार्लिमेटी सदस्य सर टामस मोर (Sir Thomas Moor M. P.) का कहना था :—

"किंतु हर हिटलर को यदि मैं कुछ भी अपने निजी अनुभव से समझ सकता हूँ तो शांति और न्याय ही उसकी नीति के मूलमंत्र हैं।"—Sunday Dispatch, Oct. 22, 1933.

उस समय तो सर टामस मोर यहाँ तक आगे बढ़े हुए थे कि वह जर्मनी को उसके प्राचीन उपनिवेश वापस देकर उसकी शक्ति को और मजबूत बनाने की राय दे रहे थे। यूनियनिस्ट कैनवासिंग कोर (Unionist Canvassing Corps) मे भाषण करते हुए एक बार उन्होने कहा था कि **"जर्मनी को पश्चिमी अफ्रिका मे कुल पुराने उपनिवेश लौटा देने चाहिए, जिससे उसकी शक्ति के प्रयुक्त होने**

के लिए एक मार्ग खुल जाय।"—Daily Herald, 20th July, 1933.

सन् १९३४ मे भी सर टामस मोर जनता को इसी प्रकार शाति का झूठा सपना दिखा रहे थे। तारीख १८ फरवरी को उनका एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसका शीर्षक था "हिटलर को एक मौका दो।" इसमे उन्होंने लिखा था कि **"मैंने अपना सब प्रकार से संतोष कर लिया है कि हर हिटलर एक बहुत ही सच्चा और ईमानदार आदमी है।"** कदाचित् सर टामस ने हर हिटलर का लिखा हुआ "मीन कैफ" (Mein Kampf) नही पढा, जिसमे वह कहता हैः—

"असत्य पर विश्वास जमाने के लिए एक निश्चित साधन उस असत्य का आकार है। ... कारण कि जन सधारण का विशाल समूह अपने हृदय की पुरानी सिधाई मे एक छोटे असत्य की अपेक्षा एक बडे असत्य का जल्दी शिकार बन जाता है।"

अन्य पार्लिमेटी अनुदार सदस्य भी आगे वाले योरोपीय युद्ध के भय से बिल्कुल बेफिक्र थे और मध्य योरोप मे जनतन्त्र शासन के नाश को बुरा न समझ कर उसी रास्ते पर अपने देश को भी चलने के लिए सलाह दे रहे थे। उदाहरणार्थ सन् १९३४ में सर आर्नल्ड विल्सन नामक एक अनुदार-पक्षीय पार्लिमेट के सदस्य ने जर्मनी के सम्बंध में अपने विचार रेडियो द्वारा प्रकट किये थे। इस पर 'मैंचेस्टर गार्जियन' पत्र की टिप्पणी इस प्रकार निकली थी :—

"नवीन शासन का यह गुण-गान आज तक हमने जो कुछ सुना था उसमें सब से चोखा निकला। सर आर्नल्ड विल्सन को कही एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला जो असतुष्ट हो। × × जो कुछ उन्होंने सिद्ध करना चाहा वह यह था कि जर्मनी मे सैनिकता कही भी नहीं है।. . अंग्रेज श्रोताओ पर उनकी इस सलाह का कदाचित् कुछ भी प्रभाव न पड़ेगा कि हमे जर्मन पद्धति का अध्ययन करके और

उसे काट-छाँट कर स्वयं अपने काम में लाना चाहिए।—(मई २४, १९२४)।

सन् १९३५ में भी, जिस समय जर्मनी का शस्त्रीकरण बहुत कुछ आगे बढ़ चुका था, सर आर्नल्ड को साम्राज्य के लिए भय की कोई संभावना नहीं दिखाई दी :—

"अपनी निज की जर्मन यात्राओं से उन्हे यह धारणा हो गयीं थी कि किसी भी बडे राष्ट्र से हमारे लिए युद्ध की इतनी कम संभावना नही है जितनी जर्मनी से।"—३ री मई सन् १९३५ के टाइम्स नामक पत्र से उद्धृत।

म्यूनिक का समझौता हो चुकने के बाद भी आर्नल्ड विल्सन हमें यही समझाते रहे कि "वह इस बात पर विश्वास नहीं करते कि जर्मनी की नीयत बृटेन अथवा बृटिश सम्राज्य से मुकाबला करने की है।" और दिसम्बर सन् १९३८ में उन्होने यह भी कहा कि जर्मनी को समझौते के तौर पर उसके पुराने उपनिवेश वापस कर देने चाहिए।

यहाँ तक कि जिस समय चेकोस्लोवाकिया पर जर्मन सेना का अधिकार हो जाने के कारण समस्त इगलिस्तान में प्रतिवाद का एक तूफान सा उमड़ उठा था और म्यूनिक समझौते के पक्षपातियो तक के नेत्र खुल गये थे, उस समय भी कितने अनुदार-पक्षीय लोग यही राग अलाप रहे थे कि हिटलर की नीति से इस देश (अर्थात् इग्लैंड) को कोई भय नही है। मिस्टर एनीसले सोमरविल (Annesley Somervile, Conservative M. P.) ने कामन्स सभा की एक बहस में, जो चेकोस्लोवाकिया पर जर्मन अधिकार हो जाने के बाद ही की गयी थी, इस प्रकार कहा था :—

"हमें चाहिए कि हिट्लर को हम जितना वह दक्षिण-पूर्वीय योरोप में आगे बढ सकता है बढ़ने दें। व्यापार में हमारा हिस्सा फिर भी बना रहेगा .....इससे निश्चय है कि उसके मार्ग में विरोध और कठि-

नाइयाँ स्वयं बढ जाँयगी। किंतु जितना ही अधिक हम उसका विरोध करेंगे उतना अधिक उसका विरोध कमज़ोर पड जायगा।"

एक दूसरे अनुदार सदस्य मिस्टर एस० एए० डे चेयर ने भी इसी अवसर पर कहा था :—

"मेरा ऐसा खयाल नही है कि हिट्लर का इरादा इस देश की हुकूमत से मुकाबला करने का है।"—मार्च १५ सन् १६३६ को होने वाली कामन्स सभा की बहस मे।

२४ फरवरी सन् १६३७ को एक मज़ेदार रस्म-अदाई की गयी थी। इसमे "जर्मन राजदूत ने चमड़ा बेचने वालो की कम्पनी के ओर से सर क्लाड हालिस (Sir Claude Hollis, G C. M. G., C. B E) द्वारा अर्पित किये गये एक झडे को स्वीकार किया था। इस रस्म-अदाई मे फेलोशिप के चेयरमैन लार्ड माउन्ट टेम्पल का भी पूरा सहयोग था।"

ऊपर जिस 'फैलोशिप' का उल्लेख किया गया है वह एंग्लो-जर्मन फेलोशिप है। सर टामस मोर एम० पी०, लार्ड रेडिसडेल तथा लार्ड माउन्ट टेम्पल सभी इस संस्था के मेम्बर हैं।

"एंग्लो-जर्मन फेलोशिप की उत्पत्ति नाजी शासन की स्थापना के बाद हुई है और न्यूनाधिक रूप मे वह पुरानी एंग्लो-जर्मन सोसाइटी का स्थानापन्न है, जिसके अध्यक्ष लार्ड रीडिंग थे। नाजी-विद्रोह के पश्चात् इसका काम-काज सब बद हो गया था। इसके अंग्रेज सदस्यों में श्रीयुत् अर्नेस्ट टेनेन्ट हैं, जो उसके एक अवैतनिक मत्री हैं, तथा मार्केस आफ क्लाइज्सडेल और कई एक सिटी बैंकर हैं, जिनमे मिस्टर सैमुअल गाइनेस का भी एक नाम है।"—'इवनिंग स्टैन्डर्ड' (नवम्बर २८, सन् १६३५)।

पुरानी एंग्लो-जर्मन सोसाइटी के बंद हो जाने का कारण यह था कि नाजी पक्ष इसे अच्छी दृष्टि से नहीं देखता था और इसके कितने ही सदस्य भी हिट्लर के तरीकों को पसद नहीं करते थे।

अब उसके स्थानापन्न ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप के उद्देश्य इसके वार्षिक रिपोर्ट मे इस प्रकार बतलाये गये हैं:—

"यह बात ठीक है कि ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप का कार्य राजनैतिक दलबदी से बिल्कुल अलग है। इसका मुख्य उद्देश्य दोनो जातियो मे भ्रातृभाव की वृद्धि करना ही है, किंतु फिर भी उद्देश्य चाहे जितना अराजनैतिक हो, परंतु उसकी पूर्ति का महत्वपूर्ण परिणाम उसकी नीति पर पड़ना अवश्यंभावी है।"

इसी की प्रतिसहयोगी संस्था, जो जर्मनी मे स्थापित है, अंग्रेजी सदस्यो को दावते दिया करती है और साथ ही उन्हे "उस आन्दोलन के समझने म सहायता देती है, जो इस समय जर्मनी के जीवन को एक नये साँचे मे ढाल रहा है और उन्हे यह दिखाना चाहती है कि वहाँ के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किस प्रकार की सुधार करने वाली शक्तियाँ इस समय काम कर रही है।"

न्यूज रिव्यू (News Review) अपने एक लेख में उक्त फेलोशिप के अंग्रेजी सदस्यो का वर्णन इस प्रकार करता है:—

" ..... (ये सदस्य) बड़े-बड़े बृटिश व्यवसायपतियो के प्रसिद्ध नेता है, जिनका यह दावा है कि हिटलर का पक्ष न्याय की दृष्टि से "लाजवाब" है, और जिन्होने लदन मे बड़े-बड़े अमीरी ढग पर सुसज्जित क्लब भी खोल रखे हैं, जहाँ नाज़ीवाद का प्रचार किया जाता है, तथा जर्मन राष्ट्रीय-समाजवाद (National Socialism) के मन्त्रियो को दावतें दी जाती हैं।"

—२३ जनवरी १६३६।

लार्ड लंडनडरी अपनी पुस्तक 'हम और जर्मनी' ('Ourselves and Germany) की भूमिका मे अपने लिए लिखते हैं:—

'पाँच साल से अधिक हुए जब से और विशेषकर सन् १६३५ से जब मैंने वायुमंत्री (Air-ministry) के पद से इस्तीफा दिया

था, मैं इस देश (अर्थात् इग्लैंड) के लोगो को बराबर समझाता रहा कि जर्मनी और उसकी समस्याओ के विषय मे समझदारी से काम लेना चाहिए।"

नाजी और फासिस्ट सरकारों ने अपनी अपनी प्रजाओ को अन्य देशवासियो के सम्पर्क से बिल्कुल अलग कर रखा है। जब से नाजी-शासन का प्रारभ हुआ, वैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययन सम्बधी अनेक सस्थाओ, शाति-परिषदो तथा अन्य सभी प्रकार की सभाओ ने अपनी-अपनी जर्मन शाखाएँ और सहयोगी समितियाँ तोड़ दी। बात यह है कि वाह्यजगत् से किसी भी प्रकार के सम्बध के लिए, जिसपर नाजी सरकार का आधिपत्य नहीं है, जर्मन मे मनाही कर दी गयी है। किंतु ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप से नाजी सरकार की विशेष सहानुभूति है, कारण कि इस सस्था मे नाजी दल के ऐसे-ऐसे बडे और प्रसिद्ध नेता मेहमान रहा करते हैं, जैसे—हर वान रिबेनट्राप, फील्ड मार्शलवान ब्लाम वर्ग, हरवान शैमर अन्ड ओस्टन (Herr Von Tschammer-und Osten); डाक्टर अर्न्स्ट वोर्मान इत्यादि।

बदले मे फेलोशिप के भी अनेक सदस्य नाजी नेताओं के यहाँ मेहमान रह चुके हैं। उदाहरणार्थ लार्ड लडनडरी ही जर्मनी मे कई बार जाकर हिट्लर और जेनरल गेरिंग (Goering) के मेहमान रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन सदस्यों ने हिट्लर से भेट की है इनमे लार्ड माउन्ट टेम्पल, सर बैरी डामवाइल, लार्ड ब्रेकेट, लार्ड स्टम्प, लार्ड मैकगाउन तथा लार्ड लोथियन के नाम भी गिनाये जा सकते हैं।

अस्तु, उक्त सस्था का दो जातियों मे भ्रातृभाव उत्पन्न करने का उद्देश्य मुख्यतः नाजी दल और अनुदार दल के कुछ नेताओ एव व्यवसाय-पतियों के भ्रातृभाव में फलता-फूलता दिखाई पड़ता है।

नाजी पक्ष ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप के साथ क्यो इतनी अधिक सहानुभूति रखता है यह जानना कठिन नहीं। सब से पहले तो फेलोशिप

यद्यपि अपने किसी नियम द्वारा नाज़ी सरकार की वाह्य अथवा आन्तरिक नीति का समर्थन करने के लिये वाध्य नही है, फिर भी वह उसके लिए इंग्लिस्तान में एक ऐसा व्याख्यान-मच प्रयुक्त करता है, जहाँ से नाजी दल के नेतागण अपने सिद्धांतों का प्रचार कर सके और अपनी शासन-पद्धति के लिए बृटिश जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सकें। इसके १९३६-३७ के वार्षिक रिपोर्ट को तथा दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रिपोर्टों को देखने से पता चलता है कि समय-समय पर इस संस्था ने इंग्लैंड मे अनेक नाज़ी नेताओ के लिए सभाएँ संघटित की हैं और व्याख्यान कराये हैं। साथ ही अंग्रेज सदस्य भी जब-जब जर्मनी की सभाओ में गये हैं तो वहाँ हिट्लर, गेरिंग तथा अन्य नाजी नेताओ द्वारा उनकी आवभगत की गयी है।

दूसरा कारण इसके साथ नाजी सहानुभूति का यह है कि जर्मनी में नाज़ी पक्ष का प्रचार करने के लिए भी ऐंग्लो-जर्मन फ़ेलोशिप के सदस्यो के नाम से लाभ उठाने का अवसर मिलता है। उदाहरणार्थ, सन् १९३८ में नाजी वार्षिकोत्सव के समय पर प्रसिद्ध जर्मन पत्र Berliner Tageblatt में बृटिश नेवल इन्टेलिजेन्स के डायरेक्टर सर बैरी डामविल तथा मार्क्वेस आफ़ लडनडरी के बधाई सवांद छापे गये थे। स्वय वान रिबन ट्राप ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि जर्मनी को राजनैतिक क्षेत्र में ऐंग्लो जर्मन फ़ेलोशिप से अत्यधिक सहायता मिली है।

नाजी सरकार को यह कहने का अवसर मिल गया है कि उसके पुराने उपनिवेशो को लौटाने का समर्थन कितने ही इग्लैंड तक के नेता कर रहे हैं और इसी दलील से वह बृटिश सरकार पर भी बराबर अपना दबाव डालने का प्रयत्न करती रही। जिन अंग्रेज नेताओ के नाम से वह लाभ उठा रही थी, वे अनुदार पक्ष के पार्लिमेंटी सदस्य एवं नवाब-मडली के ही लोग थे।

अब ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप का कुछ विशेष वृत्तात देने एवं उसके सदस्यों की सूची प्रकट करने के पूर्व हम यह बतला देना चाहते हैं कि यह सस्था इग्लिस्तान मे अपने ढग की केवल एक ही सस्था नही है। वस्तुतः इस देश मे इस प्रकार की सस्थाओ की एक पूरी माला सी दिखाई देती है, जिनमे से यह भी एक है। अवश्य ही इसका स्थान सब से ऊँचा है, किंतु फिर भी स्थिति को पूरी तौर से समझने के लिए कुछ अन्य सस्थाओ के भी नाम दे देना आवश्यक जान पड़ता है निम्नलिखित सस्थाओ के नाम विशेष उल्लेख-योग्य जान पड़ते है:—

(१) ऐंग्लो-जर्मन केमरेड शाफ्ट (Anglo-German Kamerad Schaft);
(२) ऐंग्लो-जर्मन सर्किल (Anglo-German Circle).
(३) ऐंग्लो-जर्मन एकेडमिक ब्यूरो (Anglo-German Academic Bureau),
(४) दि लिंक (The Link).

इनमे सब से अधिक महत्वपूर्ण सस्था 'दि लिक' है।

"...... एडमिरल सर वैरी डामविल, जो कि हर हिट्लर, हर वान रिबनट्राप, हर हिमलर तथा नवीन जर्मनी के अन्य नेताओ के दोस्त हैं, इस समय अपनी व्यक्तिगत मित्रता को बढाने मे लगे हुए हैं। इसी से इसका नाम 'लिक' (कड़ी) पड़ा। लिक का निर्माण कई महीनो तक होता रहा। सर वैरी डामविल हिट्लर के यहाँ दो बार मेहमान रह चुके। अभी एक सप्ताह के लिए वह हर हिमलर के साथ हरिणो का शिकार खेलने गये थे।

"परिणाम यह हुआ कि केवल इग्लैंड मे ही इस सस्था का जोर नहीं बढ़ा, बल्कि जर्मनी मे भी एक सस्था इसी ढग की कायम कर दी गयी है।

अब सयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शका या प्रश्न करने का साहस नही हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनों जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-सस्था के नाम से नहीं पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इग्लैण्ड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमें एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नहीं रहता था। कहते हैं सन् १७६३ ई० मे हाउस आफ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा में तो लार्ड उपाधिधारी बडे-बडे सामत-जमीदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा मे भी अधिकतर सदस्य प्रभावशाली जमींदार और रईस ही लोग हुआ करते थे। गरीबों और मध्यश्रेणी वालों का उसमें कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिखाई देता था। चुनाव में बेईमानी और रिश्वतबाजी का बाजार भी उस समय खूब गर्म था। अन्त में प्रजा के बहुत दिनों तक आन्दोलन करते रहने पर सन् १८३२ ई० मे एक सुधार कानून पास किया गया, जिससे निर्वाचकों की सख्या में वृद्ध की गयी। आगे चल कर समय-समय पर यह संख्या और अधिक बढ़ायी गई और अब इस समय वहाँ पार्लिमेंट के चुनाव मे वोट देने का अधिकार प्रत्येक बालिग स्त्री और पुरुष को प्राप्त हो गया है।

"दि लिंक ... .. सर बैरी डामविल की पैदा की हुई चीज है। वही इसके जन्मदाता और अध्यक्ष हैं। कल उन्होने मुझसे कहा था कि इंग्लैंड मे यद्यपि ऐंग्लो-जर्मन संस्थाएँ बहुत सी हैं, किंतु उनके आपस मे कोई सहयोग नही दीखता। .... यही कारण है कि हममें से कुछ लोगो को एक ऐसी संस्था स्थापित करने की आवश्यकता जान पड़ी जो वास्तव मे लोकप्रिय हो। . . लगभग एक हजार सदस्य तो हमारी इसी सभा के अब तक हो चुके हैं और इसकी शाखाएँ भी बर्मिंघम, साउथेन्ड, चेल्सी, तथा बेजवाटर मे खुल गयी हैं। इनके अतिरिक्त और भी शाखाएँ बेल्फ़ास्ट, क्रायडन, मालन, अक्सफ़ोर्ड, एबर्डीन तथा केपटाउन में खुलने जा रही हैं।

"हमें आशा है कि लंदन तथा देश के अन्य भागो मे स्थित जर्मन लोग इस सभा के सदस्य हो जॉयगे। इससे वे अंग्रेज़ सदस्यो के साथ सामाजिक उत्सवो मे, व्याख्यानों मे तथा सिनेमा मे मुलाकात कर सकेंगे।

" .. .. हर हिटलर स्वय इस आन्दोलन में अत्यंत दिलचस्पी रखते हैं।"

—आब्सर्वर (Observer), २८ नवम्बर सन् १९३७।

यह सर बैरी डामविल साहब अभी सन् १९३६ मे ही सरकारी नौकरी से रिटायर्ड हुए हैं। इसके पहले यह निम्नलिखित पदो पर काम कर चुके हैं:—

(१) कमिटी आफ़ इम्पीरियल डिफेन्स के उपमत्री, १९१२ से १९१४ तक।

(२) डायरेक्टर आफ नेवल इन्टेलेजेन्स, १९२७-३०।

(२) वार कालेज मे कमाडिंग वाइस-ऐडमिरल, १९३२-३४।

इस समय यह 'दि लिंक' के चेयरमैन हैं। अन्य सदस्यों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) सर रेमन्ड बीजले ...... वाइस चेयरमैन।

(२) लार्ड रेडिसडे
(३) लार्ड सेम्पिल
(४) सी० ई० कैरोल
(५) प्रो० ए० पी० लारी
(६) ए० ई० आर० डायर
(७) आर्किबाल्ड क्राफर्ड
} .. . कौंसिल (कार्य कारिणी) के सदस्य।

ऊपर जिन कौंसिल के सदस्यों का नाम लिखा गया है वे सब ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप के भी मेम्बर हैं। मिस्टर सी० ई० कैरोल 'ऐंग्लो-जर्मन रिव्यू' (Anglo-German Review) के सम्पादक भी हैं, जो 'दि लिंक' का मुख-पत्र है और जिसका झुकाव सदैव नाजी पक्ष की ही ओर दिखाई देता रहा है, तथा जिसे जर्मन विज्ञापन-दाताओं से भी भरपूर सहायता मिलती रही है। यह पत्र हिट्लर और जर्मन-पत्रकारों का पक्ष लेकर बृटिश राजनीतिज्ञों को सदैव खरी-खोटी सुनाता रहा। चर्चिल साहब को भी इसने दुनिया का "निश्चयात्मक रूप से सब से भारी युद्ध-व्यसायी" बतलाया। अन्थनी एडेन साहब के विषय में इसने कहा था कि "परराष्ट्र-सचिव-पद के लिए यदि सब से दुर्भाग्य पूर्ण चुनाव किसी व्यक्ति का आज तक किया गया है तो वह इन्हीं का है।"

जनतत्रवादी सस्थाओं पर इस पत्र का बुरी तरह से आक्रमण होता रहा। चेकोस्लो-वाकिया के प्रश्न पर साइनर मुसोलिनी ने एक बार कहा था :—

"मुझे विश्वास नहीं कि योरोप एक सड़े अंडे को पकाने के लिए अपने घर में आग लगा देगा।"

सड़े अंडे से यहाँ तात्पर्य्य चेकोस्लोवाकिया का है। इस कथन को उक्त पत्र ने 'सुंदर विचार' शीर्षक देकर छापा था और इसे 'महीने का सबसे शुद्ध भावनापूर्ण विचार' बतलाया था। डाक्टर बीनिस (Dr. Benes) पर इस पत्र की विशेष कृपा होती रही और उन्हे यह अपनी गालियों और कटूक्तियों से सदा ही सन्मानित करता रहा। यह डाक्टर बीनिस वही महापुरुष थे, जिन्होंने चेकोस्लोवाकिया जनतत्र-शासन की नौका को उस समय भी सुरक्षित रखा था, जिस समय अन्य मध्य योरोपीय देशों मे तानाशाही स्थापित हो चुकी थी।

सन १६३८ मे यह पत्र लिथुआनिया के विरुद्ध जर्मन माँगो का समर्थन कर रहा था। अमेरिका की भी इसने म्युनिक-काड के समय उसकी उचित सलाह के लिए हँसी उड़ाई थी तथा लार्ड बाल्डविन ने जिस समय जर्मन यहूदियों और अन्य भागे हुए लोगों के पक्ष में अपनी अपील प्रकाशित की थी तब इसने उनकी भी खबर ली थी। दिसम्बर सन् १६३८ में इसने अनेक ऐसे लेख विशेषज्ञों से लिखवा कर प्रकाशित किये जिनके द्वारा इगलिस्तान के पत्रों और भाषणों की स्वतंत्रता पर ताला लगाने की सिफ़ारिश की गयी थी। एक लेख मे मेजर जेनरल सर वाइन्ढम चाइल्ड्स (Major-General Sir Wyndham Childs) ने कुछ ऐसी विधियाँ तजवीज की थीं जिनसे योरोपीय डिक्टेटरों के विरुद्ध आक्षेप करने के लिए अंग्रेजी पत्रों पर मानहानि का कानून प्रयुक्त किया जा सकता था। जन-तंत्रवाद पर तो इस पत्र का आक्रमण खुल्लमखुल्ला और सदैव बुरी तरह से होता रहा। राष्ट्रसघ (League of Nations) के सम्बध में इसने लिखा था :—

"राष्ट्रसंघ-स्थापन की कल्पना ....कुछ ऐसे 'विचारवानों के

मस्तिष्क की उपज थी जो वृटेन और अमेरिका की दुर्भाग्यमूर्तियाँ कहे जा सकते हैं।'

कामन्स सभा के अनेक अनुदारपक्षीय सदस्यो ने ऐंग्लो-जर्मन रिव्यू का पक्ष-समर्थन करने और उसकी जर्मनी के साथ समझौते वाली नीति की प्रशसा करने के लिए अपने अपने सदेश भेजे थे, जिनमे से निम्नलिखित व्यक्तियो के नाम विशेष उल्लेख योग्य हैं :—

(१) जाफ्रे हचिन्सन (Mr. Geoffrey Hutchinson),
(२) टामस मैग्ने (Mr. Thomes Magnay);
(३) सर हेनरी पेज क्राफ्ट (Sir Henry Page Croft)
(४) सर जे वार्डला-मिल्ने (Sir J. Wardlaw-Milne);
(५) मिस थेल्मा कैजलेट (Miss Thelma Cazolet),
(६) सर टामस मोर (Sir Thomas Moore),
(७) सर अर्नेस्ट बेनेट (Sir Ernest Bennet);
(८) कैप्टेन ए० एच० एम० रैम्जे (Capt. A. H. M. Ramsay),
(९) सर फ्रैंक सैंडर्सन (Sir Trank Sanderson),
(१०) सर जे० स्मेड्ली क्रुक (Sir J. Smedley Crook),

इनके अतिरिक्त लार्ड्स सभा के भी बहुत से सदस्य इनमे शामिल थे।

ऐंग्लो-जर्मन रिव्यू का मुद्रण और प्रकाशन लिक हाउस, स्ट्रैन्ड, लन्दन (W C 2) से हुआ करता है।

इस प्रकार एक ओर तो वृटिश सरकार नाजी शक्ति का मुकाबला करने के लिए प्रचड सैनिक तैयारियाँ कर रही थी और दूसरी ओर उसके कितने ही अनुदार नेता ऐसी-ऐसी सस्थाओ के सदस्य बने हुए थे तथा उनकी सहायता करते थे, जो इंगलिस्तान मे नाजीवाद का प्रचार करने के लिए सब प्रकार के साधन प्रयुक्त कर रही थीं।

ऐंग्लो जर्मन फ़ेलोशिप, जैसा कि पहिले लिख आये है, इस प्रकार की सस्थाओ मे सब से महत्वपूर्ण सस्था है। इसकी सभाओ द्वारा बड़े-बडे नाज़ी नेता जर्मनी की वाह्य और आतरिक नीति की खूबियो का इग्लिस्तान मे प्रचार किया करते थे।* उनके लेखो और ग्रथो की भी इसी सस्था द्वारा इग्लिस्तान मे प्रसिद्ध की जाती थी। फ़ासिस्ट फ़िल्मो का भी प्रदर्शन होता था। तथा "जर्मन शिक्षा-विशारदो" का व्याख्यान भी अग्रेज़ अध्यापको के लिए कराया जाता था। न्यूरंम्-वर्ग के नाजी कॉग्रेस मे इस सस्था के तमाम सदस्यो को निमात्रत किया जाता था।

हाउस आफ कामन्स के अनुदार पक्षीय सदस्यो मे से तीन व्यक्ति इस सस्था की कार्य-कारिणी काउन्सिल के मेम्बर और लगभग २५ व्यक्ति इसके साधारण मेम्बर है। हाउस आफ लार्डस के सदस्यो मे तो इन मेम्बरो की सख्या और भी अधिक है। इनके अतिरिक्त बहुत से अन्य नवाबी घरानो के आदमी भी इस सस्था के मेम्बर है। लार्ड हलीफक्स† भी इस सस्था मे अतिथि रूप से रह चुके है।

उपरोक्त सदस्यों मे से अधिकाश बड़े-बड़े व्यवसायपतियो, ताल्लु-केदारो, जमीदारो एव बृटिश नवाबो के ही नाम है। इससे केवल उक्त सस्था को शक्ति की विशालता ही नही प्रकट होती, बल्कि यह भी विदित होता है कि बृटिश समाज का कौन सा वर्ग ऐसा है जो नाज़ी पक्ष का मित्र है और जिसके लिए उक्त सस्था एक सघटन-क्षेत्र तैयार कर रही है।

---

*नोट - अब जर्मनी के साथ युद्ध छिड जाने के कारण यह प्रचार-कार्य स्वभावत. वद है।

† यह लार्ड हलीफक्स वही है जो भारतवर्ष मे लार्ड अर्विन के नाम से पहिले वाईसराय रह चुके है। —ह० प्र० गो०

नाजी पक्ष का खुल्लमखुल्ला समर्थन करने वाले केवल मुट्ठी भर ही अंग्रेज हैं, किंतु म्यूनिक की समझौते वाली सरकारी नीति ने यह सिद्ध कर दिया है कि इन्ही मुट्ठीभर लोगों का अंग्रेजी हुकूमत पर कितना जबर्दस्त प्रभाव है। अधिकाश अनुदार-पक्षीय पार्लिमेट के सदस्यों ने भी इस सरकारी नीति का समर्थन कर के प्रकट कर दिया कि वास्तव मे वे भी इन्ही मुट्ठी भर लोगो की विचारशैली के अनुकरण करने वाले हैं। केवल २० अनुदार सदस्य ऐसे थे जो इस प्रश्न पर कामन्स सभा मे वोट लिये जाने के समय तटस्थ रहे। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी थे, जिनको फासिस्ट शत्रु की कृपादृष्टि की अपेक्षा साम्राज्य-रक्षा की ही अधिक चिता थी।

अनेक अनुदार सदस्य केवल जर्मनी के ही नही, वरन् उसके मित्रों के भी हिमायती हैं। ये मित्र इटली, जापान, और फ्राकों-शासित स्पेन हैं। इन्ही पर जर्मनी को सब से बड़ा भरोसा है। हर हिटलर का कहना है कि "वह मित्रता, जिसका उद्देश्य भावी युद्ध न हो, बिल्कुल अर्थहीन और अनुपयोगी है। अस्तु, प्रकट है कि रोम, बर्लिन और टोकियो की मित्रता युद्ध मे एक साथ रहने वाली मित्रता है। फ्राकों को भी इन्होंने अपना मित्र बना रखा है, कारण कि स्पेन की भौगोलिक स्थिति बृटेन और फ्रास के लिए मार्मिक होने कारण के इनके लिए भी महत्वपूर्ण है। अस्तु, अनुदार पक्ष के पार्लिमेंटी सदस्यों मे जर्मनी के साथ-साथ इटली, स्पेन और जापान के भी हिमायती पाये जाते हैं।

उदाहरणार्थ, वाई काउन्ट ईशर (Viscount Esher), जो कि ऐंग्लो जर्मन फेलोशिप के भी एक सदस्य हैं, चीन पर जापानी आक्रमण का समर्थन इस प्रकार करते हैं :—

"..... जापान को अपनी व्यवसायी जनता का हितरक्षण करने के लिए एक बहुत बडे व्यापार-क्षेत्र की जरूरत थी। अतएव उत्तरीय चीन के अविकास प्राप्त क्षेत्र की ओर उसकी दृष्टि जाना बिल्कुल स्वाभाविक था।"—दि टाइम्स, जुलाई १, १९३८।

इटली के हिमायतियो ने **'इटली-मित्रमंडल'** (Friend of Italy) नामक इंग्लैंड में एक अलग संस्था ही बना ली है। इस संस्था के अवैतनिक सभापति और कर्ता धर्ता सर हैरी ब्रिटेन (Sir Harry Britain) हैं, जो ऐंग्लो जर्मन फेलोशिप के भी एक सदस्य हैं। इसी फ़ेलोशिप के एक दूसरे सदस्य लार्ड माटिस्टन (Lord Mattisone) ने भी हाउस आफ लार्डस में अबीसीनिया पर इटली के आक्रमण का समर्थन इस प्रकार किया था :—

"एक ओर रक्त के प्यासे करोड़ो अत्याचारी (अर्थात् अबीसीनियन) थे, जिनकी सहायता के लिए शास्त्रास्त्र भेजने का प्रस्ताव किया जा रहा था, और दूसरी ओर वह आदरणीय और दयावान (इटैलियन) सेना थी, जो अपने एक लाख या डेढ़ लाख आदमियो की उदरपूर्ति का प्रश्न सामने रहते हुए भी यह कह रही थी कि जो लोग उसकी शरण मे आयेगे वे भी उसके भोजन मे हिस्से पायेगे। .. ...यह एक बड़ी नीच बात थी कि इन झूठे और पाशवी मनुष्यो के लिए तो हथियारों की रवानगी होने दी जाय और उन दूसरे लोगों के लिए इसकी मनाही कर दी जाय, जो एक अदरणीय कार्य मे लगे हुए थे।"—टाइम्स २६ अक्तूबर १९३५।

एक दूसरे अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य सर आर्नल्ड विल्सन भी इसी प्रकार अबीसिनिया को इटली के हाथ में पूरी तौर से छोड़ देने के लिए जोर दे रहे थे।

जर्मनी और इटली को जो सब से बड़ी चिंता इधर कुछ वर्षों से व्याकुल कर रही थी, वह वस्तुतः कुछ नये-नये और श्रेष्ठतर जहाजी अड्डो को प्राप्त करने की चिता थी, जैसा कि सैनिक विद्या सम्बंधी एक जर्मन ग्रंथ (German "Handbook of Modern Science", 1936) मे कहा भी है :—

"बडी-बडी नौसैनिक शक्ति राष्ट्रों की विदेशी नीति के स्थिर करने में जहाज़ी अड्डों की प्राप्ति का प्रश्न एक अत्यंत महत्वपूर्ण और कभी-कभी निर्णयात्मक भाग लिया करता है !"

यह प्रश्न रोम-बर्लिन गुट्ट की नीति को स्पेन मे मुख्यतः सचालित कर रहा था एक प्रसिद्ध इटैलियन जेनरल (General Amboroggio Boilotti, quoted in 'Il Mediterraned', February, 1938) का स्वय कहना है .—

"हमे स्पेनियों पर अपना प्रभाव जमा रखना ज़रूरी है, नहीं तो हम भूमध्य-सागर को कदापि मुसोलिनी के शब्दों मे 'इटली की झील' नही बना सकते। अस्तु, यही कारण है कि आज हम फ्रांको की मदद कर रहे है।"

अग्रेजो की कुछ अनुदार मडली फ्राको को किसी प्रकार का लालच देकर फुसला लेने की बात सोचती है, किंतु यह केवल उनका भ्रम ही भ्रम है। एक रोम का पत्र (Relazioni-Internazionali) अपने १२ फरवरी सन् १६३६ के अक मे इस प्रकार के विचारवालों की खिल्ली उड़ा कर लिखता है :—

"जनतंत्रवादी महाशयो! हम आनन्दपूर्वक आप को बतला देना चाहते है कि आपकी रिश्वत देने वाली इस आख़िरी कोशिश का भी बदला हम पूरी तौर से ले लेने वाले है। कारण यह कि छुरी की बेट अब हमारे ही हाथ मे है। स्पेन की यह विजय फ़ासिस्ट-विजय है, यह बात तुमको सदा ध्यान मे रखनी होगी।"

जर्मनी और इटली स्पेन मे जाकर केवल इसलिए लडे थे कि वहाँ वे अपनी स्थिति का सुदृढ़ कर सके और सैनिक एव व्यापारिक दृष्टि से कुछ लाभ उठा सके। अस्तु, जो लाभ वे वहाँ प्राप्त कर चुके हैं, उसकी रक्षा के लिए भी वे अब अवश्य ही लड़ेंगे। बृटिश सरकार को यह बात कितनी ही बार याद रखा दी गयी थी कि अगर जनतन्त्र-

वादी शक्तियाँ उस समय तक चुपचाप बैठी रहेगी जब तक कि फ्रांको स्पेन मे निश्चितरूप से विजयी न हो जाय, तो फिर उस देश से जर्मनी और इटली के पैरो को उखाड़ना एक कठिन समस्या हो जायगी। इस सम्बंध में प्रोफ़ेसर ब्रायलो (जो आक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी मे अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्रोफ़ेसर है), कैप्टेन बी० एच० लिडेल हार्ट (जो लंदन के टाइम्स पत्र के सैनिक सवाद-दाता है), तथा मिस्टर जे० एमिलिन जोन्स (जो कार्डिक चैम्बर आफ़ कामर्स के अध्यक्ष हैं) के हस्ताक्षर से जो बयान निकला था, उसमें से निम्न लिखित उद्धरण ध्यान देने योग्य है :—

"एक फासिस्ट स्पेन इटली के साथ मैत्री जोड़ कर हमारे सामुद्रिक आवागमन को असम्भव नहीं तो कष्टसभव अवश्य बना देगा। उस समय जिब्राल्टर में हमारा समुद्री अड्डा कायम न रह सकेगा और इगलिस्तान से लेकर सिकन्दरिया तक, लगभग ३००० मील की दूरी में, हमारे पास एक भी समुद्री अड्डा न रह जायगा। इसके साथ ही स्पेन के पूर्वीय तटो पर स्थित तथा बेलियारिक द्वीपों के सामुद्रिक और हवाई अड्डे हमारे लिए भूमध्य सागर से होकर आने-जाने का मार्ग खुला रखने और वहाँ अपनी शक्ति को सुरक्षित रखने के काम मे भारी अड़चन पैदा कर देगे। फ्रास के लिए भी इसी तरह अपने अफ़्रीकन उपनिवेशों के साथ आमद-रफ़्त कायम रखना भयपूर्ण बन जायगा। उत्तमाशा अतरीप (Cape of Good Hope) से घूम कर जो दूसरा रास्ता पूर्व को जाने वाला है वह भी उस समय खतरे से खाली न रहेगा, जब स्पेन के पश्चिमी तटो और कनारी द्वीपो की हवाई सेना और जलमग्न नौकाएँ अपना-अपना आक्रमण आरम्भ कर देगी। उधर फ्रास को भी अपनी तीनो ओर की स्थल-सीमाओं को बचाने की चिन्ता पड़ जायगी, कारण कि उसके तीनो ओर शत्रुओं का एक घेरा सा बन जायगा। अस्तु, सैनिक दृष्टि से स्पेन का मित्र बना रहना ही हमारे लिए वाछनीय है, उसकी

तटस्थता हमारे लिए नितात आवश्यक है ।

किंतु फ्राको, जो इस समय अपनी युद्ध सामग्री एव सैनिक सहायता के लिए पूर्णतया इटली और जर्मनी पर निर्भर है, योरोपियन युद्ध के समय अपने को, इच्छा रहते हुए भी किसी प्रकार उनसे तटस्थ न रख सकेगा ।"

इस प्रकार की जोखिम इग्लिस्तान के लिए जेनेरल फ्राको की विजय से होते हुए भी पार्लिमेट के कितने ही अनुदार-पक्षीय सदस्य स्पेनी युद्ध के समय फ्राको की प्रत्येक जीत का स्वागत किया करते थे और कहते थे कि :—

"हम तो ईश्वर से मना रहे है कि स्पेन में विजयश्री फ्रांको के ही हाथ लगे, और जितनी ही जल्दी यह विजय मिले उतना ही अच्छा है ।"

—सर आर्नल्ड विल्सन एम० पी० का कथन मैंचेस्टर गार्जियन पत्र के ११ जून सन् १९३८ के अक से उद्धृत ।

यही नही, इन अनुदार नेताओ ने फ्राको का पक्ष समर्थन करने, उसकी लोकप्रियता बढाने एव उसे सहायता देने के लिए भी इग्लैंड में तीन-तीन सस्थाएँ कायम कर रखी थी, जिनके नाम थे :—

(१) राष्ट्रीय स्पेन-मित्र-मडल (Friends of National Spain),
(२) स्पेनी बाल-स्वदेशागमन-समिति (Spanish Childrens Reparation Committee),
(३) संयुक्त ईसाई मोर्चा (The United Christian Front);

इन सस्थाओं की सचालक समितियों मे पार्लिमेट के निम्नलिखित अनुदार पक्षीय नेतागण सदस्य बने हुए थे :—

(१) कैप्टेन विक्टर कैजलेट (Captain Victor Cazalet);
(२) सर हेनरी पेज क्राफ्ट (Sir Henry Page Croft);

यहाँ तक तो बृटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन हुआ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना ज़रूरी है। 'टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए पहले-पहल सन् १६७८ ई० के करीब किया गया था। उस समय राजा और पार्लिमेंट के झगड़े में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया था उन्हीं के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे जो राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर से जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदें प्राप्त थीं। इस प्रकार प्रायः तमाम बड़े-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी धारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई देते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो लोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे **'व्हिग पार्टी'** (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार पार्लिमेंट के तमाम सदस्य 'व्हिग' और 'टोरी' दो दलों में विभक्त हो गये थे।

सन् १८३२ के सुधार कानून के समय इन दोनों दलों का नाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'** (Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और ह्विग पार्टी का नाम **'लिबरल'** (या **'उदार'**) **पार्टी** पड़ गया। आगे चल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर से किया गया। उस समय प्रधान मंत्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल बिल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल से अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव अब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'** रक्खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही एक तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

(३) मिस्टर ए० टी० लेनक्स-बायड (Mr. A. T. Lennox Boyd);

(४) मि० आर० ग्राट फेरिस (Mr. R. Grant Ferris);

(५) सर नायर्न स्टुअर्ट सैन्डमैन (Sir Nairne Stewert Sandman);

(६) मि० अल्फ्रेड डेनविल (Mr. Alfred Denville);

(७) कैप्टे० ए० एच० एम० रैम्जे (Capt. A. H. M. Ramsay),

(८) वाईकाउन्ट वुल्मर (Viscount Walmer);

(९) लेफ़्ट० कर्नल सी०, आई० कर्र (Lt.-Col. C. I. Kerr);

(१०) कैप्टेन जे० एच० एफ० मैक् ईवेन (Capt. J. H. F. McEven);

(११) वाईकाउन्ट कैसलरीग (Viscount Castlereagh);

कितु जेनरेल फ्राको के प्रति पार्लिमेंटी सदस्यों की सहानुभूति केवल इन्ही व्यक्तियो तक सीमित नही है। अनुदार दल मे इस प्रकार के लोगो की एक काफी अच्छी संख्या मौजूद है। उदाहरणार्थ हेनरी चैनन (Mr. Henry Channon) नामक एक अनुदार सदस्य का एक सभा मे कहना था—

"फ्राको का मैं स्वय ...... एक जबर्दस्त पक्षपाती हूँ और मैं चाहता हूँ कि उसी की जीत हो।"

जार्ज बाल्फोर नाम के एक दूसरे अनुदार-पक्षीय नेता ने भी कहा था—

"स्पेन के लिए फ्राको एक बड़ा भारी काम कर रहा है।"

इसी प्रकार ए० सी० क्रासली, सर अल्फ्रेड नाक्स, पैट्रिक डोनर आदि अनेक अनुदार सदस्यों के भी बयान दिये जा सकते हैं। इन सब पर जर्मन और इटैलियन लेखकों के सिंहनाद, जेनरल फ्राको और उसके अधीनस्थ सेनापतियों के भाषण, तथा स्वय इग्लैंड के विशेषज्ञों की चेतावनियाँ तक अपना कुछ असर पैदा न कर सकीं। स्वदेश और स्वराष्ट्र की हितचिंता इनकी प्रतिक्रियात्मक चित्तवृत्ति की कठोरता के सामने बिल्कुल लाचार थी।

बृटिश सरकार स्पेन के गृहयुद्ध में अपनी नितान्त तटस्थता का विज्ञापन करती फिरती थी और इधर उसके चट्टे-बट्टे इस तटस्थता को ताक पर रखकर फ्राको का पक्ष समर्थन करने मे लगे थे और उसकी जय जयकार मनाया करते थे।

प्रतिक्रियात्मक स्वार्थ ने राजनैतिक बुद्धि को बिल्कुल अधा कर दिया था, नहीं तो यह असभव था कि ये राजनैतिक नेता इटली के प्रमुख व्यक्ति जेनरल एटोर ग्रासेटी (General Ettore Grassetti) के निम्नलिखित वाक्यो को ध्यान में न लाते, जो उसने मिलन-विश्वविद्यालय के एक सैनिक भाषण मे कहा था:—

"सार्डीनिया और सिसली के पश्चिमी समुद्र तटों के साथ बेलियारिक द्वीपों की प्रणाली हमारे हाथ मे एक ऐसी शक्ति दे देती है जिससे अंग्रेजो की जिब्राल्टर-माल्टा प्रणाली बिल्कुल बेकार हो जाती है। इस प्रकार पामा दि मेजारिका (Pama de Majorirca) मे इटली का प्रभाव और मलीला (Melilla) तथा स्यूटा (Ceuta) मे जर्मनी का प्रभाव एक साथ मिलकर रोम-बर्लिन-गुट्ट की तकात को पश्चिम भूमध्य सागर तक फैला देते हैं, जिससे बृटिश प्रणाली की नस अपने मूलस्थान जिब्राल्टर मे ही कट जाती है। "

पार्लिमेंट के एक अनुदार सदस्य कैप्टेन विक्टर कैजलेट Captain Victor Cazalet M. P.) ने फ्राको को "हमारे पक्ष का वर्तमान नेता" कह कर पुकारा था। किंतु फ्राको जिस पक्ष का

प्रतिनिधि है वह वास्तव मे हिट्लर और मुसोलिनी का पक्ष है। बृटेन हिट्लर और मुसोलिनी को अपना शत्रु समझता है, किंतु ये अनुदार नेता उनके पक्ष को स्वय अपना पक्ष मानते हैं।

बृटिश सरकार की ओर से यह कभी नही कहा गया कि **"हम फ्रांको के हिमायती हैं"**। वह केवल यही कहती आयी है कि **'फ्रांको के विरुद्ध स्पेनी प्रजातंत्र को सहायता देना हमारे लिए भयजनक होगा।'** इसी प्रकार उसने यह भी कभी नही कहा कि **'हम हिट्लर के सहायक हैं।'** केवल यही कहती आयी कि **"चेकोस्लेवाकिया का पक्ष लेना हमारे लिए ख़तरे का काम है।"** किंतु बहुत से अनुदार-पक्षीय पार्लिमेंट के सदस्य इस प्रकार घुमाव-फिराव वाली बाते न कह कर बिल्कुल साफ़-साफ यह कह रहे थे कि **"हम हिट्लर, मुसोलिनी और फ्रांको के सहायक हैं"**; और फिर भी वे ऊँचे-ऊँचे सरकारी ओहदों पर बैठा दिये जाते थे तथा उपाधियो से विभूषित किये जाते थे। इस प्रकार उनके कहे हुए शब्द सरकारी दावे को बिल्कुल झूठा सिद्ध कर देते हैं और सरकारी नीयत की भी असलियत बतला देते हैं।

चेकोस्लोवाकिया बृटेन और फ्रांस का एक मित्र था, किंतु आज वही नाजी जर्मनी का एक टुकड़ा है। उसकी सेना में १,८०,००० सिपाही हर समय तैयार रहते थे और युद्ध के समय उसकी संख्या अनिवार्य सैनिक-भर्ती के द्वारा साढ़े बारह लाख तक पहुंचाई जा सकती थी। एक हजार से अधिक उसके पास लड़ाकू और बम बरसाने वाले हवाई जहाज़ भी थे और शस्त्रास्त्र के कारखाने तो उसके पास इतने जबर्दस्त थे कि इटली के कारखानों से वे तिगुने बड़े कहे जा सकते थे। म्यूनिक समझौते के पहिले ये सब बृटेन और फ्रास के लिये भली भांति काम में लाये जा सकते थे, किंतु आज वही जर्मन सेना की शक्ति को बढा रहे हैं। 'शूबर लाइन' (Schoeber Line) की क़िलेबन्दी, जिसमें ८,००००००० पौंड का व्यय किया गया था, अब जर्मनी के राज्यातर्गत है, प्रसिद्ध स्कोडा का फौजी कारख़ाना जर्मनो के हाथ मे है,

और रासायनिक वस्तुओं को तैयार करने वाला वह कारखाना भी, जो योरोप का दूसरा सब से बड़ा रासायनिक कारखाना कहा जाता है, इस समय जर्मनी के अधीन है।

इन सब हानियो की पूरी जिम्मेदारी बृटिश सरकार की 'म्यूनिक-समझौते वाली नीति' पर ही है। इसी नीति ने बृटेन को मध्य योरोप मे उसके एकमात्र मित्र चेकोस्लोवाकिया से वचित कर दिया है और इसी ने जर्मनी की सैनिक शक्ति को भी बेतरह बढा दिया है। फिर भी अनुदार दल के नेताओं ने म्यूनिक के इस समझौते को अपने पक्ष की एक भारी जीत मानी और उसका स्वागत किया तथा उसके लिये खुशिया मनाई।

रूस भी सन् १९१४ के योरोपीय महायुद्ध मे इगलैंड का एक मित्र था और पूर्वीय मोर्चे पर अपनी लगभग २० लाख सेना को जर्मनी के विरुद्ध बराबर तीन वर्ष तक लड़ाता रहा। उस समय यदि रूस इस प्रकार सहायता न देता तो इगलैंड और फ्रास न जाने किस दशा को पहुंच गये होते। किंतु फिर भी अनुदार दल वाले आज उसी के साथ सहयोग करने के विरोधी हैं। वर्तमान युद्ध की नाजुक परिस्थिति भी उन्हे इसके लिए प्रेरित नही कर पाती। कारण प्रत्यक्ष है। वे रूस की वर्तमान शासन पद्धति को नापसद करते हैं और उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अतएव वे रूस के साथ आपद्धर्म के तौर पर भी कोई सैनिक मित्रता नहीं रखना चाहते—उस रूस के साथ जो आज सन् १९१४ की अपेक्षा कई गुणा शक्तिशाली है और युद्ध की सूरत मे कायापलट पैदा कर सकता है। कोई दूसरी सरकार यदि ऐसी नाजुक स्थिति मे होती तो मित्र पैदा करने के लिए तमाम दुनिया की खाक छान डालती, किंतु अनुदार बृटिश सरकार की चित्तवृत्ति पर अनुदारता का बहुत ठोस आवरण चढा हुआ है।

इस अनुदार चित्तवृत्ति की अधता का प्रमाण अन्य बातों से भी बराबर प्रकट होता रहा है। जिस समय जर्मनी में हिटलर की सैनिक

तैयारियाँ की जा रही थी, उस समय भी अनुदार बृटिश सरकार ने उसे रोकने के लिये कोई उपाय नही किया। पिछले महायुद्ध में जनतंत्रवाद के नाम पर कैसर के साम्राज्य-स्वप्न को नष्ट करने के लिये करोड़ो आदमियो का खून बहा दिया गया था। किंतु आज हिटलर ने आधे से ज्यादा योरोप का जनतंत्रवाद अपने पैरों से कुचल डाला, और फिर भी अनुदार बृटिश सरकार के कान में जूँ तक न रेंगी। यहाँ तिक कि स्वय एक अनुदार नेता मिस्टर चर्चिल तक को कहना पड़ा कि—

"राजनैतिक क्षेत्र में हिट्लर का जिस समय आगमन हुआ था, उस समय जर्मनी मित्रो के पैरो पर लोट रहा था। अब कदाचित् वह दिन भी आने वाला है, जब योरोप का बचा-खुचा हिस्सा भी जर्मनी के पैरो पर लोटता दिखाई दे। ... ..

"पिछले महायुद्ध के बाद और विशेषकर पिछले तीन वर्षो में बृटिश और फ्रेंच सरकारो ने जो सुस्ती और जो मूर्खता दिखलाई है, उसके बिना हिट्लर की यह सफलता, या उसका किसी राजनैतिक शक्ति के रूप में जीवित रहना ही, कदापि सभव न हो सकता। हिट्लर के पहिले जो कई एक दूसरी सरकारें जर्मनी में पार्लिमेंट की पद्धति पर स्थापित की गयी थी उनमे से एक के साथ भी समझौता करने का कोई सच्चा प्रयत्न नही किया गया।"

—नवम्बर १९३५

जर्मनी की जनतत्रवादी सरकारो से अंग्रेज अनुदार शासकों ने कुछभी सहयोग या समझौता करने की कोशिश न की। प्रत्युत् हिट्लर की उदीयमान शक्ति की सराहना कर कर के उसे बराबर प्रोत्साहित किया जाता रहा। राजनेतिक मामलो में अनुदार अंग्रेज शासकों की विचारशैली हिट्लर की विचारशैली से बहुत कुछ मिलती-जुलती सी है, और इसी लिए उनमें एक पारस्परिक सहानुभूति का भाव पाया जाता है। अस्तु, इसी सहानुभूति के कारण इन अंग्रेज शासको की

विदेशी नीति प्रायः ऐसी बनी रही, कि हिट्लर के लिए जर्मनी का सैनिक सगठन करना बिल्कुल आसान हो गया।

इसी तरह स्पेन मे फ्राको की जीत भी इन्ही अनुदारो की सहानूभूति के कारण इटली और जर्मनी ने सभव कर दी, जिससे अब स्पेन मे हिट्लर और मुसोलिनी का पूरी तौर से पैर जम गया और अंग्रेजी जहाजों के आने-जाने का रास्ता भी खतरे मे पड़ गया। इस प्रकार जैसे-जैसे जर्मनी की और उसके मित्रों की शक्ति बढ़ती गयी, वैसे ही वैसे महायुद्ध का भय भी बराबर बढता गया।

यदि आज से चार या पॉच वर्ष पहिले बृटेन फ्रास और रूस को साथ लेकर नाजी जर्मनी की बढती हुई शक्ति का मुकाबला करने के लिए उठ खड़ा होता, तो यह शक्ति कदापि इस वृद्धि को न पहुॅच सकती और न आज लड़ाई की जरूरत ही पड़ती। इटली और जापान जर्मनी की वर्तमान सैनिक शक्ति को देख कर ही उसके मित्र बने हुए हैं। यदि जिस समय जापान ने मॅचूरिया पर चढ़ाई की थी और इटली ने अबीसिनिया मे कदम बढाया था, उसी समय उनका मुकाबला किया गया होता, तो आज इटली, जर्मनी और जापान की सयुक्त सैनिक शक्ति का मुकाबला करने की जरूरत न पड़ती। किंतु जापान और इटली के प्रति अधिकारियो मे सहानुभूति का भाव मौजूद रहने के कारण उस समय उनके विरुद्ध कोई भी कार्रवाई नही की गयी, यद्यपि पृथ्वी के अधिकाश राष्ट्र उस समय बृटेन का साथ देने को तैयार भी थे।

यह बात नहीं है कि बृटिश सरकार ने इन विपत्तियों का मुकाबला करने मे देर इसलिए लगायी कि देरी से उसको कुछ लाभ था। वास्तव में बृटिश सरकार की इस चुप्पी से तो हर एक ऐसे राष्ट्र के साथ, जिसे जर्मनी एक-एक करके हड़पता जा रहा था, अंग्रेजो का एक-एक शक्तिशाली मित्र दुनिया के नक्शे से गायब होता जाता था, और फिर दूसरे क्षण वही मित्र जर्मनी के

सपक्षी और सहायक के रूप में दिखाई देने लगता था। बहुतों के मन में बृटिश विदेशी नीति का रुख देख कर यह धारणा भी पैदा हो गयी थी बृटिश सरकार यथासंभव मार-काट के भयकर कार्य को बचाना चाहती थी। किंतु क्या वह देश और साम्राज्य की रक्षा के लिए भी समुचित कार्यवाही करने से डर रही थी? यह सब कुछ नही है। वास्तविक बात यह है, जैसा कि पहिले वक्तव्यों और प्रमाणों द्वारा सिद्ध भी किया जा चुका है, कि बृटिश-शासन की बागडोर इस समय जिन लोगों के हाथ में हैं उनकी सहानुभूति हिट्लर, मुसोलिनी और फ्रांको के साथ में थी, और वह सहानुभूति इतनी जोरदार थी कि देश और साम्राज्य की रक्षा का प्रश्न भी उसे नहीं डिगा सकता था। तभी तो लार्ड्स सभा और कामन्स सभा मे खड़े होकर अनुदार नेता जर्मन उपनिवेशों को वापस कर देने की सिफारिश किया करते थे।

फिर भी सभी अनुदार नेता इस नीति के समर्थक न थे। कुछ ऐसे भी थे, और इन में मिस्टर विन्स्टन चर्चिल का भी एक प्रमुख नाम है, जो अपने राजनैतिक पक्षपात के कारण अपने देश और राष्ट्र के स्वार्थों का बलिदान नही करना चाहते थे। अनेक अनुदार सदस्य सरकारी नीति के कुपरिणामों को देख-देख कर केवल उलझन में पड़े हुए थे और कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में जाया करते थे।

अनुदार दल वालों में जो लोग सरकार की उपरोक्त नीति को नापसद करते थे, वे उन लोगों मे से नहीं थे और न उन संस्थाओं के सदस्य ही थे, जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है। वस्तुतः वे पुराने कट्टर साम्राज्यशाही पक्ष के लोग थे और साम्राज्य-रक्षा-सम्बन्धी कई प्रकार की संस्थाएँ भी उन्होंने बना रखी हैं, यथा—

(१) **सेना-गृह और साम्राज्य-रक्षा समिति** (The Army and Home and Empire Defence League),

जिसका नाम अब बदल कर **'नागरिक सेवा समिति'** (Citizen Service League) रख दिया गया है।

(२) नौसैनिक समिति (Navy League),

(३) उपनिवेश-समिति (Colonial League),

इन सब संस्थाओ के विचार बृटिश साम्राज्यशाही की रक्षा के विषय म तो प्राय. एकसे हैं और ये सभी उसकी आवश्यकता पर बराबर जोर भी देते रहते हैं, किंतु सैनिक दृष्टि से जो स्थान बृटेन के लिए मार्मिक कहे जा सकते हैं उनकी रक्षा के लिए इनमे अनेक प्रकार के मतभेद हैं।

इस प्रकार एक ओर तो अनुदारों की एक भारी सख्या बृटिश शासन पर अपना अधिकार जमाये है और जर्मनी तथा इटली को प्रसन्न रखने की नीति का पालन करती रही है, दूसरी ओर एक थोड़ीसी सख्या ऐसे अनुदार लोगो की है जो सरकार की विदेशी नीति के विरुद्ध हैं। किंतु दोनो ही समुदायो मे इतने प्रकार के विचार और मतभेद भरे हुए ह कि सम्पूर्ण दृश्य केवल गड़बड़ी और उलझन से पूर्ण दिखाई देता है।

सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि बृटिश सरकार की विदेशी नीति का विरोध करने वाले मुख्यतः उस वर्ग के लोगों मे से हैं, जिनका बृटिश साम्राज्य मे चारो ओर आर्थिक और व्यवसायिक स्वार्थ फैला हुआ है, या जो स्थल और सामुद्रिक सेना से सबध रखते हैं अथवा जो कुछ थोडे से स्वतत्र विचार रखने वाले राजनीतिज्ञ पुरुष हैं। इसके विपरीत सरकार की खुशामद से भरी हुई विदेशी नीति का समर्थन करने वाले वे लोग हैं जो बड़े-बडे व्यवसाय-पति और बैंकर हैं, तथा ऐसी व्यापारिक सस्थाएँ हैं जो या तो स्वय सामूहिकरूप से अथवा जिनके डायरेक्टर गण व्यक्तिगतरूप से ऐंग्लो-जर्मन फेलोशिप के सदस्य हैं। इनमें से जो व्यापारिक

स्थाएँ सामूहिक रूप से इस फेलोशिप के सदस्य हैं उनके नाम स प्रकार हैं :—

बैंक

(१) गाइनेस मेहोन ऐंड कपनी (Guinness, Mahon & Co).

(२) लैज़ार्ड बदर्स (Lazard Bros).

(३) जे० हेनरी श्रूडर ऐन्ड कपनी (J. Henry Schrodar & Co).

लोहे और इस्पात के कारबार

(१) फर्थ-वाइकर्स स्टेनलेस स्टील्स (Firth-Vickers Stainless Steels).

(२) सी० टेनेन्ट, सन्स ऐन्ड कपनी, लिमेटेड (C. Tetnnant, Sons Co., Ltd.)

अन्य बड़े फ़र्म

(१) यूनिलिवर्स (Unilevers, Capital £ 67,000,000).

(२) टामस कुक ऐंड सन (Thos. Cook & Son, Capital £ 1500,000),

(३) कम्बाइन्ड इजिप्शन मिल्स (Combined Egyptian Mills, Capital £ 2,500,000)

(४) डनलप रबर क० (Dunlop Rubber Co., Capital over £ 12,500,000).

(५) मेक् डाउगल्स Mc. Dougalls, Capital of holding Company nearly £ 2,500,000).

इनके अतिरिक्त कितने ही अन्य छोटे फर्म भी, जिनमे लाखों पाउन्ड की पूँजी लगी हुई है, इसी फ़ेलोशिप के सदस्य हैं।

जिन व्यापारिक सस्थाओं के डायरेक्टर अथवा प्रतिनिधि लोग व्यक्तिगत रूप से फ़ेलोशिप के सदस्य हैं, उनकी सूची नीचे दी जाती है :—

(क) बैंक

(१) बैंक आफ इग्लैंड।
(२) मिड लैंड बैंक।
(३) लायड्स बैंक।
(४) बार्क्लेज बैंक
(५) नैशनल बैंक आफ स्काटलैंड
(६) जे० हेनरी श्रूडर ऐंड क० (J. Henry Schrider & Co.).
(७) लैजार्ड ब्रदर्स। (Lazard Bros).
(८) नैशनल बैंक आफ आस्ट्रेलिया।
(९) बृटिश लिनेन बैंक।
(१०) रैली ब्रदर्स।
(११) काउट्स ऐन्ड कं० (Coutts & Co).
(१२) नैशनल बैंक आफ ईजिप्ट।

(ख) वीमा कंपनी

(१) कमर्शियल यूनियन ऐश्योरेन्स।
(२) लंदन एश्योरेन्स।
(३) ईगल स्टार (Eagle Star)।
(४) फेनिक्स एश्योरेन्स।
(५) लन्दन ऐन्ड लैंकशायर।

अब सयुक्त रूप से राजसिंहासन पर बैठाये गये। इस प्रकार राजा पर पार्लिमेंट की यह दूसरी जबर्दस्त जीत हुई। इसके बाद फिर किसी राजा को आज तक पार्लिमेंट के अधिकार और शक्ति पर शका या प्रश्न करने का साहस नही हुआ। देश मे अब निर्विवाद रूप से पार्लिमेंट का ही एकाधिकार स्थापित हो गया।

किन्तु यह पार्लिमेंट उन दिनों जैसी थी और जिस ढग से इसका चुनाव किया जाता था उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसे प्रजा की प्रतिनिधि-सस्था के नाम से नहीं पुकार सकता। वास्तव मे वह प्रजा के एक बहुत ही सूक्ष्म भाग का प्रतिनिधित्व करती थी। अभी सौ वर्ष से कुछ ही ज्यादा हुए जब इग्लैण्ड मे 'जेबी निर्वाचन क्षेत्रों' (Pocket-boroughs) की कमी न थी। ये निर्वाचन-क्षेत्र ऐसे होते थे, जिनमे एक या दो से ज्यादा आदमी को वोट देने का अधिकार नहीं रहता था। कहते हैं सन् १७९३ ई० मे हाउस आफ़ कामन्स के ३०६ मेम्बरों को केवल १६० आदमियों ने चुना था। इस प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रजावर्ग के अधिकाश आदमियों को पार्लिमेंट के निर्वाचन मे उस समय कुछ भी अधिकार न था। लार्ड्स सभा में तो लार्ड उपाधिधारी बडे-बडे सामत-जमीदार और पादरी लोग थे ही, किन्तु कामन्स सभा में भी अधिकतर सदस्य प्रभावशाली जमींदार और रईस ही लोग हुआ करते थे। गरीबों और मध्यश्रेणी वालों का उसमे कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिखाई देता था। चुनाव में बेईमानी और रिश्वतबाजी का बाजार भी उस समय खूब गर्म था। अन्त में प्रजा के बहुत दिनों तक आन्दोलन करते रहने पर सन् १८३२ ई० मे एक सुधार कानून पास किया गया, जिसने निर्वाचकों की संख्या में वृद्ध की गयी। आगे चल कर समय-समय पर यह संख्या और अधिक बढ़ायी गई और अब इस समय वहाँ पार्लिमेंट के चुनाव में वोट देने का अधिकार प्रत्येक बालिग स्त्री और पुरुष को प्राप्त हो गया है।

(६) गार्जियन एश्योरेन्स।
(७) नैशनल एम्प्लायर्स म्यूचुअल जेनरल एश्योरेन्स इत्यादि, इत्यादि।

(ग) अन्य फ़र्म

(१) लीवर ब्रदर्स ऐन्ड यूनि लीवर (पूँजी ६,७०,००,००० पौंड)।
(२) इम्पीरियल केमिकल इन्डस्ट्रीज।
(३) लदन मिडलैंड ऐन्ड स्काटिश रेलवे।
(४) लदन ऐन्ड नार्थ ईस्टर्न रेलवे।
(५) शेल ट्रान्सपोर्ट ऐन्ड ट्रेडिग कपनी।
(६) ऐंग्लो ईरानियन आयल क०।
(७) टेट ऐन्ड लाइल।
(८) हडसन्स वे ऐन्ड क० (Hudson's Bay Co.)।
(९) डिस्टिलर्स क० (Distillers Co.)।
(१०) गैस, लाइड ऐन्ड कोक क०।
(११) दि डनलप रबर क०।
(१२) पी० ऐन्ड ओ० स्टीम नेविगेशन कं०।
(१३) बी० एस० ए०।
(१४) इम्पीरियल एयरवेज।
(१५) टेलीग्राफ कन्स्ट्रक्शन ऐन्ड मेन्टिनेंस।
(१६) टामस फ़र्म ऐन्ड जानब्राउन।
(१७) विलियम वियर्ड मोर।
(१८) कन्सेट स्पैनिश ओर कं०।

इन कपनियों के डायरेक्टर व्यक्तिगत रूप से फ़ेलोशिप के सदस्य हैं, अतएव इनके दूसरे डायरेक्टरों को जो सदस्य नहीं हैं अथवा स्वयं कंपनी को उसमे सम्मिलित नही समझना चाहिए। हाँ इनमें से कुछ कंपनियाँ ऐसी अवश्य हैं जो स्वयं सामूहिक रूप से भी फ़ेलोशिप की सदस्य है।

यद्यपि बृटिश सरकार की 'खुशामद भरी' विदेशी नीति का समर्थन करने वालों की ऐसी जबर्दस्त पल्टन मौजूद थी, किंतु फिर भी उसके विरोधियों की सख्या बराबर बढ़ती ही जा रही थी। बहुत से बडे-बडे व्यवसायपति, जिनका कारबार साम्राज्य मे चारों ओर फैला हुआ है, इस दुर्बल नीति का विरोध करने लगे। किंतु फिर भी इनका विरोध अधिकाश मे कुछ खास-खास प्रश्नों पर ही हुआ करता था। जर्मनी को उपनिवेश लौटा देने के विरोधी सख्या मे बहुत ज्यादा थे। किंतु फिर भी साम्राज्य की रक्षा के लिए रूस की सोवियट सरकार से मैत्री स्थापित करने या इसी प्रकार के अन्य आवश्यक उपायो का अवलम्ब लेने के पक्ष मे एक भी अनुदार सदस्य अथवा व्यापारी फर्म देखने मे नही आता था।

इस प्रकार हिट्लर और मुसोलिनी को बृटिश पार्लिमेंट के अदर केवल अपने सहायको का ही भरोसा न था। विरोधियों के पारस्परिक मतभेद और फूट का भी उन्हे पूरा-पूरा लाभ मिलता था। स्पेन मे हिट्लर और मुसोलिनी को जो सफलता प्राप्त हुई वह वहाँ के उन दक्षिणपन्थी राजनैतिक दलों की सहायता से हुई, जो उन्हीं के से सिद्धातों को मानने वाले थे। चेकोस्लोवेकिया मे भी हिट्लर को दक्षिण-मार्गी सूडेटन-जर्मन और चेक लोगों की सहायता से ही सफलता मिली। अब बृटिश जनतत्रवाद और साम्राज्य-रक्षा के प्रश्न को जो आघात पहुँचा है वह भी इन्हीं दक्षिण-पन्थी अनुदार अग्रेजों की नीति का फल है। जिन देशों को हिट्लर जीतना चाहता है, उन्हीं के राजनीतिज्ञो मे वह पहले अपनी मित्र-सख्या बढ़ा लिया करता है।

फासिस्टवाद या तानाशाही का पक्षपात ही अनुदार दल के अग्रेजों को बृटिश सरकार की गृहनीति और विदेशी नीति का समर्थन करने के लिए प्रेरित करता रहा है। किंतु फासिस्टवाद के प्रति यह सहानुभूति उनके मन में जनतत्रवाद के भय के कारण ही उत्पन्न

हुई है। अनुदार-दल-वालों को सदा यह भय लगा रहता है कि कहीं जनतन्त्रवाद का सिद्धांत उनके धन, अधिकार और राजनैतिक शक्ति को छीनने के लिए न प्रयुक्त किया जाय और उनको यह भी विश्वास हो गया है कि योरोप के किसी भी देश में एक शक्ति-शाली प्रजातन्त्र-शासन की स्थापना उनके अधिकारो और उनकी शक्तियों को कमज़ोर बना देगी। योरोप की तानाशाही को जो सहायता वे पहुँचाया करते है वह वास्तव मे वहाँ के धनी और सम्पत्तिशाली समूह की ही सहायता है। वे जानते हैं कि यदि योरोप में तानाशाही को सफलता न प्राप्त होगी तो इंग्लिस्तान के भी जमीदारों नवाबों और पूँजी-पतियों की खैर नहीं है। अस्तु, योरोपीय तानाशाही के प्रति उनकी खुशामदाना नीति वास्तव में आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रेरणा से ही उद्भूत हुई है।

अपने राजनैतिक दल की शक्ति को सुरक्षित रखने के लिए इन अनुदार अंग्रेजो ने. अपने देश की और समस्त बृटिश साम्राज्य की रक्षा को जोखिम में डाल दिया है। वे हिट्लर और मुसोलिनी की शक्ति को कुचलना नहीं चाहते थे, क्योकि उन्हे डर था कि इनकी तानाशाही के स्थान पर कोई प्रजातंत्रात्मक शक्ति न आ बैठे। वे बृटिश साम्राज्य को खतरे मे डाल देना उतना बुरा नही समझते थे, जितना योरोप मे किसी जनतन्त्रात्मक शक्ति की सहायता करना बुरा समझते थे।

कुछ समय तक तो इन अनुदार अग्रेज़ो को यह विश्वास था कि हिट्लर अपने साम्राज्य-विस्तार के लिए पश्चिम की ओर न बढ़ कर पूर्व की ओर (अर्थात रूस की ओर) बढ़ेगा। प्रमाणस्वरूप २० जुलाई सन् १९३६ के न्यूज क्रानिकल नामक पत्र से लार्ड माउन्ट टेम्पल (Lord Maunt Temple) का निम्न-लिखित कथन उद्धृत किया जा सकता है, जो उन्होने।एंग्लो-जर्मन फ़ेलोशिप की एक दावत के समय कहा था :—

"यदि आगे कोई युद्ध छिड़ेगा तो—मुझे वह नही कहना चाहिए जो मैं कहने जा रहा था—आशा है कि युद्ध के साझीदार बदल दिये जायँगे।"

इसी प्रकार सर आर्नल्ड विल्सन ने भी तारीख ११ जून सन् १६३८ के मैंचेस्टर गार्जियन नामक पत्र मे कहा था कि :—

"एकता की आवश्यकता।सब से अधिक है और आज ससार को भय वास्तव मे जर्मनी या इटली से नही है, ... बल्कि रूस से है।"

कहना न होगा कि आज ये सारे स्वप्न झूठे प्रमाणित हो चुके हैं। पूर्व की ओर अर्थात् रूस के विरुद्ध आगे बढ़ने मे जर्मनी के लिए क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं इसे भी हिट्लर स्वय बतला चुका है :—

"(१) रूस मे अठारह करोड़ आदमियों पर अधिकार करने का सवाल पैदा होता है।

(२) रूस भौगोलिक रूप मे भी आक्रमण से सुरक्षित है।

(३) सैनिक घेरे (blockade) से भी रूस का गला नहीं घोंटा जा सकता।

(४) इसके व्यवसाय-क्षेत्र हवाई आक्रमण से बरी हैं, कारण कि अधिकाश मुख्य-मुख्य व्यवसाय-क्षेत्र।सीमा प्रात से ४००० से लेकर ६००० किलोमीटर तक की दूरी पर स्थित हैं।

"रूस के हाथ मे खूब सघटित व्यापार है और उसकी स्थल-सेना टैंक-सेना तथा हवाई सेना भी पृथ्वी भर मे सब से अधिक शक्तिशाली है। ये बाते ऐसी हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।"—Quoted in "Ourselves and Germany" 1938 by the Marqess of Londonderry, Penguin Edition P. 88

इस प्रकार जर्मनी के लिए रूस के विरुद्ध पूर्व की ओर बढ़ने की संभावना किसी समय भी अधिक न थी। पश्चिम में उसके लिए विशेष सुविधाएँ थीं, कारण कि वहाँ न केवल उसे इटली और फ्रांको-शासित स्पेन से तथा इटली और स्पेन के उपनिवेशो से ही सहायता मिलने की आशा थी, बल्कि पश्चिमी राष्ट्रो के उन राजनैतिक दलो का भी उसे बहुत बड़ा भरोसा था, जो हिट्लर से सहानुभूति रखते थे और देश को उसके हाथ में एक प्रकार से सौपने के लिए तैयार थे।

जनतंत्रवादी देशों पर संकट पड़ने का मुख्य कारण उनकी आतरिक अनेकता और शत्रुदल की एकता ही थी। यदि बृटिश सरकार फासिस्टवाद के अभ्युदय से भयभीत तमाम छोटे-बड़े जनतंत्रवादी देशो को एकत्र कर के उन्हे मैत्री द्वारा भली-भाँति सघटित कर लेता और फ्रास के साथ-साथ रूस को भी अपना दोस्त बना लेता, जिसकी श्रेष्ठतर शक्ति का स्वयं हिट्लर भी कायल था, यदि चीन को वह अन्न और शस्त्र से सहायता पहुँचा कर जापान की शक्ति को कुठित, कर देता, और फ्रास तथा रूसी सरकार की मदद से योरोप के उन छोटे-छोटे राष्ट्रों को भी अपने साथ मिला लेता, जो नाजी जर्मनी के अधिकार में उस समय तक नही आये थे, तो उसकी जल, थल और आकाश में ऐसी जबर्दस्त शक्ति स्थापित हो गयी होती, कि उसके मुकाबले मे हिट्लर को युद्ध छेड़ने का साहस कदापि न हुआ होता। साथ ही इटली और जर्मनी में भी फासिस्ट और नाजी दल की शक्ति, जो अपनी बढ़ती हुई सफलता के कारण बराबर जोर पकड़ती जा रही है, उस समय ढीली और कमजोर पड़ जाती।

—:o:—

नवां अध्याय

सम्पत्ति और स्वदेश

पिछले अध्यायों से यह विदित हो गया होगा कि बृटिश पार्लिमेंट के अनुदार दल मे किस प्रकार के लोग भरे हैं। उनका जन्म, उनका वश, उनकी शिक्षा, उनकी जमीन-जायदाद, उनकी व्यवसायिक सम्पत्ति, उनके पेशे और रोजगार सबों की जॉच करने से बस यही पता चलता है कि यह वर्ग बृटिश द्वीप की शासक जाति का प्रतिनिधि है।

अनुदार पक्ष की सरकारी नीति वास्तव मे अनुदार राजनैतिक नेताओं के सामूहिक हितों और विचारों का ही परिणाम है। उनके विचारों के परस्पर सघर्षण और कतर-व्यौत से जो सरकारी नीति स्थिर की जाती है, उसका मुख्य आधार इस वर्ग का सामूहिक स्वार्थ ही रहा करता है। अतएव अनुदार राजनैतिज्ञों का अध्ययन करने के लिए उनके इन्हीं सामूहिक स्वार्थों का अध्ययन सब से महत्वपूर्ण है। हो सकता है कि इनमे कुछ इने-गिने लोग अपवाद स्वरूप भी पडे हों अथवा एक या दो व्यक्ति अपने सिद्धात के ऐसे पक्के हों कि अपने निजी स्वार्थों की परवाह न करके केवल सही रास्ते पर ही चलना चाहते हों, किंतु ऐसों का उस दल मे बहुत ही अल्पमत रहता है इस कारण उनकी वहाँ पूॅछ नहीं हुआ करती।

अनुदार दलवालों की अपार धन-सम्पति, उनमे व्यापारिक कमाई की अपरिमित लालसा बृटेन और बृटिश साम्राज्य मे फैला हुआ उनका जमीन और जायदाद मे भारी स्वार्थ तथा वश परम्परागत रूढ़ियों और अधिकारों पर उनकी नितात निर्भरता आदि कुछ ऐसी

बाते हैं जो उनमे सर्वत्र सामान्य रूप से पायी जाती है, और जो पग-पग पर सरकारी नीति को भी निश्चित करने में अपना जबर्दस्त प्रभाव रखती है। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि किसी भी राजनैतिक दल के लिए, जिसके प्रतिनिधि समाज के किसी विशिष्ट वर्ग से चुने गये हो, यह एक बिल्कुल स्वाभाविक बात है कि वह अपनी रीति-नीति को सदा उसी वर्ग की इच्छाओं के अनुकूल बनाये रहे। यह सच है कि अंग्रेजी शासन-विधान मे इसको उक्त रीति-नीति को अंग्रेजी जनता की इच्छाओ से बहुत कुछ नरम हो जाना पड़ता है। परतु फिर भी अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं पर अनुदार-पक्ष का व्यापक प्रभुत्व होने तथा प्रचार सम्बधी अन्य कितने ही साधन उसके हाथों मे रहने के कारण वह अंग्रेजी जनता के विचारो को भी अपने अनुकूल ही मोड़ लिया करता है।

अनुदार नेताओ का समान स्वार्थ उन्हे परस्पर ऐक्य मे बाँध रखता है। इधर अनेक वर्षों से अनुदारो ने प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयो पर पार्लिमेंट के भीतर और बाहर अपनी अद्भुत् एकता प्रदर्शित की है। इसी ऐक्य से उनके समान स्वार्थों की जबर्दस्त शक्ति का पता लगता है। अब हाल मे इस दल के अदर जो कुछ थोडे-बहुत मतभेद दिखाई देने लगे हैं वह भी वास्तव में कुछ भयकर परिस्थितियों के दबाव से ही पैदा हुए हैं। कम से कम चेकोस्लोवेकिया पर जर्मनों का अधिकार होने के समय तक तो प्रायः सभी अनुदार-पक्षीय जन अपने नेताओं के पक्षपोषण मे बिल्कुल एक बने हुए थे।

पिछले अध्याय मे हम देख आये हैं कि अंग्रेजी अनुदार-दल की विदेशी नीति प्रायः वैसी ही रही है, जैसी कि एक शक्ति-शाली धनिको के समूह से स्वभावतः आशा की जा सकती थी। जेनरल फ्राको, मुसोलिनी, हिट्लर एव जापान के मिकाडों तक का समर्थन वे केवल इसलिए करते रहे कि वे उन्हे अन्य-देशीय धनिक वर्ग का सरक्षक समझा करते थे। उनका विश्वास था कि पृथ्वी के किसी भी

भाग मे डिक्टेटरों की पराजय अथवा जनतन्त्रवाद की विजय अंग्रेजी अनुदार दल के हक़ मे अच्छी न होगी और उनकी शक्ति को इग्लिस्तान मे तथा साम्राज्य के अन्दर जरूर कमजोर बना देगी। अस्तु, वे इन डिक्टेटरों की भरपूर सहायता करने मे लगे हुए थे।

जेनरल फ्राको, मुसोलिनी और हिट्लर की कार्यशैली अंग्रेजी अनुदारो की कार्यशैली से बिल्कुल भिन्न है। फिर भी बहुत से अनुदार दल वाले इस कार्यशैली की सराहना किया करते हैं। इससे जनता के पक्ष वालों को सचेत हो जाना चाहिए और इन अनुदारों के हाथ में इतनी शक्ति न देनी चाहिए कि वे भी उक्त डिक्टेटरो की नकल करने लग जॉय। अभी से जब कभी अनुदारों के मार्ग मे अड़चने आती हैं तो वे तानाशाही तरीकों को ही काम में लाने की सलाह दिया करते हैं। यद्यपि यह सच है कि इगिलिस्तान मे यकायक फासिस्ट राज्य का स्थापित होना जल्दी सभव नहीं, फिर भी ऐंग्लो जर्मन फेलोशिप जैसी सस्थाओं का वहाॅ स्थापित होना ही इस बात का परिचायक हैं कि बहुत से अनुदार दल वाले इग्लिस्तान मे भी फासिस्ट शासन क़ायम करने की चिन्ता मे लगे हुये हैं।

अवश्य ही ऐसे लोगों की संख्या बृटिश जनता मे केवल मुट्टी भर है। यदि पार्लिमेंट में ये लोग अपने प्रतिनिधियों के बहुमत से किसी प्रकार का फासिस्ट राज्य क़ायम करने की चेष्टा भी करें, तो किस शक्ति के आधार पर करेगे? यदि शासन की बागडोर अनुदार दल के हाथ मे हुई तो सरकारी सेना और पुलीस से ये अवश्य सहायता ले सकते हैं। किन्तु फासिस्ट राज्य योरोप मे केवल सेना और पुलिस के बल पर क़ायम नही है। कितने ही अन्य प्रकार के ऐसे विश्वासनीय और प्रभावशाली राजनैतिक साधनो का भी उसे पूरा भरोसा है, जो बृटिश अनुदारदल को अभी प्राप्त नहीं हैं।

इटली और जर्मनी मे फासिस्ट राज्य की स्थापना वहाँ के किसी प्राचीन राजनैतिक दल द्वारा नहीं की गयी थी। उदाहरणार्थ नाजी दल को ही देखिए। यह एक बिल्कुल ही नई पार्टी है, और इसने पहिले किसी समय भी शासन का कार्य भार नहीं सम्भाला। जर्मनी की जनता को अपने राज्य-शासन के प्रति अनेक प्रकार की शिकायते थीं। इसी समय एक नये-नये क्रांतिकारी, उत्साह से शराबोर राजनैतिक दल के रूप में नाजी पार्टी का उदय हुआ था, जिसने तमाम पुराने-धुराने क्षुद्र राजनीतिज्ञों को नीचे ढकेल कर, जर्मन जनता की तमाम शिकायतों को दूर करने की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। किन्तु इंग्लिस्तान में अनुदार दल न तो कोई नया दल है और न क्रांतिकारी होने अथवा नये विचार रखने का ही दावा कर सकता है। जो कुछ पुराने-धुराने राजनीतिज्ञ भी अंग्रेजी शासन की खराबियों के जिम्मेदार है, वे वस्तुतः इसी वर्ग के आदमी हैं। अस्तु, बृटिश जनता के कष्टो को दूर करने के लिए यह अपनी कार्यशैली के प्रति उनके मन मे कोई विश्वास पैदा कर सके ऐसी सम्भावना नही जान पड़ती।

शक्ति प्राप्त करने के पूर्व हिट्लर ने एक नवीन उत्साह से पूर्ण जबर्दस्त जन समूह को अपने पक्ष मे कर लिया था। सन् १६३२ के अन्त तक नाजी पार्टी में लगभग दस लाख सदस्य बन चुके थे। सन् १६३२ मे नाजी दल ने बर्लिन में जो समारोह किया था, उसमें भी कम से कम २,५०,००० सदस्य एकत्र हुए थे। अपने लाखों आदमियो को नाजी दल ने बिल्कुल सैनिक ढंग पर शस्त्रों से सुसज्जित और सुशिक्षित भी कर रखा था।

यहाँ बृटिश अनुदार दल के पास कोई ऐसी निजी शक्ति नहीं है, जिसकी नाजी सेना से तुलना की जा सके। यद्यपि कई एक मडलियाँ अवश्य हैं, किन्तु कोई भी महत्वपूर्ण राजनैतिक फासिस्ट दल अभी तक इंग्लिस्तान में नहीं क़ायम हो सका है। बृटिश

फासिस्ट सघ (British Union of Fascists) भी इधर हाल मे शक्तिशाली होने के बजाय कुछ कमजोर ही पड़ गया है।

इसके अतिरिक्त जिन चालबाजियों से हिटलर ने जर्मनी के एक जबर्दस्त जन समूह को अपने पक्ष मे कर लिया था, वे भी अब पुरानी पड़ गयी हैं, और लोग अब उनसे सावधान हो गये हैं, कारण कि उन्होंने जर्मनी और इटली के लोगों पर उनका परिणाम अब काफी तौर से देख लिया है। अस्तु, बृटिश फासिस्ट सघ की शक्ति के ह्रास का कारण केवल मजदूर दल का सघटित विरोध ही नही था, बल्कि बृटिश जनता के मन की वह स्वाभाविक घृणा भी थी, फासिस्टों के योरोपीय कारनामो से उनके मन मे आप से आप पैदा हो गई थी।

अग्रेजी फासिस्टो के लिए हिट्लर की तरह कोई नवीन कार्य-क्रम भी बृटिश जनता के सामने रखना कठिन है। हिट्लर अपनी पार्टी को 'सोशलिस्ट' और 'मजदूर' पार्टी कह कर पुकारता था। किंतु इग्लेंड मे यदि इस प्रकार के किसी नाम से अब फासिस्ट नीति का परिचालन किया जाय, तो लोग उससे धोखे मे नहीं पड सकते। हिट्लर यह कह सकता था कि जर्मनो की तमाम मुसीबते वार्सेलीज की सधि के ही कारण पैदा हुई हैं, कारण कि इस से उनके राज्य का अग-भग कर दिया गया था और उनके उपनिवेश एव शस्त्रास्त्र छीन लिये गये थे। किंतु अग्रेजी फासिस्टो के लिए ऐसा कोई भी बहाना सामने नहीं दीखता।

इसके अतिरिक्त योरोप मे होने वाली आधुनिक घटनाऍ भी बृटिश जनता के हृदय को फासिस्ट मत के विरुद्ध दिन पर दिन कठोर बनाती जा रही हैं, और अब वह सभव नहीं है कि अग्रेजी जनता धोखे में आ कर किसी ऐसे आन्दोलन का समर्थन करे जो वास्तव मे फासिस्ट आन्दोलन का ही एक दूसरा रूप हो।

यहाँ तक तो बृटिश पार्लिमेंट के जन्म और विकास का वर्णन हुआ। अब कुछ थोड़ा सा परिचय टोरी-दल का भी देना जरूरी है। 'टोरी' शब्द का व्यवहार इंगलैण्ड में किसी राजनैतिक दल के लिए पहले-पहल सन् १६७८ ई० के करीब किया गया था। उस समय राजा और पार्लिमेंट के झगड़े में जिन लोगों ने राजा का साथ दिया था उन्हीं के समूह को टोरी दल का नाम मिला था। ये लोग वे थे जो राजा की दरबारदारी किया करते थे और जिन्हे राजा की ओर से जमीन, जायदाद, ऊँची-ऊँची पदवियाँ और सनदें प्राप्त थीं। इस प्रकार प्रायः तमाम बड़े-बड़े खान्दानी सामंत, सर्दार, पदवी धारी रईस और ताल्लुकेदार लोग इसी टोरी दल के सदस्य दिखाई देते थे। ये राजा के ईश्वर-दत्त अधिकारों का समर्थन करते थे और प्रायः सभी प्रकार के राजनैतिक परिवर्तनों के विरुद्ध थे। जो लोग इन विचारों को नहीं मानते थे और इनके विरोधी थे वे **'ह्विग पार्टी'** (Whig Party) के नाम से प्रसिद्ध थे। इस प्रकार पार्लिमेंट के तमाम सदस्य 'ह्विग' और 'टोरी' दो दलों में विभक्त हो गये थे।

सन् १८३२ के सुधार क़ानून के समय इन दोनों दलों का नाम बदल दिया गया। टोरी दल अपने को **'कन्ज़र्वेटिव पार्टी'** (Conservative Party) के नाम से पुकारने लगा और ह्विग पार्टी का नाम **'लिबरल' (या 'उदार') पार्टी** पड़ गया। आगे चल कर सन् १८८६ ई० में कन्जर्वेटिव पार्टी, का नामकरण फिर से किया गया। उस समय प्रधान मन्त्री मिस्टर ग्लैड्स्टन के होमरूल बिल का विरोध करने के लिए कुछ उदार दल वाले अपने दल से अलग होकर कन्जर्वेटिव दल वालो के साथ जा मिले थे। अतएव अब उस दल का नाम कन्जर्वेटिव दल के बजाय **'यूनियनिस्ट दल'** रक्खा गया। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते ही एक तीसरा दल राजनैतिक क्षेत्र में उतरा। इसका नाम **'लेबर पार्टी'**

इस प्रकार इंग्लिस्तान में फ़ासिस्टवाद जारी करने के लिए अनेक कठिनाइयाँ है। सभव है कि लोगो को फ़ासिस्टवाद के लिए तैयार करने का उपाय तो धीरे धीरे काम में लाया जा सके, किंतु उसका वहाँ जारी करना अभी खतरे से खाली नही। हिट्लर ने केवल दो ही महीने में जर्मनी की तमाम जनतन्त्रवादी संस्थाओ का मूलोच्छेद कर डाला था। इस दो महीने के भीतर उसने न केवल तमाम राजनैतिक दलो को ही नष्ट कर दिया था, बल्कि विद्वानों की तमाम सभाओ सामाजिक क्लबों, खेल-कूद की सस्थाओ, परोपकारी संस्थाओ, तथा तमाम दैनिक, साप्ताहिक एव मासिक पत्र-पत्रिकाओ के कर्मचारियो तक को निकाल कर उनके स्थान पर ऐसे आदमी नियुक्त किये थे, जिन्होने नाजी सिद्धातों के अनुसार ही कार्य करने की शपथ ले ली थी। एकमात्र चर्च को ही कुछ समय के लिए अछूता छोड़ दिया था, जिससे केवल वही एक ऐसी सस्था बच गयी थी, जो अपने कर्मचारियो को स्वय चुनकर नियुक्त कर सकती थी। किंतु आगे चल कर यहाँ भी जनतत्रवाद का बचा खुचा अश रहने देना नाजियो को भयजनक जान पड़ने लगा। अतएव प्रोटेस्टेन्ट चर्च का अब यह अधिकार छीन लिया गया है। केवल कैथोलिक चर्च बच रहा है, किंतु वह भी बहुत तग हालत मे दिखाई देता है।

अंग्रेज शासक-समुदाय यद्यपि विदेशों में अपने फासिस्ट दोस्त को प्रोत्साहित करने मे काफ़ी सफल हुआ है, किंतु इंग्लिस्तान में उसे फ़ासिज़्म की भूमि तक तैयार करने में कोई विशेष सफलता नही मिली।

अंग्रेज फासिस्टो के मार्ग मे और भी बहुतेरी कठिनाइयाँ हैं। अंग्रेजी हुकूमत का सम्बध केवल बृटिश द्वीप के ही ४,५०,००००० आदमियो से नही है। भारतवर्ष तथा उपनिवेशी साम्राज्य के भी ४५,००००००० व्यक्तियो को उसे सम्हालना है इसके अतिरिक्त

स्वराज्य प्राप्त उपनिवेशो के साथ भी उसे अपना सम्बध बनाये रखना है। साथ ही अनुदार अंग्रेजों को साम्राज्य के प्रायः हर एक भाग मे अपनी जमीन—जायदाद और व्यवसायों की भी रक्षा करना आवश्यक है।

वर्तमान अंग्रेजी सैनिक तैयारियों का प्रत्यक्ष उद्देश्य बृटिश सामाज्य की रक्षा करता है, यद्यपि अनुदार दल वाले और जनतन्त्रवादी लोग दोनों ही यह अच्छी तरह जानते हैं कि यही सेना और हथियार किसी दिन स्वदेश अथवा विदेश के जनतन्त्रवाद को भी कुचलने के लिए काम में लाये जा सकते हैं। किंतु साम्राज्य की भी रक्षा केवल हथियारों से ही नही की जा सकती। लाखो सिपाहियो मल्लाहों, उड़ाकुओं एव कारखाने मे काम करने वालो की भी इसके लिए बड़ी जरूरत रहा करती है। यह सच है कि बृटिश साम्राज्य में जहाँ ४५ करोड़ आदमियों की बस्ती है, सैनिकों और सिपाहियों की कमी नही पड़ सकती, किंतु फिर भी ध्यान रहे कि पिछले महायुद्ध मे भारतवर्ष की "आतरिक अवस्था" के कारण भारतीय सेना की भर्ती मे बड़ी रुकावटे पडी थीं। आज भी भारतवर्ष, पैलेस्टाइन वेस्ट-इन्डीज तथा अन्य अंग्रेजी उपनिवेशों मे अंग्रेजी हुकूमत कायम रखने के लिए सहस्रों बृटिश सैनिकों की आवश्यकता रहा करती है। इन देशों के प्रजा वर्ग में बृटिश साम्राज्य को बचाने की चिंता बहुत ही धीमी दखाई देती है। जनतत्र-शासन का इन देशों मे अभाव होने के कारण यहाँ के निवासियो के सामने कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसके हेतु वे लड़ने मे प्रोत्साहित हो और अपने प्राणों की बाजी खुशी-खुशी लगा सकें। प्रत्युत् सभावना ऐसी जान पड़ती है कि युद्ध के अवसर पर बृटिश साम्राज्य के कितने ही हिस्सों मे लोग बृटिश अनुदार शासन का जुआ अपनी गर्दन पर से उतार फेंकने के लिए यदि आवश्यकता पड़ेगी तो हथियार तक उठा लेंगे। इस अवस्था को रोकने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि इन लोगों को जन-

तन्त्रात्मक शासन की रियायतें दी जायें और युद्ध में परस्पर सहायता कर के साम्राज्य की रक्षा करने के लिए इनसे मैत्री स्थापित की जाय।

नाजीशाही से बचने के लिए जनतन्त्रवाद को ही मजबूत करने की जरूरत है। अतएव बृटिश शासक दल के सामने इस समय एक कठिन समस्या आपड़ी है। यदि वे साम्राज्य की रक्षा करना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि जनतंत्रात्मक शासन की रियायतों द्वारा साम्राज्य की प्रजा को संतुष्ट किया जाय और साथ ही अन्य जनतंत्रवादी देशों के साथ भी मैत्री-संबंध स्थापित किया जाय, तथा स्वदेश में जनतंत्रवाद पर चोट करने की आदत छोड़ दी जाय। किंतु अनुदार दल मे कितने ही ऐसे पार्लिमेंटी सदस्य हैं जो अंग्रेजी जनतंत्रवाद को कुचलने के लिए हिट्लर तक से सहायता लेने को तैयार हैं। साथ ही कुछ ऐसे भी हैं जो हिट्लर से लड़ने के लिए प्रजा का सहयोग प्राप्त करना चाहते हैं। सक्षेप में अनुदार शासकों की समस्या इस प्रकार कही जा सकती है कि वे बृटिश जनता और हिट्लर दोनो से एक साथ नहीं लड़ सकते और न इस प्रकार लड़ने से उन्हे सफलता की कोई आशा ही हो सकती है। एक के साथ लड़ने के लिए दूसरे की सहायता और सहयोग प्राप्त करना उनके लिए आवश्यक है।

इधर साम्राज्य में और इंग्लिस्तान में भी अनुदारो की नीति, सिद्धात और नीयत पर बहुत कम लोगो को विश्वास है। साम्राज्य के लोग जानते हैं कि अनुदार सरकार साम्राज्य की रक्षा केवल इसलिए करना चाहती है कि उसे अपनी सम्पत्ति, जायदाद, और अधिकारों को बचाने की फिक्र है यदि बृटेन मे आज कोई जनतंत्रवादी सरकार मौजूद होती तो साम्राज्य रक्षा के लिए उसे भारतवर्ष से तथा उपनिवेशों से विश्वासपूर्ण सहयोग और सहायता आसानी से मिल सकती। एक उन्नतिशील बृटिश सरकार साम्राज्य के हर एक हिस्से को जनतंत्रात्मक अधिकार व्यापक रूप से प्रदान कर के सम्पूर्ण प्रजा का विश्वास और सहयोग अपने हाथ मे कर सकती थी और उस अवस्था मे एक सगठित

बृटिश साम्राज्य को जर्मनी जैसे अपेक्षाकृत छोटे से देश से डरने का कोई भी कारण न रह जाता। किंतु क्या अनुदार सरकार इस प्रकार का साहस दिखाने और साम्राज्य को एकता के सूत्र मे बाँधने के लिए तैयार है ?

इंग्लिस्तान मे अनुदार नेताओं की नीयत पर बहुत से उन्हीं के बंधु-बांधव तक अविश्वास किया करते है। लोगो मे यह धारणा बहुत ज़ोरो के साथ फैली हुई है कि युद्ध सामग्री की तैयारी मे अनुदार दल वाले अपने ठेको से मुनाफा कमाने मे कोई कसर न उठा रखेगे। पिछले महायुद्ध मे जैसा देखा जा चुका है वही दशा आज भी दिखाई दे रही है, यद्यपि देश को इससे हानि उठानी पड़ती है। एक जन-तन्त्रवादी सरकार विशाल मजदूर-समुदाय का ही आश्रय ले सकती थी, जिस पर कि देश की सारी शक्ति निर्भर है। किंतु अनुदार-पक्ष किसी प्रकार का जनतंत्रवाद सेना मे घुसने देना नही सहन कर सकते, कारण कि ऐसा करने से उसके हाथ से सारी शक्ति ही निकल जाती है। फिर भी बिना ऐसा किये फासिस्टो से लड़ने योग कोई ऐसी सेना नही तैयार की जा सकती जो स्वदेश रक्षा के हित मरना अपना धर्म समझे।

सक्षेप मे तात्पर्य यह है कि शांति स्थापित रखने के लिए एक शक्तिशाली बृटेन की आवश्यकता है। ।किंतु जब तक अनुदार दल की पराजय न हो और वह पदच्युत न कर दिया जाय तब तक बृटेन शक्ति शाली कदापि नहीं बन सकता। अस्तु, बृटेन की सारी आशा एक मात्र विरोधी पक्ष (अर्थात् मजदूर-पक्ष) की सरकार पर ही अवलंबित है।

स्वदेश-भक्ति और जनतन्त्रवाद दोनो एक दूसरे के साथ अभिन्नरूप से जुड़े हुए हैं। अनुदार दल वाले भी अपनी स्वदेश भक्ति का दावा किया करते हैं और देश मे उनका प्रभाव भी बहुत काफी बढ़ा हुआ है। किंतु स्वदेश-भक्ति का अर्थ है अपने देशवासियो के प्रति सम्मान और उनकी सेवा करने की इच्छा। अस्तु, जो लोग यह विश्वास रखते

हैं कि उनके अधिकाश देशवासी ग़रीब होने के कारण शासन में भाग लेने के अयोग्य हैं, और जो केवल अपने धनिक समुदाय की स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही राजनैतिक अधिकारो का दुरू योग किया करते हैं, उनकी नक़ली स्वदेश-भक्ति सिवाय ऊपरी ढोग के और कुछ भी नहीं है। एक सच्चा जनतत्रवादी आन्दोलन ही सच्ची देश-भक्ति का दावा कर सकता है। अस्तु, अनुदार दल के तमाम विरोधियो को अपनी सच्ची देश-भक्ति का अभिमान होना चाहिए।

इस समय हम एक ऐसे युग मे रह रहे है जब कि मनुष्य की प्रगतिशील शक्तियाॅ प्रतिक्रियात्मक शक्तियो के विरुद्ध एक भयंकर संग्राम में जुटी हुई है। जनतत्रवादी तमाम दलो और शक्तियो का इस समय यह एक परम कर्तव्य है कि वे मानवजाति को पथप्रदर्शन करने के लिए आगे बढ़े। उन्हे अपने को इस महान उत्तरदायित्व के उपयुक्त साबित करना होगा। ससार के सामने उन्हे यह दिखला देना होगा कि उनका अभीष्ट मनुष्य जाति की उन्नति ही हे, और उनकी जीत से ही मनुष्य जाति की यह उन्नति सभव है, और यह कि अनुदार शक्ति इस उन्नति के मार्ग मे एक भयकर बाधा बन कर जनता और उसके उस उज्वल भविष्य के बीच मे खड़ी है, जिसमे विज्ञान के बड़े-बड़े कारनामे और सामाजिक सगठन का एक नया दृष्टिकोण ससार मे सुख, सम्पत्ति और शाति का एक स्थायी राज्य स्थापित कर देगे।

अवश्य ही आज हमारे लिए अपनी उस विजय को सुरक्षित रखना कठिन प्रतीत हो रहा है, जो कि हमारे प्रजा पक्ष की मानवता ने अतीत मे प्राप्त की थी, तो भी ध्यान रहे कि यदि हम उसकी रक्षा करने मे सफल सिद्ध हुए और इस प्रकार प्रतिक्रियात्मक शक्तियो को हमने निःशक्त बना दिया, तो कल ही एक अत्यत उज्वल और मधुर भविष्य हमारे पैरो पर लोटता दिखाई देगा।

———

"भारत का आर्थिक शोशण"

पुस्तक के सम्बन्ध में

"भारत में अंग्रेजी राज" के यशस्वी लेखक, कर्मवीर श्रीयुत सुन्दरलाल जी लिखते हैं—

"काग्रेस वर्किंग कमेटी के योग्य मेम्बर डाक्टर बी० पट्टाभि सीतारामैया देश के बडे से बडे राजनैतिक नेताओ मे से हैं। वह अर्थ शास्त्र और राजनीति शास्त्र के भी पूरे पण्डित है। उन्होंने अग्रेजी मे इन विपयों पर कई छोटी छोटी अच्छी किताबे लिखी हैं। उनकी The Economic Conquest of India or The British Empire Ltd अभी हाल मे प्रकाशित हुई है। इसमे उन्होने पिछले १५० वर्ष के अन्दर हिन्दुस्तान मे अग्रेजो की आर्थिक नीति का खाका खीचा है और नमक के महसूल, कपडे के व्यापार, रुई की चुगी, ओटावा का मशहूर समझौता, रेल, जहाज, कोयला, सिक्के, नोट, टकसाल, विदेशो के साथ हु डियावन, बट्टा, डाक महसूल, बङ्क, चेक, बीमा कम्पनिया, बिजली, फौज वगैरा के बारे मे अग्रेजों की नीति जो शुरू से रही है और जो अब तक है उसे साफ २ और तफसील के साथ २ बयान करते हुये यह दिखाया है कि किस तरह इन सब महकमो के इन्तिजाम मे भारत के साथ खुला अन्याय किया जाता है और किस तरह इस देश से ज्यादा से ज्यादा धन लूटना ही अग्रेजी राज्य का सब से बड़ा उद्देश्य है। इस आर्थिक नीति का नतीजा है कि केवल एक कपडे के ही धन्धे मे जब कि सन् १८०३ तक एक गज कपडा भी विलायत से भारत मे न आता था इस समय हमारा यह धधा करीब करीब चौपट हे, हमारे करोड़ों कारीगर भूखो मरते हें और हमारा बाजार विलायती कपड़ों से पटा पडा हैं। लेखक ने यह भी दिखाया है कि सन् १६३५ मे जो नया

कानून पास हुआ है इसके अनुसार कहा जाता है कि शासन के नये अधिकार भारतवासियों को दिये गये हैं उसमें भारत की इन आर्थिक बेड़ियो को और ज्यादा जोरो के साथ कस दिया गया है। और आइन्दा के लिये इसका पूरा इन्तजाम कर दिया गया है कि हिन्दुस्तान का अपना व्यापार या अपने उद्योग धन्धे उससे ज्यादा पनपने न पावें जितना कि अंग्रेजी कौम के लिये जरूरी है और भारत की यह भयंकर लूट बराबर जारी रहे। मेरी यह पक्की राय है और जबरदस्त ख्वाहिश है कि हर भारतवासी जो अंग्रेजी पढ़ सकता है इस पुस्तक को पढ़ ले। जो अंग्रेजी नही जानते वह किसी हिन्दुस्तानी भाषा मे उसका अनुवाद पढ़ सके तो जरूर पढ़े।"

लाठी शिक्षक १)

पहलवानी करना आज-कल के नवयुवको के लिए बड़ा कठिन काम हो गया हैं जो बिना कलफ और अस्त्री किए हुए कपड़े नहीं पहन सकते वे शरीर मे मिट्टी क्यों लगने देंगे, उन्हे लाठी चलाना जरूर ही सीखना चाहिये, पतली छड़ी भी लाठी चलाने वाले का साथ देगी, अगर लाठी चलाना वह जानता हो तो।

स्त्रियों के खेल और व्यायाम २)

भूमिका लेखिका—श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित

हिन्दू जाति मे आज-कल स्त्रियों को कठिन असाध्य, सक्रामक रोगो से घिरी हुई पायेंगे, गिरे हुए स्वास्थ्य से कमजोर सन्तान पैदा होती है, स्त्रिया बिगडे हुए स्वास्थ्य को कैसे सुधारे, बच्चे होने के बाद भी स्वस्थ्य कैसे रहे, स्त्रियों की दिनचर्या क्या हो, इस पुस्तक मे बताया गया है।

शहीदों की टोली (जप्त) १॥)

भारत में जब से अंग्रेज आए, उस समय से लेकर आज तक कितने क्रान्तिकारियों को फाँसी हुई है किस अपराध मे फाँसी हुई इस पुस्तक मे फाँसी पाये हुए क्राँतिकारियों का वर्णन है।

विवाह समस्या १)

लेखक महात्मा गाधी

नव-विवाहित स्त्री-पुरुषो को तो इस पुस्तक को अवश्य पढना चाहिए, स्त्री-पुरुषो के जीवन मे होने वाली तमाम कठिनाइयों को महात्मा जी ने उदाहरण देकर समझाया है।

बिस्मिल की शायरी १॥)

[लेखक कविवर "बिस्मिल,, इलाहाबादी]

व्यग शायरी पढ़ने लायक है, दरबारियो को और उपदेशको के लिए तो बहुत ही लाभ की पुस्तक है जहा चाहे वहा सटीक बैठती है, हाजिर जवाबी के लिए बहुत बढ़िया मसाला है।

दर्दे दिल २)

कविवर 'बिस्मिल' इसके सम्पादक हैं। भारत के मशहूर से मशहूर शायरो के इसमे दिल पर चुनीदा अशार है।

तीरे नज़र १।=)

सम्पादक 'कविवर बिस्मिल'

नजर पर मशहूर-मशहूर शायरो के अशार हैं।

नूह की शायरी १)

'नूह' साहब को इस जमाने मे कौन नहीं जानता है, इनके करीब-करीब तीन या चार सौ के लगभग शागिर्द हैं, हर शहर मे आप को इनके शागिर्द मिलेंगे, अशार पढ़ने योग्य हैं।

अर्थात् मजदूर दल था। यह दल गरीबो, मजदूरो और साधारण श्रेणी के लोगों का प्रतिनिधित्व करता था। कुछ समय बाद इस दल के दो विभाग हो गये :—(१) दक्षिण-पन्थी, और (२) वाम-पन्थी। वाम पन्थ वालो ने अपना नाम **'इन्डिपेन्डेन्ट लेबर पार्टी'** अर्थात् 'स्वतत्र मजदूर दल' रख लिया। यह स्वतत्र मजदूर दल दक्षिण पन्थवालो की अपेक्षा विचारों और सिद्धातो मे अधिक प्रगतिशील है और साम्राज्यवाद का स्पष्ट विरोधी है। इगलैएड मे भारतवर्ष के अनेक हितैषी इसी दल के लोगां मे पाये जाते हैं। किन्तु इस दल के सदस्यों की सख्या कामन्स सभा मे अभी बहुत थोड़ी है, जिससे यह अभी वहाँ कुछ कर नही पाते।

सन् १९३१ मे अधिकाश कन्जर्वेटिव और यूनियनिस्ट पार्टी के लोगो के साथ बहुत से लिबरल एव लेबर पार्टी के सदस्यो ने मिलकर एक नया दल स्थानित किया, जिसका नाम **'नैशनल पार्टी'** अर्थात् **'राष्ट्रीय दल'** रखा गया। तब से पार्लिमेंट मे इसी 'राष्ट्रीय दल' का बहुमत रहता आया है और इसलिए इसी के हाथ मे साम्राज्य की हुकूमत भी है। प्रस्तुत पुस्तक मे इसी दल की आलोचना की गई है और इसी के सदस्यां को 'टारी' के नाम से पुकारा गया है, क्योंकि, जैसा पुस्तक को पढने से मालूम होगा, इस दल के विचार और सिद्धात अपनी सकीर्णता और स्वार्थपूर्णता मे प्राचीन टोरी दल के विचारो से किसी प्रकार भिन्न नहीं है। ग्रथकार के शब्दो मे—

"यूनियनिस्ट, कजर्वेटिव, नैशनल (या राष्ट्रीय) लिबरल-नैशनल और नेशनल-लेबर में इतना कम भेद दिखाई देता है कि किसी गभीर राजनैतिक अध्ययन के लिए इनका अलग-अलग विचार करना बिल्कुल अनुपयुक्त होगा। जिस मन्त्रि-मडल मे ठेठ कजर्वेटिव दल के लोगो का प्राधान्य है, उसी मे लिबरल-राष्ट्रीय और मजदूर-राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ भी बैठा करते हैं। यह मन्त्रि-मडल पार्लिमेंट मे एक ऐसे बहुमत पर आश्रित है, जिसके ९० फी सदी सदस्य ठेठ कजर्वेटिव दल के ही

लोग हैं। कितने ही मज़दूर-राष्ट्रीय और लिबरल-राष्ट्रीय सदस्य इस टोरी सरकार के पक्ष में अपना वोट देने से एक बार भी पीछे नहीं हटे हैं।"

अस्तु, वर्तमान सरकारी पक्ष को (जो अपने को 'राष्ट्रीय पक्ष' के नाम से पुकारता है), पुस्तक में 'टोरी' के नाम से पुकारा गया है। हिन्दी मे हमने 'टोरी' शब्द के बजाय अनेक स्थानो पर 'अनुदार' शब्द का भी व्यवहार किया है। पाठकगण कृपया उससे 'टोरी' शब्द का ही मतलब समझेंगे। साथ ही जहाँ मूल पुस्तक में 'लार्ड', नोबुलमेन, पियर (Peers) और बेरन (Baron) लोगो का जिक्र आया है वहाँ हमने इनके लिए 'नवाब' शब्द का प्रयोग किया है, कारण कि इनके रहन-सहन, विचार और सिद्धांत हमारे यहाँ के नवाबो से बहुत कुछ मिलते-जुलते है, और इससे अधिक उपयुक्त कोई दूसरा शब्द हमें हिन्दी मे नही समझ पड़ा।

अंत मे इतना और बतला देना आवश्यक जान पड़ता है कि पार्लिमेंट और मंत्रि-मंडल का जो स्वरूप दिसम्बर सन् १९३८ में था, उसी का वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है। तब से उस में कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन भी हुए हैं और आगे हो भी सकते हैं उदाहरणार्थ मिस्टर चेम्बरलेन, जो उस समय प्रधान मंत्री थे, अब इस संसार मे नही रह गये और उनके स्थान पर एक दूसरे अनुदार सदस्य मिस्टर चर्चिल प्रधान मंत्री हैं। किंतु इस प्रकार के परिवर्तनो और घटनाओ से पुस्तक के उन परिणामो में कोई अंतर नही पड़ सकता, जो इस मे निकाल कर दिखाये गये है, और जिन्हे दिखाने के उद्देश से ही यह पुस्तक लिखी गई है। दो चार व्यक्तियों के आने या जाने से संपूर्ण दल के उद्देशो और सिद्धातों में कोई अतर नही पड़ता।

—अनुवादक

विषय-सूची

वर्तमान पूँजीवादी समाज मे जनसत्तात्मक शासन का प्रायः सब से मुख्य अग पार्लिमेंट ही हुआ करता है। बिना किसी ऐसी निर्वाचित संस्था के, जैसी कि इगलैंड मे हाउस आफ कामन्स है, जनसत्तात्मक शासन प्रायः सभव ही नही हो सकता। फिर भी केवल पार्लिमेंट की उपस्थिति ही इस बात की गारन्टी नही कही जा सकती कि उसका काम भी सदा जनतन्त्रात्मक रूप से हुआ करेगा। उदाहरणार्थ यदि पार्लिमेंट के निर्वाचन मे केवल थोडे ही से लोगो को मताधिकार दिया गया हो, जैसा कि उन्नीसवी शताब्दी के आरभ मे इगलैंड मे था, तो ऐसी पार्लिमेंट वास्तविक रूप से जनतन्त्रात्मक सस्था नही कही जा सकती। इसी प्रकार यदि प्रजा को केवल कुछ ऐसे व्यक्तियो मे से अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया जाय जो सरकारी तौर पर नामजद किये गये हो, जैसा कि आज कल जर्मनी मे होता है, तो वह चुनी हुई पार्लिमेंट भी प्रजा की इच्छाओं का सच्चा प्रतिनिधित्व नही कर सकती।

इसके अतिरिक्त जहाँ प्रजा को तमाम वे कानूनी अधिकार प्राप्त भी हो, जिन्हे हम जनतन्त्रात्मक विधान के लिए आवश्यक समझते है, जैसे, सब के लिए समान मताधिकार, हर एक को बिना किसी धन या जायदाद की शर्त के मेम्बरी के लिये खड़े होने का हक इत्यादि, तो ऐसी दशा मे भी एक निर्वाचित पार्लिमेंट के बहुत से काम व्यवहारिक दृष्टि से ऐसे हो सकते हैं जो वास्तव मे किसी प्रकार भी जनतन्त्रवादी न कहे जा सकें। उदाहरण के तौर पर जर्मनी मे जो शासन का अधिकार सन् १९३३ में नाजीदल के हाथ आया था। वह केवल प्रजा की नियमानुकूल चुनी हुई पार्लिमेंट की ही सहायता से तथा उसके प्रति जिम्मेदार हाकिमो के ही सहयोग से सभव हो सका था। इसी प्रकार फासिस्ट दल की सफलता भी पार्लिमेंटरी बहुमत की सहायता से ही संभव हुई थी। एक मात्र स्पेन के जेनरल फ्रांको को छोड़ कर शेष सभी जगह, जहाँ-जहाँ जनतन्त्रवादी शासन को नष्ट करने का कोई भी प्रयास किया गया है, वहाँ केवल पार्लिमेंट के बहुमत की ही सहायता अथवा

उदासीनता का सहारा लिया गया है। हाँ, स्पेन में अवश्य ही प्रजा तंत्रवादी सरकार को उलटने के लिए सशस्त्र क्रान्ति की जरुरत पड़ी थी।

किंतु इसका कारण था। जेनरल फ्राको के बग़ावत करने के पहिले स्पेन की पार्लिमेंट एक जबर्दस्त प्रतिनिधि-संस्था थी। उसके प्रजातंत्र-शासन में ऐसे-ऐसे कानूनी सुधार किये गये, जिनकी आवश्यकता सदियों पहिले से महसूस की जा रही थी। विरोधियों की उसके सामने एक भी न चली। निदान जब उनके लिए कायदे और कानून से जीतना असंभव हो गया, तब उन्होंने सशस्त्र क्रांति का सहारा पकड़ा और विदेशों से मदद मँगवा भेजी। इस प्रकार योरोप की आधुनिक घटनाओं से हमें जो एक महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है वह यह कि जन-सत्तात्मक शासन की सुरक्षा बहुत अधिक अंश में इस बात पर निर्भर है कि प्रजा के चुने हुए पार्लिमेंटी प्रतिनिधिगण प्रजातंत्र के अधि-कारों को कुचलने वाली तमाम चेष्टाओं का सामना करने के लिए पूर्णतया तैयार और दृढ़प्रतिज्ञ बने रहे। अस्तु, यदि बृटिश शासन-विधान को योरोप की जहरीली छूत से बचाये रखना आवश्यक समझा जाय, तो बृटिश प्रजा के लिए यह ज़रूरी होगा कि वह अपनी पार्लिमेंट के मेम्बरो पर अच्छी तरह निगाह रक्खे। विशेष कर उस दल के मेम्बरो पर तो सब से ज़्यादा निगाह रखना होगा, जिसके हाथ में इस समय शासन की बाग-डोर है। *

अभी हाल की घटनाओ ने सिद्ध कर दिया है कि पार्लिमेंट मे अनुदार दल के सदस्यो का अधिकतर भाग पार्लिमेंट के अधि-

---

नोट :—बृटिश पार्लिमेंट के मेम्बरों के चुनाव मे हम भारतीयो का कोई हाथ नहीं है। अतएव इस दृष्टि से हमारे लिए इन पर निगाह रखने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। फिर भी अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए हमे जिस बृटिश शासक दल से पाला पड रहा और पड़ेगा उसके वास्तविक स्वरूप को समझना और अध्ययन करना हमारे लिए भी कम उपयोगी न होगा—ह० प्र० गोयल।

पाया। न पार्लिमेंट के निर्माण मे ही कोई महत्वपूर्ण काया-पलट दिखाई दी। हॉ, इतना अवश्य हुआ कि जनता मे मताधिकार की वृद्धि के साथ-साथ तथा पार्लिमेन्ट की मेंबरी के लिए धन और जायदाद की कैद उठ जाने से अब राजनीतिज्ञो को, चाहे वह उदार दल के हों अथवा अनुदार दल के, अपना कार्यक्रम बनाने में जनता की मॉगों का पहले से अधिक ध्यान रहने लगा।

बहुत समय तक इगलैंड मे केवल दो ही राजनैतिक दल काम करते थेः—(१) **लिबरल अर्थात् उदारदल,** और (२) **टोरी अर्थात् अनुदार दल**। इन्हीं दोनो दलो मे से जनता को अपने प्रतिनिधि पार्लिमेंट के लिए चुनने पड़ते थे। यद्यपि ये दोनो दल वहॉ की ग़रीब जनता की दृष्टि मे अपनी अपनी स्वार्थ पूर्ण नीति से नित्य प्रेरित रहा करते थे, जिससे उनके विषय मे यह कहा जा सकता था किः—

जैसे लिबरल वैसे टोरी।
जैसे नाला वैसे मोरी॥

किंतु फिर भी इन दोनो दलो की पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता और लड़ाई प्रजा के हक मे लाभदायक ही सिद्ध हुई, कारण कि दोनों ही के लिए जनता को अपने पक्ष मे लाने और उसकी वोट को अपनाने की जरूरत रहती थी। अतएव दोनो ही को अपना ध्यान सार्वजनिक हित की ओर लगाने के लिए मजबूर होना पड़ता था।

पश्चात् बीसवीं शताब्दी के आरभ से मजदूर-दल भी मैदान मे आगया। इसका निर्माण ट्रेड-यूनियन-आन्दोलन की उस जबर्दस्त बाढ के कारण सम्भव हो सका, जो इगलिस्तान के अन्दर उन्नीसवीं शताब्दी के अत मे दिखाई दी थी। यद्यपि इसमे सन्देह नहीं कि प्रजा के बहुत कुछ हाय-तोबा मचाने से कितने ही महत्वपूर्ण सुधार पुराने राजनैतिक दलों से भी प्राप्त किये जा चुके थे, तोभी अब लोगो को धीरे-धीरे यह बात विदित हो चली कि बिना किसी प्रजातन्त्रात्मक ढग पर राजनैतिक

दल का निर्माण हुए देश और जाति की सर्वांगीन उन्नति नहीं की जा सकती। निदान मज़दूरो के हड़ताल करने के अधिकार पर जो क़ानूनी बाधाएँ उस समय वहाँ उपस्थित थीं और जिनके विषय में दोनो पुराने दलो के राजनीतिज्ञ टस से मस नही हो रहे थे, उसी सवाल को लेकर एक जबर्दस्त आन्दोलन खड़ा कर दिया गया और फिर उसी के परिणाम स्वरूप मज़दूरों के एक स्थायी राजनैतिक दल का भी संगठन हो गया।

मजदूर दल के राजनैतिक क्षेत्र में आते ही वोटो के लिए यकायक प्रतिद्वन्दिता भयंकर रूप से बढ़ गई। अनुदार दल को अब अपने ऊपर प्रजा की सहानुभूति बनाए रखने के लिये ऐसे-ऐसे सुधारो पर स्वीकृति देनी पड़ी, जिनका उन्नीसवी शताब्दी में कहीं नाम तक नही सुनाई देता था। साथ ही सन् १९१३ से ले कर सन् १९३० तक में शिक्षा के विषय में सरकारी खर्च १,७०,००००० पौड से बढ़ करीब पाँच करोड़ पौड तक पहुंच गया। उसी प्रकार स्वास्थ्य-विभाग, श्रम-विभाग आदि अन्य लोकोपयोगी विषयो पर भी खर्च की अत्यधिक वृद्धि की गई, यह सारी उन्नति केवल इसलिए हो सकी कि प्रजा में से हर एक। व्यक्ति के हाथ में इस समय पार्लिमेंन्ट के निर्वाचन का अधिकार मौजूद है। यदि आज यह अधिकार उनसे छीन कर केवल कुछ थोड़े से व्यक्तियो में सीमित कर दिया जाय, तो निश्चय है कि आज ही से इन लोकोपयोगी कामो में खर्च की कजूसी की जाने लगे। इसी प्रकार मज़दूरो के सघटित होने और अपना स्वतंत्र ट्रेड युनियन बनाने की स्वाधीनता भी इसी जनतत्रवाद का परिणाम है। बिना ऐसी ट्रेड यूनियनो के मजदूरों की वह मजदूरी कायम नही रह सकती जो आज उन्हे मिल रही है।

किन्तु सन् १९३१ में बृटेन की शासन-नीति मे एक गभीर प्रतिक्रिया उत्पन्न हो गयी है, जो इसके पहले सौ वर्षो में भी कभी नही दिखाई पड़ी थी। उदाहरणार्थ, मजदूरो के शिर पर कर का बोझ अब अत्यधिक बढ़ा दिया गया है, जो पिछले सौ वर्ष की पहली घटना कही जा सकती है। इसी प्रकार खाद्यपदार्थों पर भी अब भारी

महसूल लाद दिया गया है, जिसका परिणाम गरीबो को ही भुगतना पड़ता है, और जो पिछले सौ वर्षो मे कभी नही हुआ था। शिक्षा के विषय मे हर एक व्यक्ति के लिए माध्यमिक शिक्षा का जो आदर्श सामने लाया जा रहा था, वह अब यकायक उठा कर ताक पर रख दिया गया है और अब माध्यमिक स्कूलो मे फ़ीस लगाने की भी घोषणा कर दी गयी है। इसके अतिरिक्त सरकारी भेद को खोलने तथा अराजकता को उभाड़ने के सम्बन्ध मे जो नये-नये कानून (Official Secrets Act;* and Incitement to Disaffection Act) सन् १९३४ मे पत्रकारो के विरुद्ध पास किये गये हैं तथा सार्वजनिक सभाओ और जलूसो पर जो नयी-नयी पाबन्दियाँ लगायी गयी हैं वे सभी बृटिश जनता के अनुभव मे पिछले एक सौ वर्षो मे आज पहली ही बार दिखाई दी हैं। अंग्रेजो की सार्वजनिक स्वाधीनता पर इतने दिनों से इस प्रकार की कैद कभी नहीं लगायी गयी थी।

किन्तु इस उलटी नीति का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उस अनुदार दल के ऊपर है, जो सन् १९३१ से बृटिश राज्य का शासन-कार्य चला रहा है। अनुदार दल के वे सदस्य जो आज पार्लिमेंट के मेम्बर हैं यदि उसका समर्थन न करते तो सरकार यह उल्टा रास्ता कभी न पकड़ती। और यदि पकड़ती भी तो मन्त्रिमडल को तत्काल बदल देना या उसमें अपने नये आदमियो को नियुक्त करना उस दल के हाथ मे था। वास्तव मे सम्पूर्ण अनुदार दल की ही इसमे सहमति है। अस्तु, अब देखना यह होगा कि ये अनुदार दल के मेम्बर किस साँचे मे ढले हैं और उनकी इस अनुदार नीति का वास्तविक रहस्य क्या है। बस, इसी उद्देश्य को लेकर यह पुस्तक लिखी गयी।

यहाँ हम सरकारी पक्ष के पार्लिमेंटी मेम्बरो के व्यक्तिगत विचारों के विषय में कुछ नहीं कहना चाहते। बात यह है कि पार्लिमेंट का कोई

* जनता के विरोध के कारण इस कानून में अब कुछ सुधार कर दिया गया है।

भी सदस्य ऐसा नही है जिसके सम्बन्ध में यह कहा जा सके कि वह अपना निर्णय देने में अपनी नीति और अपने विचारों को संपूर्ण स्वतत्रता के साथ काम में लाता है। बहुत कुछ उसके विचार उन परिस्थितियो से प्रभावित हुआ करते है, जिनके बीच में उसे नित्य रहना पड़ता है। इस बात को स्वयं एक अनुदार दल के पार्लिमेंटी सदस्य मिस्टर हेली हचिन्सन इस प्रकार स्वीकार करते हैं:—

"राजनैतिक पुरुषो का आज जैसा कुछ व्यवसाय चल रहा है उसका दोष उन्हे नहीं दिया जा सकता, वास्तव में उनके व्यवसाय के सच्चे स्वरूप को भी हमें समझना चाहिए। राजनैतिक पुरुष वास्तव में किसी एक ऐसे पक्ष के स्वार्थो का प्रतिनिधित्व करने के लिए मैदान में आता है, जिसको कुछ अपने खास उद्देश या उद्देशो को ही पूरा करने की चिता रहती है और जो उसे दूसरे पक्षवालों के साथ अपनी तरफ की बातचीत या मोलभाव करने वाला केवल वकील या दल्लाल समझता है ।....."

हमें यह याद रखना चाहिए कि पार्लिमेंट के सदस्य पहिले अपने-अपने पक्ष की ओर से नामजद कर दिये जाते है और तब जनता उन्हे चुनती है। जनता को यदि किसी भी अनुदार दल वाले को चुनना है तो वह केवल इन्ही नामजद किये हुए व्यक्तियो को अपना वोट दे सकती है, दूसरे को नहीं। ये नामजद व्यक्ति भी अनुदार दल की ओर से केवल इसलिए नामजद किये जाते हैं, क्योंकि वे अनुदार दल के अधिक शक्तिपूर्ण भाग का प्रतिनिधित्व करने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त समझे जाते है। अतएव उनका हाथ इस शक्तिपूर्ण भाग का स्वार्थ-साधन करने के लिए हर प्रकार से बंधा सा रहता है।

अब वे लोग कौन हैं जो उन्हे अपना प्रतिनिधि बनाते हैं और उनके स्वार्थ क्या हैं? यदि इन प्रश्नो का हम सही-सही जवाब लेवे

तो हमे उनकी ओर से पार्लिमेंट मे बैठने वाले सदस्यो के भी आचरणों तथा व्यवहारों का सही एव सच्चा ज्ञान हो जायगा। अस्तु, अनुदार दल वालो की सामाजिक रचना और स्थिति का ही अध्यन करना हमारा सबसे पहला कर्तव्य है, और इसी के लिए इस पुस्तक मे आगे चेष्टा की जायगी। साथ ही इस दल के पार्लिमेंटी प्रतिनिधियो की लिखी हुई पुस्तको मे से भी कुछ अश यथास्थान उद्धृत कियेजॉयगे, जिनसे उनके आन्तरिक विचारो का सच्चा और असली चित्र प्राप्त हो जायगा, कारण कि पार्लिमेंटी भापणो मे उनकी जबान उतनी खुली हुई नही रहती, जितनी कि उनकी पुस्तको मे, और इसलिए उनकी पुस्तके ही उनके विचारोका सच्चा दिग्दर्शन कराने वाली कही जा सकती हैं।

जनसत्तात्मक शासन का यथोचित रूप से कायम रहना प्रजा की उस योग्यता पर निर्भर है, जिसके द्वारा वह अपने पार्लिमेंटी सदस्यों को अपनी इच्छानुसार चलने के लिए प्रेरित कर सकती है। इसमे सदेह नही कि वृटिश जनता के हाथ मे यह शक्ति मौजूद है कि वह जिन लोगो के काम को नापसद करे उन्हे भविष्य मे पार्लिमेंट का मेम्बर न चुने। किंतु फिर भी एक औसत दर्जे को अग्रेज को इस बात की अभिज्ञता नही होती कि उसकी पार्लिमेंट के अथवा हाउस आफ कामन्स के सदस्य कौन और कैसे हैं और उनका आचार-व्यवहार कैसा है। उसकी जानकारी इस विषय मे बिल्कुल ही न-कुछ सी रहा करती है

इस समय पार्लिमेंट मे कितने ही ऐसे अनुदार दल के सदस्य मौजूद हैं, जिन्हे वहां जनतन्त्रवाद की दृष्टि से हर्गिज स्थान नही मिलना चाहिए था। अनुदार दल साधारणतः अपने को जनतन्त्रवाद का पोषक बतलाता है और जनसत्तात्मक शासन का हिमायती होने का दावा करता है। किंतु फिर भी उसके हेड आफिस से पार्लिमेंट की मेम्बरी के लिए ऐसे-ऐसे उम्मीदवार खड़े किये जाते हैं, जो इग्लिस्तान में फासिस्ट राज्य अर्थात् तानाशाही हुकूमत कायम करने के खुले

आम पक्षपाती बन रहे हैं। उदाहरणार्थ, २५ अप्रैल सन् १९३४ के डेली मेल नामक पत्र में सर टामस मोर का लिखा एक लेख निकला था, जिसका शीर्षक था—

"अनुदार दल में जो कुछ कमी है उसे पूरा करने की सामग्री काली कुर्ती वालों के (अर्थात् फ़ासिस्ट दल के) पास मौजूद है ।" इसी प्रकार १० अक्तूबर सन् १९३६ के मैन्चेस्टर गार्जियन (Manchester Guardian) मे सर आर्नल्ड विल्सन ने लिखा था, **"मैं हिटलर से कितनी ही बार मिल चुका हूं। मेरा विश्वास है कि वह विश्व-शांति के लिए एक बहुत बड़ा साधन सिद्ध होगा ।"** ये दोनो ही व्यक्ति पार्लिमेंट के सदस्य है और अनुदार दल के एक बहुत बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करते है ।

एक अन्य पार्लिमेंटी अनुदार सदस्य इंगलिस्तान में प्रचलित मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षानीति के बड़े खिलाफ हैं। एक दूसरे सदस्य (Mr. Austin Hopkinson M. P.) बेकारो को दी जाने वाली सरकारी सहायता पर अपना रोष दिखलाते हैं। इसी प्रकार और भी कितने ही ऐसे उद्धरण इन पार्लिमेंटी अनुदार सदस्यो के लेखों और ग्रंथो से दिये जा सकते हैं, जिनसे इनकी निर्लज्ज प्रतिक्रियात्मक नीति का भरपूर परिचय मिलता है। अब यह सोचने की बात है क्या ऐसे-ऐसे व्यक्तियो से भी बने हुए दल के हाथ में कभी जनतन्त्रवाद सुरक्षित रह सकता है ।

हम यह पहिले बता चुके है कि हर एक राजनैतिक दल के लिए अपनी ओर से पार्लिमेंन्ट के उम्मीदवार नामजद करना कितने बड़े महत्व का विषय है। आगे चल कर हम यह भी बतलावेंगे कि ये उम्मीद-वार खड़े किस ढंग पर किये जाते हैं। किंतु हम यहाॅ एक उदाहरण इस बात का दे देना चाहते हैं, जिससे यह मालूम होगा कि अनुदार दल अपने निर्वाचन-कार्य में जनतंत्रात्मक सिद्धातो की कभी-कभी किस

प्रकार हत्या कर डालता है। अर्ल विंटर्टन सन् १६३८ मे ब्रिटिश मन्त्रि-मडल के एक सदस्य थे। उन्होंने सन् १६३२ मे अपना पूर्व जीवन वृत्तात लिखते हुए "महायुद्ध से पहले" शीर्षक देकर एक लेख मे यह बतलाया है कि अनुदार दल की ओर से वह पहले-पहल उम्मीदवार किस प्रकार बनाये गये थे। वह लिखते हैं:—

"अक्टूबर सन् १६०४ के आरभ मे मैं युनिवर्सिटी के तीसरे साल का अध्ययन आरंभ करने के लिए आक्सफोर्ड गया। यहाॅ बहुतो से मेरी दोस्ती हुई, खूब घुड़सवारी की गयी, जाडे के दिनो मे खूब शिकार खेला और गर्मी मे खूब पोलो। किंतु मानसिक उन्नति के विचार से दुर्भाग्यवश मेरे ये दो वर्ष बिल्कुल ही बेकार बीते, जिसका सारा दोष मुझपर ही है। अक्टूबर लगते ही होर्शम डिवीजन की ओर से पार्लिमेटी सदस्य मिस्टर हेउड जान्स्टन (Heywood Johnstone) की मृत्यु हो गयी और बुधवार १६ अक्टूबर को स्थानीय अनुदार दल के एसोसियेशन की निर्वाचिक कमेटी ने उनकी जगह पर मुझे अनुदार दल का उम्मीदवार बना दिया। फिर लार्ड लेकन फील्ड की सहायता से मैं पार्लिमेट का सदस्य चुन भी लिया गया। उस समय मेरी अवस्था एक्कीसवर्ष और छः मास की थी।"

अब यह एक्कीस साल का बालक अनुदार दल की ओर से क्यों खड़ा किया गया इस बात को भी जान लेना जरूरी है, कारण कि यही सिद्धात वास्तव में तमाम दूसरे अनुदार सदस्यों के लिए भी लागू हुआ करते हैं। उसे पार्लिमेट की मेम्बरी के योग्य केवल इसलिए समझा गया कि वह एक बहुत बडे रईस और ताल्लुकेदार घराने का लड़का था। उसकी गिनती साधारण प्रजावर्ग मे न थी, बल्कि उमरावो में थी। उसकी योग्यता की सब से बड़ी दलील उसकी सम्पत्ति ही थी।

सच पूॅछिए तो यही कारण है कि अनुदार दल वालो मे हम साधारण जनता के प्रति न केवल सहानुभूति का अभाव ही देखते हैं, बल्कि प्रत्यक्ष घृणा और उपेक्षा की भी बहुत कुछ मात्रा मौजूद पाते हैं।

ऊपर हम जितने अनुदार दल के सदस्यो का उल्लेख कर आये हैं उनमें से एक भी ऐसा नही है, जिसे साधारण जनता का आदमी कहा जा सके।

इस समय हाउस आफ़ कामन्स मे सरकारी पक्ष के कुल सदस्यो की सख्या ४०० है। इनमे से अभी तक केवल दो ही चार का उल्लेख ऊपर किया गया है। किंतु इस दल का हाल-चाल वास्तिविक रूप से समझने के लिए उन सबो का ही रग-ढग मालूम करना जरूरी होगा। आगे चलकर हम धीरे-धीरे इसे दिखलायेंगे। यहाॅ केवल हम इन सदस्यो की अमीरी के ही कुछ थोड़े से सबूत पेश कर देना चाहते हैं

सन् १६३१ से लेकर सन् १६३८ तक मे अनुदार दल के कुल ४३ पार्लिमेंटी सदस्य मर चुके हैं। इनमें से ३३ सदस्यो की सम्पत्ति और जायदाद के ऑकड़े तो प्राप्त हो चुके है, कितु शेष १० सदस्यो के अभी तक नही मिल सके। जो ऑकड़े प्राप्त हो चुके हैं, वे इस प्रकार हैं :—

२ पार्लिमेंटी सदस्य १०,००००० पौड से भी अधिक छोड़ गया।

१२ पार्लिमेंटी सदस्य १,००००० पौड से लेकर १०,००००० पौड तक छोड़ गया।

७ पार्लिमेटी सदस्य ४०,००० पौड से लेकर १०,०००० पौड तक छोड़ गया।

७ पार्लिमेंटी सदस्य २०,००० पौड से लेकर ४०,००० पौड तक छोड़ गया।

५ पार्लिमेटी सदस्य १०,००० पौड से लेकर २०,००० पौड तक छोड़ गया।

उपरोक्त लेखा अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो की अमीरी का वहुत ही सच्चा नमूना है। इससे जान पड़ेगा कि अनुदार दल का एक बहुत

बड़ा भाग बेहद अमीर है। ३३ सदस्यों मे से १४ सदस्य—अर्थात् करीब ४२%— एक लाख पौड से भी अधिक सम्पत्ति छोड़ गये। इतनी सम्पत्ति सारी वृटिश जनता मे केवल ·१ प्रतिशत व्यक्तियों के पास है।

इन आँकड़ो से यह भी जान पड़ता है कि प्रायः हर एक अनुदार पार्लिमेटी सदस्य को सर्टैक्स (Surtax) जरूर अदा करना पड़ता होगा। अनेक मार्गों से होने वाली इनकी आमदनी प्रायः प्रत्येक अनुदार सदस्य को कम से कम दो हजार पौड सालाना आमदनी वाले व्यक्तियो की श्रेणी मे जरूर पहुँचा देती है। किंतु अधिकाश करीव दस हजार पौड तक की सालाना आमदनी पर इनकमटैक्स देते है; और जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे, कुछ अनुदार सदस्य ऐसे भी हैं जो तीस हजार, चालीस हजार अथवा एक-एक लाख पौड तक की सालाना आमदनी पर इनकम टैक्स अदा किया करते हैं।

केवल वे ही व्यक्ति अनुदार दल की ओर से पार्लिमेंट की उम्मीदवारी के लिए खडे होने की आशा रख सकते हैं जो काफी धनवान हैं। इस वात के एक नहीं, अनेकों प्रमाण दिये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, स्वय अनुदार दल की ओर से एक उम्मीदवार मिस्टर आयन हार्वे (Mr. Ian Harvey) ने ४ जनवरी सन् १६३६ को 'ईवनिग स्टैन्डर्ड' नामक पत्र मे इसी विषय की चर्चा करते हुए अनुदार दल के तमाम उम्ममीदवारों को तीन श्रेणी में विभाजित किया था, जो इस प्रकार हैं :—

(१) प्रथम श्रेणी में वे लोग रखे जा सकते हैं, जो चुनाव सम्बन्धी अपना संपूर्ण व्यय (४००, पौंड से लेकर १२०० पौंड तक) स्वय उठाने को तैयार हैं और साथ ही पाँच सौ पौंड से लेकर एक हजार पौंड तक अपने स्थानीय एसोसियेशन को चन्दा भी देते हैं।

इस श्रेणी के लोगो को अनुदार दल की ओर से पार्लिमेंट के लिए खड़े किये जाने की सब से अधिक आशा रहती है।

इस प्रकार के उम्मीदवार केवल वे ही लोग कहे जा सकते हैं जिनकी वार्षिक आमदनी दस हजार पौंड से ऊपर है।

(२) दूसरी श्रेणी के लोग वे हैं जो चुनाव-सम्बंधी आधा खर्च बर्दाशत कर सकते हैं और एसोसियेशन को २५० पौंड से लेकर ४०० पौंड तक चन्दा दे सकते हैं। इस श्रेणी के व्यक्तियो को उम्मीदवारी के हेतु लिये जाने की आशा केवल साधारण दर्जे तक की जा सकती है।

(३) तीसरी श्रेणी में वे लोग शामिल हैं जो अपना चुनाव-सम्बंधी खर्च बिल्कुल नही उठा सकते और चन्दा भी केवल १०० पौंड या इससे कम दे सकते हैं। इस प्रकार के लोगो के लिए पार्लिमेंट की उम्मीदवारी की संभावना बहुत ही कम रहा करती है।

३० मार्च सन् १९३९ को एक दूसरे लेख में यही मिस्टर हार्वे, जिनका उपर उल्लेख किया जा चुका है, इसे सम्बंध मे फिर लिखते हैं कि "प्रत्येक उम्मीदवार से सबसे पहिले अनुदार दल की ओर से जो सवाल किया जाता है वह केवल यही कि तुम्हारे पास धन कितना है।......"

अस्तु, इन सब बातो का निष्कर्ष केवल यह निकलता है कि जो लोग कम से कम २००० पौंड की आमदनी या इससे अधिक पर सटैक्स देने वाले नहीं हैं, उनके लिए अनुदार दल की ओर से पार्लिमेंट का सदस्य बन सकना बहुत ही कठिन है। जो सबसे उत्तम निर्वाचन-क्षेत्र समझे जाते हैं वे सदा उन्हीं लोगो को दिये जाते हैं, जो बहुत ही ज्यादा धनवान हैं, अर्थात् जिनकी सालाना आमदनी १०,००० पौंड से भी अधिक रहा करती है।

बृटिश द्वीप में कुल मिलाकर लगभग २ करोड़ १० लाख प्राणी ऐसे हैं जो किसी न किसी प्रकार की आमदनी रखते हैं। इनमे से

केवल एक ही लाख व्यक्ति (अर्थात् ·५ प्रतिशत) ऐसे कहे जा सकते हैं, जिनकी सालाना आमदनी दो हजार पौड या इससे अधिक है। और जिनकी आमदनी दस हजार पौड से भी अधिक है ऐसे लोगो की सख्या दस हजार से ज्यादा नही कही जा सकती। करीब ८८ प्रतिशत मनुष्यों की सालाना आमदनी २५० पौड से भी कम है।*

ये आँकडे इस बात को सिद्ध करते हैं कि अनुदार दल के पार्लिमेंटी सदस्य समाज के उस अग के कल-पुर्जे हैं, जिनका साधारण जनता के साथ किसी बात मे भी मेल नही बैठ सकता। वे अमीरो और पूजीपतियो की जाति-वाले हैं। अतएव उनमे अपनी जाति के हितसाधन और स्वार्थ-रक्षा की चिता होना स्वाभाविक ही है। यह उनके दल का कोई दोष नही, बल्कि प्रकृतिजन्य राजनैतिक स्वभाव ही है। जैसा कि सर टामस अर्स्किन मे (Sir Thomes Erskine May) ने सन् १८७८ मे लिखा था, आज भी उन्ही के शब्दो मे **"धन, रुतबा और मज़दूरों को गुलाम बना रखने वाली शक्ति का पूर्ववत् बोल बाला है।"**

आगे के अध्यायो मे हम अभी और स्पष्ट रूप से देखेगे कि इस धन, रुतबा और मजदूरो को गुलाम बना रखने वाली शक्ति से अनुदार दल कहाँ तक ओत प्रोत तथा नियन्त्रित है। मजदूर दल बस इसी शक्ति का मुकाबला करने के लिए दुनिया मे पैदा हुआ है। अतएव उसके निर्माण की आधार शिला इससे बिल्कुल ही विपरीत ढग की दिखाई देती है।

———

*गरीब भारतीयो की आमदनी का इन लोगो की आमदनी से क्या मुकाबला किया जा सकता है! यहा तो अधिकाश प्राणियों को साल मे एक मास भी भरपेट अन्न नहीं नसीब होता—द० प्र० गोयल।

दूसरा अध्याय

व्यापारियों के हाथ में बृटिश राज्य का शासन

सन् १६३६ मे प्रति रविवार को प्रकाशित होने वाले एक बृटिश पत्र मे निम्न-लिखित पंक्तियाँ छपी थीं :—

"माननीय वाल्टर रन्सीमैन पहिले 'रायल मेल स्टीम पैकेट कं०, के डायरेक्टर थे। उनके पिता लार्ड रंसीमैन भी पाँच जहाजी कंपनियों के डायरेक्टर हैं और बृटिश स्टीमशिप ओनर्स एसोसियेशन (अर्थात् जहाजी मालिको के सघ) में सदस्य हैं। साथ ही उनके पुत्र, वाल्टर लेस्ली रन्सीमैन भी लायड बैंक के अतिरिक्त चार जहाजी कंपनियों के डायरेक्टर हैं।"

"स्वय उनके पास 'मूर लाइन लिमिटेड' (एक जहाजी कंपनी) के २१००० पौंड के शेयर हैं। तो भी बोर्ड आफ ट्रेड के प्रेसिडेन्ट की हैसियत से उन्हीं के हाथ मे यह काम सौंपा गया है कि वे सरकार की ओर से हाउस आफ कामन्स मे जहाजी व्यवसाय के लिए बीस लाख पौंड की सहायता का प्रस्ताव रक्खे और मंजूरी मिल जाने पर उसका प्रबंध भी स्वय ही करे।"

न्याय का एक बहुत प्राचीन सिद्धात है कि "कोई व्यक्ति अपने पक्ष मे स्वय निर्णय नहीं कर सकता।" इस सर्व-स्वीकृत सिद्धांत की सरकारी राजनीतिज्ञों द्वारा किस प्रकार हत्या की जाती है इसका एक बहुत साधारण दृष्टात ऊपर के उद्धरण मे मौजूद है।

सभी अदालतो के जज और जूरी पर उपरोक्त सिधांत का पालन लाज़िमी समझा जाता है। प्राचीन रोमन-काल से उसका प्रयोग निरंतर होता आ रहा है। एक बार सन् १८५२ ई० मे लार्ड चान्सलर काटनहम

ने अपना फैसला किसी ऐसी कपनी के पक्ष मे दे दिया था जिसके वह स्वय हिस्सेदार थे। निदान उनका यह फैसला हाउस आफ लार्ड्स ने रद्द कर दिया।

किन्तु राज्य की सब से बड़ी न्याय-सभा पार्लिमेंट मे इस सिद्धात का प्रयोग नही किया जाता। केवल लार्ड रन्सीमैन के सम्बध मे दिया हुआ ऊपर का उदाहरण अकेला नहीं है। कोड़ियों ऐसे उदाहरण अन्य अनुदार सदस्यो के भी दिये जा सकते हैं, जिनमे उन्होंने अपने पक्ष का फैसला स्वयं कर लिया है और कानूनन इसके वे हकदार भी समझे जाते हैं।

अब उनके बाबत उपाय क्या है? कौन उन्हे इस सिद्धात का पालन करने के लिए मजबूर कर सकता है? पार्लिमेंट से ऊँची कोई दूसरी अदालत तो देश मे है ही नही। हाँ, जनता यदि चाहे तो उन्हे अवश्य रास्ते पर ला सकती है। एक जज यदि आज अपनी कपनी के पक्ष मे फैसला देता है तो उसका वह फैसला ऊँची अदालत से अवश्य रद्द कर दिया जायगा। किंतु यदि पार्लिमेंट अपने कुछ मेम्बरों को लाभ पहुँचाने के लिए कोई कानून बनाना तय करती है तो उसका हाथ रोकने वाला देश मे कोई नही। एक मात्र इसका इलाज केवल उस जनता के हाथ मे है जो उन्हे चुनकर पार्लिमेंट मे भेजा करती है।

किसी जज के लिए अपने पक्ष मे निर्णय करना इसलिए अनुचित समझा जाता है कि उससे मुकदमें के दूसरे फरीक पर ज्यादती होती है। इसी प्रकार पार्लिमेंट के लिए भी अपने कुछ मेम्बरो को लाभ पहुँचाने का निर्णय करना बिल्कुल अनुचित और निरकुशता पूर्ण कार्य है, कारण कि उससे भी जनता के अन्य समूहों पर ज्यादती हो सकती है। अस्तु पूर्वोक्त न्याय-सिद्धात पर चलने के लिए पार्लिमेंट को मजबूर करना जनता के हक मे उतना ही आवश्यक है जितना कि अदालतों द्वारा इस सिद्धात का पालन किया जाना।

एक प्रसिद्ध जर्मन कानूनी विशेषज्ञ इस सम्बंध में लिखता है :—

"जब कभी पार्लिमेंट का कोई सदस्य अपना सम्बंध बाहर की व्यापारिक दुनिया से रखता है, विशेष कर जब उसका ताल्लुक़ किसी खास फ़र्म से रहा करता है, तो यह निर्विवाद है कि उसके निजी स्वार्थों और उसके राजनैतिक कर्तव्यों की आपस में सदैव टक्कर होते रहने का भय उपस्थित रहेगा और जब-जब ऐसा समय आयेगा तो वह नित्य अपने स्वार्थों के ही पक्ष में फैसला करेगा।"

यह केवल एक विद्वान की राय है। इसी प्रकार और भी अनेकों विद्वानो की राय इस विषय मे उद्धृत की जा सकती है। सबां का निष्कर्ष केवल यह है कि पार्लिमेंट के मेम्बरों के लिए व्यापारी या व्यवसायी होना उनके राजनैतिक कर्तव्यो के पालन में बाधक है। एक कोयले की खदान का मालिक यदि कोयले की खदान-सम्बंधी बिल पर बोलता है या राय देता है, अथवा यदि किसी जहाज का मालिक जहाज-सम्बंधी बिल पर बोलता या राय देता है तो ऐसी दशा में दोनों ही अपने अपने पक्ष का स्वयं निर्णय करने के अपराधी हैं और इस सम्बध का अलिखित कानून तोड़ रहे हैं। किंतु यह क़ानून केवल अपने व्यवसाय को सार्वजनिक पैसे से सहायता दिलाने से ही नहीं तोड़ा जाता, अपने वर्ग या समूह के लाभार्थ कार्यवाही करके भी यह तोड़ा जा सकता है। उदाहरणार्थ, सर्टैक्स अदा करने वाला एक रईस मेम्बर यदि सर्टैक्स की वृद्धि के विपक्ष मे वोट देता है अथवा एक जमीदार मालगुजारी बढ़ाने के विरुद्ध बोलता है तो उस अवस्था में भी उपरोक्त कानूनी सिद्धात का अपहनन ही होता है, कारण कि इस प्रकार वह न केवल अपने ही स्वार्थ के पक्ष मे फैसला करता है, बल्कि अपने उस छोटे से समूह के पक्ष में भी फैसला देता है, जिसकी संख्या संपूर्ण प्रजा में केवल एक प्रतिशत है।

प्रथम अध्याय में हम देख आये हैं कि अनुदार दल के पार्लिमेंटी मेम्बरों में एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो उन्हे साधारण प्रजा से

बिल्कुल अलग किये रहती है। अर्थात् वे साधारण नागरिकों की अपेक्षा अत्यधिक धनवान हैं। अब इस अध्याय मे उनकी एक दूसरी विशेषता का दिग्दर्शन होगा। वह यह कि एक बहुत बड़ी सख्या में पार्लिमेंटी सदस्य व्यापारी दुनिया के महारथी और मजदूरों के मालिक हैं। कामन्स सभा के इस समय ४१५ सरकारी सदस्यों में से कम से कम १८१ अर्थात् करीब ४४ प्रतिशत सदस्य ऐसे हैं जो कम्पनियों के डायरेक्टर और मजदूरों के मालिक बने हुए हैं। पहिले इनकी सख्या इससे अधिक थी।

समस्त बृटिश जनता में यदि हिसाब लगा कर देखा जाय तो कुल कम्पनी-डायरेक्टरों की सख्या उसके ०·१% प्रतिशत भाग से अधिक नहीं है। अस्तु, यह चित्र देखने ही योग्य है कि—

निर्वाचकों में तो कम्पनी-डायरेक्टर केवल ०·१% है, कितु

अनुदार दल में कम्पनी-डायरेक्टर ४४ % हैं।

यह हिसाब भी वास्तविक स्थिति से कुछ कम ही करके दिखाया गया है, कारण कि इसमे मन्त्रिमडल के सदस्यों की गणना नहीं की गयी है। मन्त्रिमडल के सदस्यों के लिए एक कानून है कि वे मत्री-पद पर होते हुए कम्पनी-डायरेक्टर नहीं रह सकते। अस्तु, उतने समय के लिए उन्हे डायरेक्टर-पद से अलग हो जाना पड़ता है, कितु बाद में वे फिर डायरेक्टर बन सकते हैं। इस प्रकार यदि देखा जाय तो मन्त्रिमडल के भी अधिकाश सदस्य किसी न किसी समय कम्पनी-डायरेक्टर जरूर रह चुके हैं। इन्हे शामिल करने से उपरोक्त ४४% का आँकड़ा और अधिक बढ़ जायगा। मन्त्रियो को डायरेक्टर-पद से अलग रखने वाला यह कानून भी उसी सिद्धात का पोषक है जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है, अर्थात् "किसी व्यक्ति को अपने पक्ष मे निर्णय करने का अधिकार नहीं।"

अधिकाश अनुदार सदस्य ऐसे हैं जो यद्यपि किसी कंपनी के डायरेक्टर तो नहीं, कितु हिस्सेदार बड़े ज़बर्दस्त हैं। फिर भी एक

भारी हिस्सेदार का महत्व भी डायरेक्टर से कम नहीं कहा जा सकता। उदाहरणार्थ, जब सन् १६२६ मे इंगलैंड के कोयले की खानों का झगड़ा छिड़ा था उस समय तत्कालीन प्रधान मंत्री बाल्डविन साहब के पास बाल्डविन लिमेटेड नामक कोयले की एक बहुत बड़ी कंपनी के १,६४,५२६ साधारण शेयर और ३७,५६१ प्रिफ़रेन्स शेयर मौजूद थे। तब क्या वे अपने मामले में फैसला करने के उसी प्रकार अपराधी नहीं कहे जा सकते, जिस प्रकार कि यदि वे उस कंपनी के डायरेक्टर, हुए होते तो कहे जा सकते ?

ध्यान रहे कि व्यवहारिक दृष्टि से किसी कंपनी की नीति अथवा कार्यवाहियों पर उसके छोटे-छोटे हिस्सेदारों का कोई प्रभाव नहीं हुआ करता। केवल बड़े ही हिस्सेदार उसे प्रभावित किया करते हैं। फिर भी हम यहाँ हिस्सेदारों को अपने ध्यान से अलग रख कर केवल कंपनी-डायरेक्टरों का ही जिक्र करेंगे, कारण कि हर एक सदस्य के विषय में यह पता लगाना प्रायः असंभव सा है कि किसके पास कितने हिस्से हैं।

पार्लिमेंट के अनुदार सदस्यों में से १८१ व्यक्तियों को कपनी-डायरेक्टर का पद प्राप्त है और ये कुल मिला कर इस समय कम से कम ७७५ कंपनियों के डायरेक्टर हैं।। व्यौरा नीचे की सूची में दिया जाता है :—

सरकारी सदस्यों में कंपनी-डायरेक्टर

व्यवसाय	सदस्यों की संख्या	उन कंपनियों की संख्या जिसके वे डायरेक्टर हैं
बैंक	१६	१८
जान बीमा	४३	४६
फाइनेंस कंपनी तथा इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट ...	२७	४२
रेल तथा हवाई जहाज ...	१८	३१
जहाज	६	१६
रोड ट्रान्सपोर्ट तथा नहर ...	५	१०
मर्चेन्ट्स शिपिंग और फार्वर्डिंग एजेन्ट्स .	११	२०
केबुल (cables), तार तथा बेतार का तार	१	१५
लोहा, इस्पात और कोयला } (जिसमे शस्त्रास्त्र के काम और हवाई विद्या भी शामिल है)	१७	२६
इंजीनियरिंग	४२	८०
शराब बनाना	११	२०
खाद्यपदार्थों का बनाना ...	६	१३
तम्बाकू बनाना .. .	२	२
पेटेन्ट दवाएँ	३	२३
सूत और कपड़े के कारखाने	१६	३७
छपाई तथा कागज बनाना ...	८	१७
अन्य कारखाने	२६	४०
होटल और भोजनालय ...	१०	१६
फुटकर स्टोर	१२	१८
समाचार पत्र तथा अन्य प्रकाशन ...	१७	२४
सिनेमा, थियेटर, कुत्तों की दौड़ कराना इत्यादि	१३	१५
बिजली-घर	७	४५

व्यवसाय	सदस्यों की संख्या	उन कम्पनियों की संख्या जिसके वे डायरेक्टर हैं
गैस और पानी के कारखाने ...	१०	१२
मकान और इमारतों का निर्माण ...	१४	२६
जमीन जायदाद रखने वाली कंपनियाँ ...	२०	५२
तेल	७	६
सोने की खान का काम ...	१३	२५
दूसरे प्रकार की खाने ...	१२	१७
रबर के इलाके	३	१५
चाय तथा कहवा	७	६
अन्य प्रकार	१६	२१
टोटल	१८१	७७५

इस प्रकार १८१ अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य तो स्वयं ७७५ कम्पनियो के डायरेक्टर हैं। इनके अतिरिक्त अनेको ऐसे भी हैं जिनके कुटुम्बी-जन अथवा निकट-संबन्धी लोग किसी न किसी बड़ी व्यापारी कपनी के डायरेक्टर या मालिक हैं। साथ ही उनके बहुत से घरवाले और नातेदार लोग इन कम्पनियो मे नौकर भी हैं। अस्तु, प्रकट है कि अनुदार दल के पार्लिमेटी सदस्यो का एक बहुत बड़ा भाग देश की व्यापारिक सस्थाओ मे अपना ज़बर्दस्त हाथ रखता है और उसका स्वार्थ इन सस्थाओ के स्वार्थ के साथ अत्यंत अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

राष्ट्र की सम्पत्ति पर शासन करने वाला प्रायः सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक समुदाय बैंक तथा जान बीमा कंपनी है। इनके जितने डायरेक्टर पार्लिमेंट में बैठते हैं वह संख्या भी ध्यान देने योग्य है।

सरकारी शासन पर ये बैंक अपने इन डायरेक्टरों द्वारा भले ही कोई प्रभाव न डाले, किंतु इनका प्रतिनिधित्व तो सीधा सरकार मे मौजूद रहता ही है और सरकारी अर्थनीति तथा सरकारी खजाने के साथ भी इनका सीधा सम्पर्क हो जाता है। एक बार जब किसी मामले मे सरकार और बैंकों के बीच कुछ मतभेद पैदा हो गया था तो विलायत के "फैनन्शियल टाइम्स' (Financial Times) नामक पत्र ने सरकारी मत्री से सवाल करते हुए इस प्रकार लिखा था :—

"क्या मंत्री महोदय और उनके साथीगण इस बात को महसूस करते हैं कि पाँच बडे-बड़े बैंकों के करीब आधे दर्जन कर्णधार यदि चाहे तो परस्पर मिलकर 'ट्रेजरी बिल' को नया करने से इनकार कर दें और इस प्रकार सरकारी अर्थनीति के तमाम ताने-बाने को उलट-पुलट दे ?"

जिन पाँच मुख्य बैंकों का यहाँ उल्लेख है वे बृटिश राष्ट्र की प्रायः सारी सम्पत्ति पर अपना एकछत्र शासन रखते हैं। उनकी कुल पूँजी करीब २०,५०,००००० पौंड हैं, और जो रकम उनके यहाँ करेन्ट डिपाजिट (Current deposit) तथा अन्य विविध खातो में जमा है उसकी तादाद तो २ अरब, १ करोड़ पौंड से भी ऊपर पहुँच जाती है। समस्त बृटिश प्रजा की सम्पत्ति का यह एक बहुत बड़ा हिस्सा समझा जा सकता है। अस्तु इसमे सदेह नहीं कि, जैसा कि फैनेन्शियल टाइम्स का कहना है, ये बैंक यदि चाहे तो एक कमजोर सरकार की नींव को जड़ से हिला डालने की पूरी क्षमता रखते हैं।

बैंक के डायरेक्टर लोग साधारणतः किस श्रेणी के मनुष्यों मे से हुआ करते हैं इसका परिचय उनकी उस सख्या से मिल सकता है जिसे सन् १९३१ से लेकर आजतक वर्तमान 'राष्ट्रीय सरकार' के प्रधान मन्त्रियो द्वारा 'लार्ड' की उपाधि दिलवाइ जा चुकी है :—

बैंक आफ इग्लैंड . . . २
बार्क्लेज बैंक १

लयॉड बैंक ...
मिडलैंड बैंक ...
नैशनल प्राविन्शल बैंक ...
वेस्ट मिनिस्टर बैंक ..

ये बैंक देश के धन और व्यापार पर अपनी पूंजी के लिहाज से कही ज़्यादा शक्तिशाली हाथ रखते हैं। इनका अधिकार न केवल अपने हिस्सेदारो के ही धन पर रहता है, बल्कि करोड़ो अन्य व्यक्तियों की सम्पत्ति पर भी रहा करता है।

यही कारण है कि कुछ प्रजातंत्रवादी देशों में बैंकरों के राजनैतिक आचरणो पर प्रतिबंध लगा दिये गये हैं। उदाहरणार्थ ३० दिसम्बर सन् १९२८ को फ्रास में एक कानून इसी प्रकार का बना था, जिससे फ्रेंच पार्लिमेंट के मेम्बरो को अपनी मेम्बरी के समय तक किसी बैंक अथवा अन्य किसी महाजन-पेशा कंपनी के डायरेक्टर होने की मनाही करदी गई थी। इस कानून के पास होने में ५७५ वोट पक्ष में मिले थे और केवल ३ वोट विपक्ष में, जो इस बात को सिद्ध करता है कि जनता के विचार इस विषय में कितने जोरदार थे।

इंग्लैंड में इस प्रकार का कोई प्रतिबंध नही है। यहॉ कोई भी पार्लिमेंट का सदस्य, बैंक का डायरेक्टर बन सकता है और कोई भी बैंक का डायरेक्टर पार्लिमेंट का सदस्य हो सकता है। उदाहरणार्थ, इस समय भी एक डायरेक्टर बैंक आफ़ इंग्लैंड का, एक डायरेक्टर मिडलैंड बैंक का तथा दो डायरेक्टर नैशनल प्राविन्शल बैंक के पार्लिमेंट की मेम्बरी कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त पूर्वोक्त पॉचो मुख्य बैंकों के अनेक डायरेक्टर ऐसे भी हैं, जो पार्लिमेंट के भूतपूर्व सदस्य रह चुके हैं। और कुछ तो मंत्रिमंडल तक के भूतपूर्व पदाधिकारी रह चुके हैं।

उदाहरणार्थ, वाईकाउन्ट रन्सीमैन (Vicount Runciman) जो सन् १९२४ से १९३१ तक वेस्ट मिनिस्टर बैंक के

डायरेक्टर थे पार्लिमेट मे भी सन् १६२४ से सन् १६३७ तक मेम्बरी कर रहे थे। सन् १६३१ मे वह मन्त्रीमडल मे दाखिल हुए। अतएव उक्त डायरेक्टरी से उन्हे इस्तीफा दे देना पड़ा। सन् १६३७ मे वह 'पीयर' (Peer) के पद पर चढ़ा दिये गये और वे फिर उसी बैंक के डायरेक्टर निर्वाचित हुए। अत मे १६३८ मे जब वे पुनः मन्त्रीमडल मे पहुँचे तब उन्हे फिर अपनी इस डायरेक्टरी से इस्तीफा देना पड़ा।

इसी प्रकार वाइकाउन्ट हार्न (Viscount Horne), जो इस समय लायड बैंक के डायरेक्टर है, सन् १६१६ मे मजदूर विभाग के मत्री (Minister of Labour) थे, सन् १६२०-२१ मे बोर्ड आफ ट्रेड के प्रेसिडेन्ट थे तथा सन् १६२१-२२ मे चान्सलर आफ एक्सचिकर थे। ये सब पदाधिकार उन्हे स्वभावतः मन्त्रिमडल के सदस्य की ही हैसियत से मिले थे। इनके अतिरिक्त वह सन् १६१८ से १६३७ तक अनुदार दल की ओर से पार्लिमेन्ट के मेम्बर भी रह चुके हैं।

इसी प्रकार और भी कितने ही बैंक डाइरेक्टरो के उदाहरण दिये जा सकते हैं। ये तमाम बडे-बडे बैंक-डायरेक्टर अनुदार दल मे तथा देश के शासन मे भी समय समय पर अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग लेते रहे हैं।

इनके अतिरिक्त अनेकों बैंक-डायरेक्टरो तथा पार्लिमेट के मेम्बरों में कौटुम्बिक सम्बन्ध भी स्थापित है। उदाहरणार्थ, अनुदार पार्लिमेटी मेम्बर, वाईकाउन्ट उल्मर (Viscount Wolmer M. P.) के पिता लायड बैंक के डायरेक्टर हैं। इसी प्रकार लार्ड रिचार्ड कैवेनडिश (Lord Richard Cavendish) भी जो स्वय किसी समय में पार्लिमेन्ट के सदस्य रह चुके हैं, इस समय दो अनुदार पार्लिमेटी सदस्यो के श्वसुर होते हैं।

अभी तक जिन बैंक-डायरेक्टरो का उल्लेख किया गया है वे सब इंगलिस्तान के केवल पाँच सबसे बडे बैंको के ही डायरेक्टर थे। इनके अतिरिक्त लगभग ग्यारह और भी ऐसे बैंक हैं जिनके डायरेक्टर

पार्लिमेन्ट के मेम्बर हैं। इन सबो का अलग-अलग व्यौरा देने के लिए बहुत ज्यादा स्थान की जरूरत होगी। अतएव संक्षेप में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इस समय कामन्स सभा (House of Commons) में सरकारी पक्ष के करीब सोलह मेम्बर ऐसे हैं जो भिन्न-भिन्न बैंकों के डायरेक्टर हैं। इनमें से जो लोग बड़े बैंको के डायरेक्टर हैं वे देश के शासन में मुख्यरूप से भाग लेना अपना स्वाभाविक अधिकार मानते है, और यही लोग अनुदार दल के नेताओ में भी समझे जाते हैं।

बीमा कपनियो का भी महत्व आर्थिक जगत् में बैंको से किसी प्रकार कम नही रहता। वे भी अपार धन-भंडार की स्वामिनी होती हैं और उनका सरकार पर बड़ा भारी ऋण रहता है। इस समय क़रीब ३५ करोड़ पौड का सरकारी काग़ज केवल उनके ही अधिकार में है। यदि धन के विचार से मिलान करके प्रति लाख पौड देखा जाय तो जान बीमा कंपनियो की आर्थिक शक्ति बैंको की अपेक्षा भी अधिक रहती है, कारण कि उनके फंड का एक बहुत बड़ा भाग साधारण शेयरो और स्टाकों मे लगा रहता है, जिससे उनका प्रभुत्व देश के वाणिज्य और व्यवसाय के एक बहुत बड़े अंश पर कायम हो जाता है।

वर्तमान सरकारी पक्ष मे इनका प्राधान्य कितना जबर्दस्त रहा करता है इसका अन्दाज़ा केवल इसी से किया जा सकता है कि बृटिश मंत्रि-मंडल के अनेकानेक सदस्य किसी न किसी जान बीमा कंपनी से अवश्य सम्बंध रखते हैं और उसके भूतपूर्व डायरेक्टर रह चुके हैं। उदाहरणार्थ, लार्ड हेल्शम, अर्ल विंटरटन, सर सैमुअल होर आदि सभी मन्त्री-गण जान बीमा कंपनियों के भूतपूर्व डायरेक्टर कहे जा सकते हैं। तारीख २७ अक्टूबर सन् १९३८ को विलायत के इविनिंग स्टैन्डर्ड' (Evening Standard) नामक पत्र ने लार्ड हेल्शम के मन्त्रि-मंडल से अलग होने की सभावना पर टिप्पणी करते हुए लिखा थाः—

"हमारा खयाल है कि अब वह बड़ी-बड़ी जान बीमा कपनियों की कौन्सिल में घुसेंगे"।

इसके अतिरिक्त बैंकों के बोर्ड आफ़ डायरेक्टर्स और जान बीमा कपनियों के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स में भी बड़ा घना सम्बन्ध रहा करता है। एक के डायरेक्टर बहुधा दूसरे के भी डायरेक्टर बने दिखाई देते हैं। साथ ही लगभग २७ अनुदार पार्लिमेन्टी मेंबर ऐसे भी हैं जो करीब ४२ महाजन-पेशा कपनियों (Finance Companies) में भी डायरेक्टर हैं। इनमे से कुछ कपनियाॅ तो इतनी बड़ी हैं कि उनकी पूॅजी तथा कारबार करोड़ो पौड तक पहुॅचती है।

पूर्व कथित पाॅच मुख्य बृटिश बैंकों तथा कुछ सबसे बड़ी जान बीमा कपनियों के बोर्ड में जो लोग सदस्य हैं उन्हीं मे से अधिकाश लोग बृटिश द्वीप की मुख्य-मुख्य व्यवसायी कपनियों के भी प्रधान बने हुए हैं। उदाहरणार्थ बेंक-डायरेक्टरों मे से लार्ड पेरी (Lord Perry), जिन्हे विलायत की वर्तमान राष्ट्रीय गवर्नमेंन्ट की ओर से अभी हाल मे लार्ड की उपाधि दी गई है, इस समय बृटेन मे तथा अन्य नौ देशों मे स्थापित फोर्ड मोटर कपनी के भी चेयरमैन हैं। इसी प्रकार लार्ड स्टाम्प, लार्ड पेन्डर, लार्ड डेविस, लार्ड मेकगाउन (Lord McGowan, Chairman of Imperial Chemical Industries), लार्ड एसेन्डन आदि कितने ही व्यक्तियों के नाम गिनाये जा सकते हैं। ये सब लोग बैंको के डायरेक्टर होने के साथ ही विलायत की बड़ी से बड़ी व्यापारी कपनियों के भी चेयरमैन अथवा मैनजिंग डायरेक्टर हैं।

अस्तु, विलायत के बडे-बडे बैंको की जो नीति स्थिर होती है वही वास्तव मे वहाॅ के सबसे बडे व्यापारी मडल की सामूहिक नीति कही जा सकती है। बैंको तथा अन्य बड़ी व्यापारी कपनियों मे किसी प्रकार का मतभेद अथवा स्वार्थों की टक्कर नहीं दिखाई देती, कारण कि दोनों ही का शासन-सूत्र वास्तव मे एक ही व्यक्तियों के हाथ में है।

इस प्रकार बैंक तथा जान-बीमा कंपनियाँ विलायत के उस व्यवसायि-मंडल के साथ अभिन्नरूप से मिली हुई हैं, जो कि वहाँ के मजदूरो का सबसे बड़ा मालिक-वर्ग कहा जा सकता है; और यही लोग अधिकतर अपने-अपने संघो (Employers Organisations) द्वारा व्यवसायिक नीति को निश्चित करने में भी पूरा हाथ रखते है। इस प्रकार के बड़े-बड़े सघो मे से एक का नाम **"फ़ेडरेशन आफ़ बृटिश इन्डस्ट्रीज़"** है। यह सघ सन् १६१६ मे स्थापित किया गया था और इस समय इसमें व्यक्तिगत रूप से लगभग २६०० व्यापारिक सस्थाएँ सदस्य हैं तथा करीब १८० व्यापारिक-मडल इसमें सामूहिक रूप से भी शामिल हैं।

यह फेडरेशन समय-समय पर बृटिश समाज के लिए कई आवश्यक क़ानूनो के बनते समय पार्लिमेंट पर अपना प्रभाव साबित कर चुका है। सब से पहिले इसने सन् १६१८ के शिक्षा-सम्बंधी क़ानून तथा 'अतिरिक्त लाभ-कर' (Excess Profits Tax) के विरुद्ध आन्दोलन उठाया था। प्रत्यक्ष कर (direct taxation) की वृद्धि के विरुद्ध इसका विरोध सदा से देखा जाता रहा है।

प्रति वर्ष सरकारी बजट पेश होने के पहिले इसकी ओर से एक मेमोरेन्डम तैयार किया जाता है, जिसमें टैक्सो के सम्बंध मे तथा दूसरे सुधारों के बाबत व्यापारी मंडल की क्या राय है इसका वर्णन रहता है। यह मेमोरेन्डम अर्थ-मत्री (Chancellor of the Exchequer) के पास भेज दिया जाता है। पश्चात् इस के साथ सम्बध रखने वाले तमाम पार्लिमेंटी सदस्य तथा उनके सहायक लोग बजट को उसी मेमोरेन्डम के अनुकूल तैयार करने के लिए सरकारी मत्रियो पर अपना-अपना दबाव डाला करते हैं।

अभी हाल की बात है कि सरकार की ओर से पार्लिमेंट मे एक बिल प्रस्ताव के रूप मे रखा गया था, जिसका मतलब यह था कि बृटिश सैनिक तैयारियों के लिए जो खर्च की आवश्यकता आ पड़ी

है उसका कुछ हिस्सा बडे व्यापारियों पर टैक्स लगा कर वसूल किया जाय। इसपर उपरोक्त फेडरेशन ने अन्य कई व्यापारी-मडलों के साथ मिलकर तारीख २७ मई सन् १९३७ को यह प्रस्ताव पास किया कि जब तक उक्त सरकारी बिल में "भरपूर सशोधन" (drastic amendments) न किया जाय तब तक वह 'कर देने वालों को किसी प्रकार स्वीकार नही हो सकती।' अत मे सरकार को झुक जाना पड़ा और फेडरेशन की पूरी-पूरी विजय हुई। बिल वापस ले लिया गया, और उसके स्थान पर जो नया बिल बाद मे पेश हुआ उसमे फेडरेशन की इच्छानुसार ही तमाम बातो मे सशोधन कर दिया गया था।

यह 'फेडरेशन' व्यवसाय-मालिकों की केवल एक संस्था है। इसके अतिरिक्त अलग-अलग प्रकार के व्यवसाइयों के और भी बहुत से अलग अलग सघ कायम हैं, जिनमे से अधिकाश के कोई न कोई कार्य-कर्ता पार्लिमेट मे अनुदार-दल की ओर से सदस्य बने हुए हैं। नीचे इन पार्लिमेटी सदस्यों के नाम सहित केवल कुछ थोडे से उक्त सघों की एक सूची दी जा रही है, जिससे पाठकों को प्रत्यक्ष हो जायगा कि वर्तमान सरकारी अनुदार पक्ष मे बडे-बड़े व्यापारियों का कैसा प्रतिनिधित्व है :—

संघों के नाम	सन् १९३८ में सदस्यों के नाम जो पार्लिमेंट में अनुदार दल की ओर से बैठते है
१—फेडरेशन आफ़ बृटिश इन्डस्ट्रीज ...	सर पैट्रिक हैनन (वाइस प्रेसिडेन्ट)
२—नैशनल यूनियन आफ़ मैन्युफैक्चरर्स ...	सर पैट्रिक हैनन (प्रेसिडेन्ट)
३—नैशनल चेम्बर आफ ट्रेड ...	सर जार्ज मिट्केसन (Sir George Mitcheson) (वाइस प्रेसीडिन्ट)
४—एसोसियेशन आफ़ बृटिश चेम्बर आफ कामर्स	सर एलन एन्डर्सन—(भूतपूर्व सभापति)
	सर चार्ल्स गिब्सन—(डिप्टी प्रेसिडेन्ट)
	लेप्ट० कर्नल राइट आनरेबुल जानकाल बिल (अब आप स्काटलैंड के सेक्रेटरी आफ़ स्टेट हैं) (भूतपूर्व आनरेरी वाइस प्रेसिडेन्ट)
	जे० एस० डाड (मंत्री)
५—फेडरेशन आफ़ चेम्बर्स आफ कामर्स आफ दि बृटिश इम्पायर ...	सर चार्ल्स गिब्सन—(कार्य-कारिणी सामिति के सदस्य)
	सर पैट्रिक हैनन —(सन् १९३० की कान्फरेंस के सभापति)
६—इन्टरनैशनल चेम्बर आफ कामर्स ...	सर एलन एन्डर्सन—(आनरेरी प्रेसीडेन्ट)
	सर चार्ल्स गिब्सन—(बृटिश कमेटी के मेम्बर)
७—बृटिश जूनियर चैम्बर आफ कामर्स ...	जे० एस० डाड—(सेन्ट्रल कमेटी के भूतपूर्व चेयरमैन)

तमाम व्यवसाय-संघों की सम्पूर्ण सूची देने में कई पृष्ठ भर जॉयगे। इसलिए इतने ही से संतोष करते हैं। इसी प्रकार जागीरदारों के भी कई एक सघ ऐसे हैं, जिनके चुने-चुने कार्य-कर्ता लोग अनुदार सरकारी दल की ओर से पार्लिमेंट मे बैठते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पार्लिमेंट मे सरकारी अनुदार पक्ष का एक बड़ा जबर्दस्त हिस्सा बृटिश समाज के उस वर्ग से लिया गया है जो या तो जमीन और जायदाद का मालिक है अथवा अपने कारखानों मे मजदूरो से काम लेता है। इस वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति का मुख्य निजी स्वार्थ केवल इस बात मे है कि अधिक से अधिक अपनी आमदनी करने और डिवीडेन्ड बटोरने के लिए सरकार से किस प्रकार भॉति-भॉति की सहूलियते प्राप्त की जॉय। मिस्टर मारिस हेली हचिन्सन (Mr. Maurice Hely Hutchinson, M. P.) ने स्वय एक बार कहा था कि,

"धन का हेर-फेर ही मेरा पेशा है। मैं जानता हूॅ कि यही समस्त व्यापार की जननी है, जिसका पिता मुनाफे का प्रेम है।"

यह उक्ति उपरोक्त वर्ग के तमाम अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो पर लागू कही जा सकती है, और चूॅकि इस प्रकार के सदस्यों की ही सरकारी पक्ष मे प्रधानता है, अतएव सरकार की नीति और आदर्शों पर भी इसकी गहरी छाप पडे विना नहीं रह सकती। यही कारण है कि सन् १९२९ में 'डि-रेटिग ऐक्ट' (De-rating Act, 1929) नामक कानून वनाया गया था। इस कानून के द्वारा व्यापारियों पर लगा हुआ रेट्स ७५% कर माफ कर दिया गया, जिससे सन् १९३० से लेकर सन् १९३७ तक मे व्यापारियों की जेव के करीव १७ करोड़ पौंड वच गये। इस कानून की सारी जिम्मेदारी मिस्टर चेम्बरलेन पर ही थी, जो इस वात का एक दूसरा उदाहरण है कि अनुदार सरकारी दल किस प्रकार अपने पक्ष का फैसला अपने ही हाथों से कर लिया करता है। ध्यान रहे कि अधिकाश अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यों

की भाँति मिस्टर चेम्बरलेन भी स्वयं बड़ी-बड़ी व्यापारी कंपनियो के हिस्सेदार हैं। उपरोक्त कानून के बनने से सरकारी आय में जो भारी घाटा हुआ उसकी पूर्ति के लिए दूसरे प्रकार के टैक्स गरीब जनता पर लाद दिये गये। अर्थात् ग़रीब जनता की गाँठ कतर कर अमीर व्यापारियो के भरे हुए जेब को और अधिक भरा गया।

यही दशा सरकारी टैक्सो के सम्बध में भी दिखाई देती है। सन् १६३१ से १६३६ तक अमीरो पर लगे हुए टैक्स की रकम तो करीब-क़रीब एक ही सी बनी रही, किंतु ग़रीबो पर टैक्स की बहुत ज़्यादा वृद्धि कर दी गई। प्रमाण स्वरूप सन् १६२६-३० में इनकम टैक्स और सटैंक्स से होने वाली आमदनी की रक़म करीब २६ करोड़ ४० लाख पौड थी, और सन् १६३५-३६ में भी यह रकम केवल २८ करोड़ ६० लाख पौड ही रही, किंतु इन्ही वर्षो में सरकारी चुंगी की आमदनी १२ करोड़ पौड से बढ़ कर १६ करोड़ ६० लाख पौड तक पहुँच गई। कहना न होगा कि यह चुगी की आमदनी का अधिकाश बोझ वस्तुओ का मूल्य बढ़ जाने से सदा ग़रीबो के ही शिर पर लदता है।

इस प्रकार ग़रीबो की गाँठ से दिन पर दिन अधिक पैसा निकालने की नीति का अवलम्बन सन् १६३१ से किया जा रहा है, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी उस अनुदार सरकारी बहुमत पर है, जिसके अधिकाश सदस्य सटैंक्स अदा करने वाले बेहद अमीर है। सन् १६३७ के बाद सैनिक तैयारियो के कारण खर्च बढ़ जाने से अवश्य ही सरकार को मजबूर हो कर अमीरो पर भी कुछ टैक्स बढ़ाने पड़ गये हैं, किंतु फिर भी यह नये टैक्स की रकम उस रकम के मुकाबले में कुछ भी नहीं है जो अमीर व्यापारियो के समूह ने सैनिक तैयारियों के लिए नये-नये आर्डर सप्लाई करने में पैदा कर ली है।

टैक्स-सम्बंधी कानूनो का ग़रीबों और अमीरो की आपेक्षिक स्थिति पर बिल्कुल सीधा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार समाज पर ऐसे कानूनों

का प्रभाव भी कम महत्वपूर्ण नहीं होता, जिनके द्वारा लोगो की आर्थिक स्थिति तथा रहन-सहन मे सुधार किया जाता है। अस्तु, अब तक मजदूर-सम्बधी कानूनों के विषय में व्यापारी मालिकों से भरी हुई इस सरकार ने क्या किया है यह प्रश्न ध्यान देने योग्य है। डाक्टर डब्लू० ए० राब्सन, जो कि इस सम्बध मे एक विशेषज्ञ कहे जा सकते हैं, अपनी राय इस प्रकार देते हैं:—

"जहाँ तक मजदूरो के जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा का प्रश्न है, तथा उनके काम करने के घटों को निश्चित करने एव उनके बच्चो को काम मे लगाने का सवाल है, हम यह कह सकते हैं कि हमारा 'मजदूर कानून' बिल्कुल मुर्दा हो गया है अथवा बहुत ही त्रुटिपूर्ण बन गया है, इस सम्बध मे हमारी कानूनी ऊँचाई पिछले तीस साल से बराबर नीचे ही की ओर गिरती जा रही है। उन्नीसवी शताब्दी मे जो कुछ हमने इस सम्बध मे कर दिखाया था उससे भी हम इस समय पीछे हट गये हैं और दूसरे देशों की अपेक्षा हम बहुत पिछडे हुए दिखाई देते हैं।"

मजदूरों के हितों की रक्षा का कानून स्वभावतः कारखाने के मालिकों की निरकुशता पर एक प्रकार का बधन सा सिद्ध होता है। यह मालिकों को अपने मजदूरो से एक निश्चित समय से अधिक काम नहीं लेने देता, एक निश्चित उम्र से काम अवस्था वाले बच्चों को भी कुछ विशेष प्रकार के कामों मे लगाने से रोकता है, तथा मजदूरों की मजदूरी भी एक निश्चित दर से कम नहीं देने देता। इस प्रकार देश के व्यवसाय पर जनतंत्र शासन का यह एक प्रकार से श्रीगणेश सा कहा जा सकता है। अतएव कारखाने वालो को स्वभावतः यह सब नापसद होना ही चाहिए। उनकी समझ में ये सब मामले हर एक फैक्टरी मालिक के लिए व्यक्तिगत रूप से स्वय तय करने के हैं। सरकार को उनमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसमे सदेह नहीं कि समय के प्रवाह से ये लोग भी मजदूरों के हक मे इस समय कुछ थोडी बहुत कानूनी गुंजाइश करने को तैयार हैं, किंतु अधिक पतिबध ये अपनी निरकुश

शक्ति पर किसी प्रकार नही लगने देना चाहते। अस्तु, यही कारण है कि जिस समय प्रजातंत्रवादी फ्रांस में मजदूरो से अधिक से अधिक चालीस घटे प्रति सप्ताह काम लिये जाने का क़ानून बना था, इंगलैंड में उस समय कितने ही प्रकार के कारखानों में ६०-६० घटे तक काम लेने की प्रथा मौजूद थी।

इसी प्रकार मज़दूरो के खेसारे से सम्बध रखने वाले क़ानूनों (Laws for workmen's compensation) के विपय मे भी बृटिश ट्रेड यूनियनों की शिकायत एक ज़माने से चली आ रही है। उसके अतिरिक्त अभी हाल में जातीय स्वास्थ्य-बीमा (National Health Insurance) सम्बधी कानून में कुछ सुधार करने के लिए विलायत के बृटिश मेडिकल एसोसियेशन ने कुछ सिफारिशे की थी, किंतु मिल-मालिको को इससे अपने मजदूरो के वास्ते और पैसे खर्च करने पड़ते इसलिए उनकी अनुदार सरकार ने उन सिफारिशों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वास्तव में जब तक देश में जनसत्तात्मक शासन न क़ायम हो, तब तक वहाॅ सार्वजनिक हित के कामो की कोई विशेष आशा नही की जा सकती। ग्लैड्स्टन (Gladstone) ने एक बार कहा था:—

"हम यह हर्गिज़ मानने को तैयार नही कि देश का कोई भी विशिष्ट वर्ग, जनता की इच्छा के विरूद्ध इस राष्ट्र के भाग्य का नियंत्रण करने का अधिकारी हो सकता है, चाहे वह वर्ग अमीरो का हो अथवा शरीफो का अथवा किसी दूसरे प्रकार का हो।"

वास्तव में जनतंत्रवाद का यही सच्चा आदर्श है जो बृटिश अनुदार दल के राजनीतिज्ञो के विचारो से बिल्कुल भिन्न है। इन राजनीतिज्ञों का तो एकमात्र आदर्श केवल अपने व्यापार को ही बढ़ाना तथा उसके द्वारा धन प्राप्त कर के अपनी शक्ति एवं अधिकार में उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना है। जनतंत्रवादी भावों को भला ऐसो के पास कैसे स्थान मिल सकता है।

तीसरा अध्याय

गोला-बारूद के कारखाने वाले पार्लिमेंट के मेम्बर हैं

"लार्ड वेमिस (Lord Wemyss) को विश्वास था कि लड़ाई के असली पैदा करने वाले वे लोग है जो एक बहुत ही अलग स्थान मे पाये जाते है। लड़ाई छिड़ने से वर्षों पहले उन्होंने युद्ध-सामग्री ट्रस्टों (Armament trusts) की घृणित कार्रवाइयों को देखा, उन्होंने देखा कि किस प्रकार ये ट्रस्ट वाले पत्रकारों की मुट्ठी गरम करके भिन्न-भिन्न देशों के सार्वजनिक मत को प्रभावित किया करते है और फिर किस प्रकार राष्ट्रों के बीच वे सन्देहात्मक भावों को उत्पन्न करके आपस मे द्रोह तथा शत्रुतापूर्ण वातावरण फैलाते है और फिर किस प्रकार अंतराष्ट्रीय झगड़ों को वे लोग उभाड़ दिया करते है।"—(Biography of Lord Wester Wemyss, First Sea Lord, 1917-19).

जार्ज तृतीय के राज्य-काल मे पार्लिमेंट से एक कानून पास हुआ था, जिसके अनुसार किसी सरकारी कन्ट्राक्टर (अर्थात् ठेकेदार) के लिए पार्लिमेंट में बैठना जुर्म बतलाया गया था। उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि ऐसा व्यक्ति यदि पार्लिमेंट का सदस्य बनेगा तो स्वभावतः उसके निजी स्वार्थो का उसके सार्वजनिक कर्तव्यो के साथ विरोध पड़ेगा, अतएव इसके लिए ऐसा अवसर आने ही न दिया जाय। वास्तव मे यही अकेली एक ऐसी मिसाल है जिसमे पार्लिमेंट की ओर से उसके सदस्यो पर यह सिद्धांत लागू करने की चेष्टा की गयी है कि "कोई व्यक्ति अपने हाथ से स्वय अपने पक्ष में फैसला नहीं दे सकता।"

किंतु इस कानून में भी दुर्भाग्यवश कुछ त्रुटि बनी ही रह गयी, कारण कि यह सामूहिक रूप से काम करने वाली कम्पनियों पर लागू नहीं होता, जिससे सरकारी ठेका लेने वाली कंपनियो के हिस्सेदार और डायरेक्टर लोग बिना किसी रुकावट के पार्लिमेंट में बैठ सकते हैं। अस्तु, युद्ध-सामग्री तैयार करने वाली कम्पनियों के भी हर एक हिस्सेदार और डायरेक्टरगण पार्लिमेंट की मेम्बरी करने के हक़दार समझे जाते हैं।

सन् १९३६ के रायल कमीशन की एक सिफ़ारिश यह थी कि युद्ध-सामग्री बनाने वाली कम्पनी में कोई भी सरकारी अफ़सर, चाहे वह सरकारी नौकरी पर हो या नौकरी से अलग हो चुका हो, बिना उस विभाग के मत्री की आज्ञा प्राप्त किये कोई नौकरी न कर सकेगा, जिसमें वह काम कर रहा हो। इस प्रकार की सिफारिश का एक मुख्य कारण यह था कि सरकारी अफसरो को यदि किसी कम्पनी की ओर से एक भारी तन्ख्वाह पर नियुक्ति पाने की लालच मिल जाती थी तो वे संभवतः उस कपनी पर अपनी अनुचित कृपा दिखला सकते थे। फिर भी ये सरकारी अफसर अपने विभाग के मुख्य अधिकारी के प्रति सदा उत्तरदायी रहा करते है। अतएव बिना किसी विशेष कानून के भी उनका यह पक्षपातपूर्ण व्यवहार विभाग के अधिकारी द्वारा हर समय रोका जा सकता है। परन्तु पार्लिमेंटी सदस्य के ऊपर तो कोई भी ऐसी रुकावट नही है। वह तो सरकार की युद्ध-व्यय सम्बन्धी सपूर्ण नीति को भी अपने अनुकूल बनाने के लिए हर प्रकार की कुचेष्टाऍ कर सकता है। उदाहरण के तौर पर वह युद्ध-सामग्री के खर्च का एस्टिमेट (Estimate) बढ़वाने के लिए जोर दे सकता है, जिसमें उसका निजी लाभ है, सैनिक ठेके से मनमाना लाभ कमाने के लिये सरकारी प्रबध मे ढील डलवा सकता है तथा सरकारी परराष्ट्रनीति की गति मे भी इस प्रकार के प्रभाव पैदा कर सकता है, जिससे युद्ध-

सामग्री की माग यकायक बढ़ जाय और उसको अपनी जेब भरने का मौका मिले।

इसी कारण योरोप के अन्य कई देशो के शासन-विधान मे इस प्रकार के कुछ शब्द जोड़ दिये गये हैं जिससे युद्ध-सामग्री तैयार करने वाले कारखानो के डायरेक्टर लोग वहाँ की पार्लिमेंट में नहीं जा सकते। चेकोस्लेवाकिया, पुर्चगाल, हगरी, जुगोस्लाविया, पौलैंड, लैटविया तथा यूनान सभी के शासन विधान मे इस प्रकार के नियम पाये जाते है। इंग्लैंड के लोकल ऐक्ट मे भी इसी प्रकार का एक नियम मौजूद है, किंतु, कामन्स सभा के लिए कोई भी ऐसा नियम नहीं।

इस सबन्ध मे पिछले महायुद्ध (सन् १९१४) के छिड़ने से कुछ ही महीने पहिले एक लेखक ने अपनी राय इस प्रकार लिखी थी :—

"यदि आज कोई मत्री अपनी भूमि का एक टुकडा उस सरकार के हाथ बेच दे जिसका वह पदाधिकारी है, तो चारों ओर निदा की जीभ चटकने लग जाय। . . किंतु लड़ाई के जहाज, तोप, बदूक, गोला-बारूद तथा अन्य तमाम सैनिक वस्तुओ की खरीदारी ऐसी कम्पनियों से करना जिनमे इन्ही मत्रियो के दोस्त, सहायक और रिश्तेदार लोग मैनेजर, डायरेक्टर अथवा हिस्सेदार बने हैं, बृटिश शासन-विधि का एक साधारण अग दिखाई देता है।......यह बात बिल्कुल कानून के अंदर समझी जाती है कि इन कम्पनियों का कोई भी डायरेक्टर कामन्स सभा मे बैठ कर उस व्यय मे वृद्धि की माग पेश करे जिसका कुछ हिस्सा उसके कारखाने को मिलता है। केवल कानून के अदर ही नहीं, बल्कि यह देशभक्ति का एक प्रबल प्रमाण भी समझा जाता है कि किसी बडे दल के नेता लोग देश में घबराहट का वह तूफान पैदा करे, जिसके परिणाम में उनके साथियों के घर आमदनी की बरसात हो जाय।"

इसी प्रकार सन् १६१४ की कामन्स सभा में इसी सम्बंध में बोलते हुए मिस्टर फिलिप स्नोडन ने भी कहा था :—

"अब, हिस्सेदार कौन लोग हैं ? इनकी पूरी सूची बतलाने में तो बहुत समय लग जायगा। केवल थोड़े से चुने हुए नाम दे देता हूँ। किंतु मैं देखता हूँ कि इस सभा के माननीय सदस्यगण ही इस सूची मे अधिकतर मौजूद हैं। सच तो यह है कि ऐसा कोई पत्थर विरोधी बेंचो की तरफ़ फेंकना असंभव है जो किसी ऐसे सदस्य को लगे जो इन्ही में से किसी न किसी फर्म का हिस्सेदार न हो।"

अब जरा देखिए कि सन् १६१४ से वर्तमान अवस्था में क्या अंतर पड़ा है ? इस समय युद्ध-सामग्री की माँग बढ़ने में जिन पार्लिमेंटी अनुदार सदस्यों का स्वार्थ है उनमें से सबसे महत्वपूर्ण नाम ये हैं :—

पार्लिमेंटी सदस्यों के नाम	**युद्ध-सामग्री के कारखाने जिनके वह डायरेक्टर हैं**
राइट आनरेबुल सर जान एन्डर्सन	वाइकर्स क० (Vickers Co.) (मंत्रिमडल मे पहुँचने के समय तक)
राइट आनरेबुल एल० एस० एमरी	कैमेल लेयर्ड (Cammel Laird)
सर यूजीन रैम्सेडेन	बी० एस० ए०
सर पैट्रिक हैनन	बी० एस० ए०

यह केवल कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण कपनी-डायरेक्टरो के थोड़े से नाम हैं। हवाई जहाज-सम्बंधी कपनियो के जो लोग डायरेक्टर हैं ऐसे अनुदार सदस्यो की सख्या कम से कम २३ हैं। इनके अतिरिक्त बहुत सी ऐसी कपनियो के भी डायरेक्टर पार्लिमेंट के सदस्य हैं, जिनका स्वार्थ युद्ध-सामग्री तैयार करने वाले कारखानो के साथ जुड़ा हुआ है। उदाहरणार्थ, बहुत से इन्जीनियरिंग फ़र्म कुछ अशो में अपने काम के लिए केवल सैनिक तैयारियों पर ही निर्भर हैं। इनके अतिरिक्त लोहे, कोयले, और फ़ौलाद का काम करने वाले कारखाने भी इन्ही के साथ

शामिल हैं। इन सबों की सूची उनके पार्लिमेंट मे बैठने वाले डायरेक्टरों के साथ प्रथम अध्याय मे दी जा चुकी है।

वाइकर्स कपनी का कारखाना युद्ध सामग्री तैयार करने के लिए दुनिया मे सबसे बड़ा समझा जाता है। इगलैंड के अतिरिक्त स्पेन, जापान आदि दूसरे देशों मे भी इसका बड़ा भारी कारबार फैला है। सन् १६३१ और १६३८ मे, जिस समय राष्ट्रो के निःशस्त्रीकरण की वास्तविक आशा की जा रही थी, इस कपनी की आमदनी को काफी धक्का पहुंचा, जिसका रोना उसके चेयरमैन के मुंह से सन् १६३२ की वार्षिक जेनरल मीटिंग मे इस प्रकार सुनाई देता था:—

"संसार भर मे फैली हुई व्यापार की मदी और सार्वजनिक मत के दबाव में पड़कर निःशस्त्रीकरण सम्बधी होने वाली चर्चा दोनो ही ने मिल कर आपके व्यापार को बहुत अधिक धक्का पहुँचाया है।"

किंतु अब उन्हे खुश होना चाहिये। निःशस्त्रीकरण कान्फरेंस बिल्कुल असफल सिद्ध हुई और लीग आफ नेशन्स भी, जिसे उक्त चेयरमैन साहब घृणापूर्वक 'एक झंझटी सस्था' तथा 'तमाशे की चीज' कह कर पुकारते थे, अब एक कोने मे डाल दी गई। साथ ही इग्लैंड तथा अन्य कितने ही राष्ट्र एक दूसरे की शक्ति को आजमाने के लिए अब सैनिक तैयारियों की दौड़ मे अपनी-अपनी जान की बाजियाँ लगा रहे हैं।

सैनिक तैयारियों के सम्बध मे सरकारी खर्च जैसे-जैसे बढ़ता गया, वैसे ही वैसे वाइकर्स कपनी के डिवीडेन्ड की रकम भी तेजी के साथ बढने लगी। सन् १६३३ मे यह डिवीडेन्ड ४% बाँटा गया था, सन् १६३५ मे यह बढ कर ८% हो गया और फिर सन् १६३६ तथा १६३७ में यह १०% हो गया।"

---

*अब तो युद्ध छिड़ गया है। इसलिए अब इसके मुनाफे का क्या कहना है। पाँचो उँगली घी में हैं। —ह० प्र० गोयल

सन् १९३६ में शस्त्रास्त्रों की तैयारी एंव व्यापार के सम्बंध में जॉच करने के लिए जो शाही कमीशन नियुक्त हुआ था उसकी एक बैठक में सर फिलिप गिब्स ने वाइकर्स कपनी के सर हर्बर्ट लारेन्स साहब से प्रश्न किया था किः—

"अब जापान मे जो बड़ी ज़बर्दस्त नौसैनिक नीति अख्ति.तयार की जा रही है उससे तो आप को ज़रूर कुछ वास्तविक लाभ होगा ?"

लारेन्स साहब ने जवाब दिया, "ज़रूर।"

वाइकर्स के समान कैमेल लेयर्ड कं० (Cammel Laird & Co. Ltd.) के भी डिवीडेन्ड वृटिश सैनिक तैयारियो के समय से तेजी के साथ बढ़े, जैसा कि नीचे देखने से मालूम होगाः—

सन् १९३३-३४	..	डिवीडेन्ड कुछ नहीं
,, १९३५	..	३$\frac{1}{3}$%
,, १९३६	..	५%
,, १९३७	...	८$\frac{1}{2}$%

कैमेल लेयर्ड ऐन्ड क० जहाज तैयार करने का काम करती है और उसमे इन्जीनियरिंग का काम भी होता है। सन् १९३४ में उसके चेयरमैन ने वृटिश नौ सेना-विभाग के तैयारी-सम्बंधी कार्यक्रम की प्रशसा करते हुए कहा था किः—

"हमारी कपनी इस कार्यक्रम के लिए नौ सेना-विभाग की अत्यंत आभारी है, जिसने उसे नष्ट होते-होते नया जीवन दे दिया।"

बी० एस० ए० कपनी भी विलायत की एक बड़ी शक्तिशाली कपनी है। इसका पूरा नाम 'बर्मिंघम स्माल आर्म्स' (Birmigham Small Arms) है। यह फौजी चीजे, खेल की चीजें, मशीन-गन, वायुयान के पुर्जें, बाइसिकिल, मोटरकार इत्यादि अनेको प्रकार के सामान तैयार करती है। पार्लिमेट में इस समय इसके दो डायरेक्टर अनुदार दल की ओर से सदस्य हैं। उनके अतिरिक्त मिस्टर चैम्बरलेन

भी पहिले इस कपनी के डायरेक्टर रह चुके हैं। ये सब लोग अनुदार दल के शक्तिशाली

यह केवल कुछ इनी-गिनी सबसे जबर्रस्त कपनियों की चर्चा की गई है। इनके अतिरिक्त, जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, २३ पार्लिमेटी सदस्य हवाई जहाज सम्बधी कपनियों के भी डायरेक्टर हैं। उदाहरण के तौर पर यहाँ केवल दो नाम लिख दिये जाते हैं: एल्विस लिमिटेड (Alvis Ltd.) हवाई जहाज के एजिन तैयार किया करती है और सेना के लिए मशीन तथा सामान सप्लाई करती है। इसके एक डायरेक्टर मिस्टर एडगर ग्रैन्विल राष्ट्रीय उदार दल की ओर से पार्लिमेट के सदस्य हैं। इसी प्रकार पेटर्स लिमिटेडे (Petters Ltd.) भी एक दूसरी हवाई जहाज बनाने वाली क० की आधी सम्पति की हिस्सेदार है। इसके भी एक डायरेक्टर मिस्टर फ्रेवेन एलिस पार्लिमेट के मेम्बर हैं।

किंतु केवल हवाई जहाज और युद्ध-सामग्री तैयार करने वाली कपनी ही नहीं, बीमा कपनियाँ, फिनान्स कपनियाँ, और इन्वेस्टमेट ट्रस्ट आदि भी सैनिक तैयारियों से और लड़ाई से बहुत कुछ आशाएँ रख सकती हैं। इनकी भी पार्लिमेट मे जैसी प्रधानता है वह पहले ही बतलाई जा चुकी है। हम यह नहीं कहते कि इस समय इगलैंड की सैनिक तैयारियाँ।अथवा युद्ध का निश्चय केवल व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के उद्देश से ही किया गया है। अवश्य ही परिस्थितियाँ भी इस समय कुछ ऐसी पैदा हो गयी थीं, जिससे इस प्रकार का निश्चय आवश्यक था। फिर भी जहाँ सरकार-पक्ष के इतने अधिक सदस्यों का युद्ध से होने वाली आमदनी मे अपना निजी स्वार्थ मौजूद हो, वहाँ उनके सम्बध मे लोगो के मन में सदेह उठना स्वाभाविक ही है।

चौथा अध्याय

पार्लिमेंट और पारिवारिक पूँजी

पिछली शताब्दी का पूँजीपति केवल अपने कुटुम्ब के एक छोटे से कारबार का प्रबधक था, किंतु आज का पूँजीपति बड़े-बड़े ज़बर्दस्त व्यापार-सघों का डायरेक्टर है। कुछ अवस्थाओ में तो किसी एक व्यवसाय में केवल एक ही कंपनी का सपूर्ण बृटिश द्वीप पर प्रभुत्व है। उदाहरणार्थ इम्पीरियल केमिकल कंपनी ही को लीजिए; प्रायः सम्पूर्ण बृटिश रासायनिक द्रव्यो का व्यवसाय एक मात्र इसी कपनी के हाथ में दिखाई देता है। बहुतेरी कंपनियाँ ऐसी भी हैं जो अपने-अपने ढग के व्यवसाय में सपूर्ण बृटिश साम्राज्य तक पर अपना अधिकार रखती हैं। उदाहरणार्थ "लिवर ब्रदर्स" तथा "यूनिलिवर" इस समय साबुन और मारग्रीन के व्यवसाय में प्रायः सम्पूर्ण बृटिश साम्राज्य को अपने पजे मे दबाये हुए है। अनेको व्यवसायो पर कई एक फर्म आपस मे मिलकर अपना आधिपत्य रखते हैं।

प्रोफेसर लेवी (Levy) इस सम्बध मे लिखते हैं :—

"पूँजीवाद के आरंभ से आज पहले-पहल यह देखने में आया है कि अंग्रेजी व्यापार के एक बहुत बड़े भाग पर एकाधिकारी (monopolist) सघों का दौर-दौरा हो रहा है।"

यह 'एकाधिकारी सघ' है क्या चीज ? देश में जब एक ही क़िस्म का व्यापार करने वाले बहुत से फर्म होते हैं तो उनमें आपस की लागडॉट लगी रहती है, जिससे माल का भाव अधिक बढ़ने नही पाता। किंतु ये सब फर्म आपस में मिल कर यदि लागडॉट बंद कर दे, तो माल का भाव आसानी से बढ़ाया जा सकता है। अस्तु, भाव

बढाने की इसी एक इच्छा के कारण व्यापार मे एकाधिकार का विकास हो रहा है, कारण कि ऊँचे भाव का मतलब ही व्यापारियों के मुनाफे मे अधिकता है।

माल बनाने वाला व्यापारी स्वभावतः अपने माल को अधिक से अधिक ऊँचे दाम पर बेचना चाहता है। इधर ग्राहक भी बढिया से बढिया माल को सस्ते से सस्ते भाव पर खरीदना चाहता है। अस्तु, जब तक व्यापारियो मे आपस की लागडॉट बनी रहती है, तब तक कोई भी व्यापारी अपने माल का ज्यादा दाम नही पा सकता, कारण कि उसके मुकाबले वाले व्यापारी उसके ग्राहको को वही माल कम भाव पर देकर उन्हे अपनी ओर करने के लिए सदा तैयार रहते हैं। किंतु यदि उस व्यापार मे उसका एकाधिकार हो, अर्थात् केवल वही व्यापारी उस माल को बनाता और बेचता हो, दूसरा कोई न बेचता हो, तो फिर वह आसानी से माल का भाव बढाकर यथेच्छ मुनाफा कमा सकता है। यही कारण है कि आज अनेकों प्रकार के व्यवसाय में व्यापारियो ने अपना-अपना सगठन कायम कर लिया है। किंतु ग्राहक बेचारा अकेला और असहाय पड़ता है। इसलिए वही नुक्सान में रहता है।

जिन व्यापारो मे इस समय बहुत से फर्म अलग-अलग मौजूद हैं उनमें भी आपस के समझौते से माल की तैयारी को कम करके, बाजार के क्षेत्रो को परस्पर बॉट कर तथा भाव को निश्चित रखकर आपस की लाग-डॉट को दूर किया जा रहा है। उदाहरणार्थ लोहा, फौलाद और इजीनियरिंग के व्यवसायो मे आज इसी प्रकार के पारस्परिक समझौते से काम लिया जा रहा है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर टासिग (Prof. Taussig) के मतानुसार व्यवसायों मे इस प्रकार के एकाधिकार का विकास किसी जनतन्त्रवादी राष्ट्र के लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता। उस पर

सार्वजनिक नियंत्रण का होना ही आवश्यक है। किंतु सार्वजनिक नियंत्रण करने का एक मात्र साधन केवल धारा सभा है। केवल पार्लिमेंट ही व्यापारों के प्रबंध में हस्तक्षेप कर सकती है। किंतु व्यापारियों ने उस पर स्वय अपना सिक्का जमा रखा है। बड़े-बडे एकाधिकार रखने वाले व्यापारिक सघ इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि कानूनों के द्वारा उनका एकाधिकार किसी समय भी तोड़ा जा सकता है। अतएव वे पार्लिमेंट पर अपना प्रभुत्व कायम रखने के लिए सदा सचेष्ट रहा करते हैं।

पिछले अध्यायो में यह दिखला आये हैं कि अनुदार पक्ष किस प्रकार बड़े-बड़े पूँजीपति व्यापारियो से भरा हुआ है। माल पैदा करने मे इनकी शक्ति जितनी अधिक बढ़ी हुई है उतनी ही अधिक संख्या में ये मजदूरो के भी मालिक हैं। इनकी दुनिया एक ऐसी दुनिया है जहाँ सफलता की मात्रा जनता की सेवा से नही, बल्कि मुनाफे की रकम से आँकी जाती है।

यह मुनाफे की रकम केवल माल बेचने वाली नीति पर ही अवलम्बित नहीं है, वल्कि मजदूरो से काम लेने वाली नीति पर भी बहुत कुछ अवलम्बित है। अस्तु, देश के शासन में अनुदार पक्ष के आधिपत्य का अर्थ यह है कि माल बनाने वाले व्यापारियो और माल खरीदने वाली जनता के बीच जो कुछ निपटारा किया जायगा, वह केवल व्यापारियो के ही स्वार्थी दृष्टिकोण से किया जायगा। इसी प्रकार मालिको और मजदूरो के मामलो में भी सदैव मालिको के ही स्वार्थ का ध्यान रखा जायगा। मोटे तौर पर, वर्तमान बृटिश शासन-पद्धति का रूप यो कहा जा सकता है कि अनुदार शासक-दल तो बड़े-बड़े डिवीडेन्ड मारने वाले व्यापारियो का प्रतिनिधित्व करता है और शेष विरोधी दल जनता के हितों के लिए लड़ रहे हैं।

अधिकाश व्यापारिक एकाधिकार पर कोई भी कानूनी नियत्रण नहीं है। केवल कुछ थोड़े से एकाधिकार अवश्य ऐसे हैं जो लोकोप-

योगी कहे जाते हैं और जिनपर कुछ कानूनी बन्धन लगे हुए हैं। उदाहरण के तौर पर रेलवे, बिजलीघर, गैस और पानी के कारखाने इसी प्रकार की एकाधिकारपूर्ण व्यापारिक संस्थाएँ कहे जा सकते हैं। इन के कामों पर कुछ कानूनी नियन्त्रण और सरकारी निगरानी अवश्य रहा करती है। यद्यपि यह नियन्त्रण लोकोपयोगिता के नाम पर किया जाता है, किंतु ध्यान देने से जान पडेगा कि इसका भी असली कारण जनता के हित का विचार नही, बल्कि बडे-बडे व्यापारियों के ही हितो का ख्याल है। बात यह है कि इन चीजों का बहुत बड़ा खर्च व्यापारी कंपनियो मे भी होता है। उदाहरणार्थ, रेल को ही लीजिए। यह केवल यात्रियो की ही सुविधा के लिए नही काम देती, बल्कि इसका एक बहुत बड़ा काम व्यापारियो का माल ढोना और पहुॅचाना भी है। इसी प्रकार बिजली, गैस और पानी का उपयोग भी बडे-बडे व्यापारी कारखानो के लिए बहुत ज्यादा रहा करता है। अस्तु, यदि इन वस्तुओं का मूल्य या किराया बहुत ऊॅचा हो जाय अथवा उनमे किसी प्रकार की दुर्व्यवस्था पैदा हो जाय तो देश के तमाम व्यापारियो के स्वार्थ पर भी उसका बड़ा गहरा प्रभाव पडेगा। अतएव इन पर कानूनी नियन्त्रण रखना आवश्यक समझा गया।

फिर भी ध्यान रहे कि यह लोकोपयोगी कही जाने वाली व्यापारिक संस्थाएँ भी अन्य व्यापारिक कंपनियों की ही तरह संघटित हैं और वास्तव में उन्हीं की सगी बहनें हैं। इनका काम भी उसी प्रकार केवल अपने स्वार्थसाधन की इच्छा से हुआ करता है, जैसा अन्य कंपनियो का। इनके भी हिस्सेदार और डायरेक्टर लोग अधिक से अधिक डिवीडेन्ड कमाने के लिए उसी प्रकार लालायित रहते हैं, जैसे अन्य व्यापारी कंपनियो के। अस्तु, इनपर भी अनुदार सरकार की ओर से केवल उतनी ही निगरानी रखी जाती है, जितने से व्यापारी समुदाय के स्वार्थों की रक्षा तो हो सके किंतु इसके स्वार्थों को अधिक चोट न पहुंचे। तात्पर्य यह है कि इन संस्थाओ पर जो कुछ कानूनी नियन्त्रण या

एकाधिकार नही कायम कर सकते। अस्तु, यही कारण है कि इन बडे-बड़े व्यापारियो की ओर से सरकारी आयात-कर बैठाने के लिए इतना अधिक जोर दिया जा रहा है। इस कार्य मे इनको सफलता भी बहुत कुछ प्राप्त हो चुकी है, कारण कि अनुदार सरकार ने शासन भार सम्भालते ही सन् १६३१ से स्वतत्र व्यापार (Free trade) की नीति को त्याग कर 'सरक्षण-नीति' (Policy of protection) को अख्तियार कर लिया है। करीब एक सौ वर्ष से यह स्वतत्र व्यापार की नीति इगलैंड मे बराबर चली आ रही थी, किंतु अनुदार सरकार ने उपरोक्त व्यापारियो के प्रभाव मे पड़ कर इसे तिलाजलि देदी और बाहरी माल पर सरक्षण-कर लगाना आरभ कर दिया।* इसका अर्थ यह है कि बृटिश द्वीप मे व्यापार के बडे-बड़े महारथियो का एकाधिकार कायम करने के लिए जनता की जेब से बढे हुए मूल्य के रूप मे अधिक धन बटोरा जा रहा है। करों का उद्देश अब व्यापार मे एकाधिकार को कम करना नही, बल्कि प्रजा के व्यय से उनमे सहायता पहुँचाना है।

उपरोक्त एकाधिकारी व्यवसायो के अतिरिक्त अनेकों ऐसे व्यवसाय भी हैं, जिनमे बडे-बडे व्यापारियो का यद्यपि अभी एकाधिकार तो नही कहा जा सकता, किंतु प्रभावशाली अधिकार अवश्य है। ये व्यापारी छोटे-छोटे व्यापारियो के भय से अपने माल का भाव बहुत ऊँचा नही बढा सकते, किंतु फिर भी बाजार पर इतना अधिकार रखते हैं कि भाव गिरने नही पाता। सभव है आगे चल कर कुछ रोज मे ये लोग भी अपना-अपना एकाधिकार स्थापित करले। इस प्रकार की कपनियों मे शराब बनाने वाले कारखाने, पेटेन्ट दवाओ

---

*किंतु यही सरकार भारतवर्ष मे सरक्षण-नीति का विरोध करती है, कारण कि उसमे बृटिश व्यापारियो के व्यापार को धक्का लगेगा।

—ह० प्र० गोयल

के कारखाने, पेटेन्ट भोजनो के कारखाने इत्यादि मुख्य कहे जा सकते हैं। पार्लिमेंट के कितने ही मेम्बर इनके डायरेक्टर हैं, अतएव इनका भी अनुदार सरकार पर कम प्रभाव नही।

साराश यह है कि अनुदार पक्ष के तमाम राजनैतिक नेता उस वर्ग के मनुष्य हैं, जो देश भर की तमाम चीज़ो की तैयारी तथा लोकोपयोगी हर प्रकार की सेवाओ को अपने अधिकार मे किये हैं, जिससे जनता एकबारगी परावलम्बी बन गयी है। सरकार अवश्य इस विषय में जनता की सहायता कर सकती है, किंतु वह भी इन्हीं राजनैतिक नेताओं के हाथ में है; अतएव उसका भी ध्यान सब से पहले इन्हीं के स्वार्थ-साधन की ओर जाता है। वर्तमान बृटिश सरकार ने अब तक जो कुछ कार्य किये हैं और जो कुछ नही किये हैं, उन सबसे यह पूर्णतया सिद्ध हो जाता है कि वह प्रजा के कल्याणार्थ अपने व्यापारी-वर्ग के स्वार्थो को कुचलने के लिए किसी प्रकार तैयार नही।

पाँचवाँ अध्याय

बृटिश साम्राज्य में अनुदार-दलवालों का स्वार्थ

"जब तक भारतीयों ने अपनी उत्तरदायित्वपूर्ण बुद्धि के द्वारा स्वयं यह सिद्ध नहीं कर दिया कि पश्चिमीय ढंग की पार्लिमेंटी संस्थाएँ पूर्वीय देशों के लिए भी उपयुक्त है, तब तक भारतीय प्रश्नों के विचार के समय वे (अर्थात् पार्लिमेंट के सदस्य) जनतंत्रवादी अथवा पार्लिमेंटेरियन नहीं रह जाते थे।"—मिस्टर ए० टी० लेन्कस-बायड, अनुदार दल के पार्लिमेंटी सदस्य, कामन्स सभा मे भाषण देते समय।

बृटिश पार्लिमेंट बृटिश साम्राज्य की भी पार्लिमेंट है। उसका निरकुश अधिकार न केवल बृटिश द्वीप पर ही, वरन् बृटिश साम्राज्य के अधिकाश भाग मे भी स्थापित है, जिसका कुल रकबा करीब एक करोड़ बीस लाख वर्ग मील और आबादी ५० करोड़ के लगभग है। दूसरे शब्दो मे पृथ्वी का एक चौथाई हिस्सा बृटिश साम्राज्य के अतर्गत समझा जाता है।

बृटिश हाउस आफ कामन्स के निर्वाचन का अधिकार केवल बृटिश द्वीप के ही निवासियों को प्राप्त है। इसी से कुछ लोगों (बृटिश निवासियो) की यह धारणा है कि उसका कार्य और शक्ति भी बृटिश द्वीप तक ही सीमित है।

वास्तव मे बृटिश पार्लिमेंट इस समय जितने आदमियो पर हुकूमत कर रही है, उन्हे देखते हुए बृटिश निवासियो की सख्या केवल मुट्ठी भर जान पड़ती है। लेकिन चूँकि बृटिश पर्लिमेंट में केवल बृटिश द्वीप की ही जनता के प्रतिनिधि बैठ सकते हैं, अतएव यह केवल इन्ही मुट्ठी भर लोगो के लिए जनसत्तात्मक सस्था कही जा

सकती है। तमाम बृटिश साम्राज्य की गोरी प्रजा की संख्या इस समय केवल सात करोड़ है। इनमें से लगभग ३ करोड़ व्यक्ति स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशो में हैं, जहाँ इनकी अपनी-अपनी अलग पार्लिमेंटे हैं। शेष ४२ करोड़ व्यक्ति बृटिश साम्राज्य-शाही पार्लिमेंट की अधीनता मे रहते हैं, जिसमें उनका कोई भी प्रतिनिधि नही बैठता, जिसके निर्माण में वे कोई भी हाथ नहीं रखते और जिसकी नीति को बदलने के लिए उनके पास कोई कानूनी चारा भी नही है। इस बात को खूब अच्छी तरह ध्यान में रख कर तब उन बातों पर विचार करना चाहिए, जिन्हे हम इस अध्याय में आगे दे रहे है।

सरकारी उपनिवेशो * की प्रजा और बृटिश प्रजा की दशा में बड़ा भारी अंतर है। उदाहरणार्थ हाउस आफ कामन्स में यदि मजदूरों के मालिकों का आधिपत्य हो जाय तो भी बृटिश मजदूर-पक्ष बिल्कुल निरुपाय नही कहा जा सकता, कारण कि वह भविष्य मे निर्वाचन के समय इन मालिको की जगह को छीन सकता है। इसके अतिरिक्त कामन्स सभा मे उसकी ओर के अनेक प्रतिनिधि भी बैठते है जो उसके पक्ष में भरपूर शक्ति से लड़ा करते हैं, यद्यपि यह सच है कि इस समय उनकी संख्या मजदूर-मालिकों और जमीदारो की संख्या से बहुत दबी हुई है।

किंतु सरकारी उपनिवेशो मे तो मज़दूरो की अवस्था अत्यत दयनीय है। यहाँ के मज़दूरो के मालिक हर प्रकार से निडर और निरंकुश हैं। यहाँ उन्हे कोई भय इस बात का नही है कि जिन मज़दूरो से वे काम लेते हैं उनका कोई प्रतिनिधि पार्लिमेंट में बैठकर उनके

---

* नोट—सरकारी उपनिवेशो से यहाँ कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे स्वतन्त्र उपनिवेशो का तात्पर्य नहीं है, केवल ऐसे भूभाग जो 'क्राउन कालोनी' प्रोटेक्टोरेट (Protectorate) अथवा 'मैन्डेटेड राज्य' (Mandated Territories) के नाम से प्रसिद्ध है और जो अंग्रेजी शासन के अधीन हैं सरकारी उपनिवेशों के अतर्गत समझने चाहिए।

विरुद्ध बोलेगा। उधर बृटिश जनता के लिए भी ये उपनिवेश-निवासी इतनी दूर पड़ जाते हैं कि इन पर मनमाना अत्याचार करते हुए भी इन मजदूरो के मालिक पार्लिमेट के निर्वाचन मे अपने या अपने दल-वालो के हराये जाने का कोई भय नहीं रखते।

अस्तु, अब इस बात पर विचार करना बहुत जरूरी है कि दुनिया के इतने बडे हिस्से पर हुकूमत करने मे वहाॅ के निवासियां के प्रति बृटिश शासकों की नीति किन-किन बातों से प्रेरित हुआ करती है ।

सबसे पहले हमे यह मालूम करना जरूरी होगा कि स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशो मे और सरकारी उपनिवेशो एव भारतवर्ष मे क्या अतर है। स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशो के लोग अधिकतर उन लोगों की सतान हैं, जो किसी समय बृटिश द्वीप से वहाॅ जाकर बस गये थे और जिनके साथ ही साथ बृटिश राजनैतिक सस्थाएँ भी वहाॅ आरभ से ही पहुॅच चुकी थीं। एक मात्र न्यूफाउडलैंड को छोड़ कर, जिसका शासन-विधान बृटिश सारकार द्वारा छीन लिया गया है और जो बृटिश पूॅजीपतियों के दबाव से अब सरकारी उपनिवेश की हैसियत मे रख दिया गया है, शेष सभी स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशों के पास इस समय अपनी-अपनी स्वतत्र पार्लिमेटे मौजूद हैं। अस्तु, इन उपनिवेशों की गोरी प्रजा को तमाम राजनैतिक अधिकार वैसे ही पूर्णतया प्राप्त हैं जैसे अग्रेजो को इग्लैंड मे प्राप्त हैं। बल्कि आस्ट्रेलिया मे तो ये अधिकार अग्रेजों के अधिकार से भी अधिक बढ़े हुए हैं। फिर भी स्मरण रहे कि ये अधिकार केवल वहाॅ की गोरी प्रजा को ही प्राप्त हैं। मूल निवासियो के अधिकार वहाॅ बिल्कुल सीमित हैं। दक्षिणी अफ्रीका के सयुक्त-राज्य मे भी यद्यपि काली प्रजा की सख्या अत्यधिक है किंतु उसको वहाॅ कोई राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं।

स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशों का इग्लैंड के साथ यद्यपि वैधानिक बधन बिल्कुल कमजोर है (कारण कि उन्हे अपना सम्बध इगलैंड से

तोड़ कर स्वतंत्र हो जाने का अधिकार हर समय मौजूद है), फिर भी उनका आर्थिक सम्बंध बड़ा मजबूत दीखता है । इंग्लैंड के सरकारी पक्ष का उक्त उपनिवेशों के सरकारी पक्ष के साथ जो आर्थिक सम्बध है वह महाजन और असामी का सम्बंध कहा जा सकता है, जैसा जे० ए० हाब्सन ने अपनी पुस्तक "साम्राज्य-शाही" (Imperialism) में लिखा है :—

"इस समय जैसी परिस्थिति दिखाई देती है उसके अनुसार ग्रेट ब्रिटेन में इस समय व्यवसायी-पक्ष का एक जबर्दस्त संगठन मौजूद है, जो साम्राज्यशाही-सरकार को स्वतंत्र उपनिवेशों के अनुकूल अपनी नीति क़ायम रखने के लिए बराबर उकसाता रहता है । ये उपनिवेश, विशेष कर आस्ट्रेलिया के उपनिवेश, अपनी जमीन-जायदाद और तिजारत बहुत अधिक परिमाण में अंग्रेजी महाजन-पेशा कंपनियों के पास गिरवी रख चुके हैं । उनकी खाने, उनके बैंक तथा दूसरे किस्म की अनेकों महत्वपूर्ण व्यापारी जायदाद अधिकांश में इस समय ग्रेट ब्रिटेन के ही हाथ में हैं । उनका बहुत सा सरकारी ऋण भी ग्रेट ब्रिटेन से ही लिया गया है । अतएव प्रत्यक्ष है कि वृटिश द्वीप में जिस वर्ग के मनुष्यों का इतना धन इन उपनिवेशी जायदादों में लगा हुआ है, उनका बहुत कुछ हित और अहित उन उपनिवेशों की राजनीति पर अवलम्बित है, जो कि वृटिश राजनीति से बिल्कुल भिन्न है और कभी कभी उसके विरुद्ध दिशा में भी जाया करती है । साथ ही यह भी स्पष्ट है कि ये लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए वृटिश सरकार पर अपना काफी संगठित दबाव डाल सकते हैं...।"

को भी सीधे इन उपनिवेशी सरकारो पर अपना दबाव डालने का मौक़ा मिलता है ।

वृटिश अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो का इन उपनिवेशों मे स्वय निजी स्वत्व बहुत व्यापक रूप से मौजूद है। नीचे की सूची से मालूम होगा कि इन सदस्यों मे से कितने लोग उपनिवेशी कपनियो के डायरेक्टर है :—

पार्लिमेंट के सरकारी सदस्य और उपनिवेश

उपनिवेश	पार्लिमेंटी सदस्यो की सख्या	कपनियों की डायरेक्टरी
१—कनाडा	६	१२
२ – आस्ट्रेलिया .	११	१३
३—दक्षिणी अफ्रिका	१२	१५
४—न्यूजीलैंड	३	३

अनुदार पार्लिमेंटी मेम्बरो का इस प्रकार उपनिवेशो मे व्यापारिक स्वत्व स्वय ही एक काफ़ी महत्व की बात है। किंतु जिस समय हम उन तमाम बैंको, बीमा कपनियो तथा महाजन-पेशा सस्थाओ का भी विचार करते हैं, जिनका जबर्दस्त प्रतिनिधित्व हम कामन्स सभा में पहले देख आये हैं और जिनका स्वार्थ उपनिवेशो मे न केवल उनकी सरकारी ऋण मे लगी हुई पूँजी ही के द्वारा माना जा सकता है, बल्कि उन तमाम उपनिवेशी रेलो और कारखानो के द्वारा भी अंदाजा जा

सकता है जिनमें उनका स्वत्व है, तब हमें उपनिवेशों के साथ बृटिश पूँजी-पतियों के सम्बंध का असली परिचय मिलता है। जो राजनैतिक दल बृटेन में धन और सम्पत्ति का मालिक है वही स्वभावतः उस धन का प्रतिनिधित्व भी करता है जो बृटेन की ओर से उपनिवेशों तथा अन्य देशों में लगा हुआ है। इस समय बृटेन की जो पूँजी कनाडा और न्यूफ़ाउन्डलैंड में लगी है उसकी रक़म लगभग ४४ करोड़ ३० लाख पौंड है और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में भी उसकी क़रीब ६५ करोड़ १० लाख की रकम लग चुकी है।

फिर भी बृटिश सरकार उपनिवेशी सरकारों पर अपना प्रभाव केवल कुछ ही हद तक डाल सकती है। अभी हाल में न्यूजीलैंड पार्लिमेंट की निम्न-सभा का जो चुनाव किया गया था उसमे मजदूर दल के बहुमत को अंग्रेजी अनुदार दल भरसक प्रयत्न करने पर भी न रोक सका। उपनिवेशी नीति को प्रभावित करने का एक तरीका उन लोगों की सहायता से भी अख्त्यार किया जाता है जिन्होंने उपनिवेशी कंपनियों तथा वहाँ की अन्य शक्तिशाली संस्थाओं को ऋण दे रखा है। साथ ही उस राजनैतिक दल की सहानुभूति और सहायता का भी उन्हे बहुत कुछ भरोसा रहता है जो उपनिवेशों में बृटिश अनुदार दल की छाया पर संघटित किये गये हैं।

इस समय तमाम स्वराज्य भोगी उपनिवेशों में एक मात्र न्यूजीलैंड ही ऐसा है जिसकी सरकार मे मजदूर-दल का प्रभुत्व है। अतएव बृटिश पूँजी-पतियों की जब वहाँ कोई दाल गलती न दिखाई दी, तब उन्होंने वहाँ की मजदूर सरकार को धमकी देना आरभ किया कि अगर वह अपनी व्यापारिक नीति उनके अनुकूल न बनाये रखेगी तो वे भी ओटावा के समझौते (Ottawa Agreement) को रद्द करके अपना बदला चुकावेंगे।

भारतवर्ष और सरकारी उपनिवेश

इस प्रकार बृटेन का शासक दल स्वराज्य-भोगी उपनिवेशों की सरकार पर अपना जोर केवल बाहरी तरीकों से डाल सकता है। कानूनन उसे किसी प्रकार भी नही मजबूर कर सकता। परतु भारतवर्ष और सरकारी उपनिवेशों को तो वे कानूनन और केवल अपनी आज्ञा से ही मजबूर कर सकते हैं। यहाँ उनकी पूरी हुकूमत जारी है और यहाँ के तमाम निवासियों के भाग्य का फैसला केवल साम्राज्यशाही बृटिश पार्लिमेंट की निरंकुश इच्छा मात्र पर निर्भर रहता है। इसके अतिरिक्त एक जबर्दस्ती और भी है। वह यह कि जिस पार्लिमेंट में भारतवर्ष एवं सरकारी उपनिवेशों के निवासियों को बैठने का कोई हक नहीं दिया जाता, वहाँ भारतीय तथा उपनिवेशों की अग्रेजी-कंपनियों के डायरेक्टर आसानी से जा पहुँचते हैं। वहाँ पहुँच कर वे इन देशों के भाग्य का फैसला अपनी रुचि और अपने स्वार्थ के अनुकूल कराने के लिए हर प्रकार की क्रियाशीलता दिखला सकते हैं। वास्तव में वे भी केवल उसी पक्ष के कल पुर्जे हैं, जिसके हाथ मे इस समय अग्रेजी शासन है, और जिसकी मर्जी के बिना भारतवर्ष एवं सरकारी उपनिवेशों के गवर्नरो तथा अन्य ऊँचे अफसरों की न तो नियुक्ति की जा सकती है और न वे अपने स्थान से हटाये ही जा सकते हैं।

नीचे की सूची से मालूम हो जायगा कि भारतवर्ष तथा सरकारी उपनिवेशों मे व्यापार करने वाली कितनी अग्रेजी कपनियों के डायरेक्टर इस समय वृटिश पार्लिमेंट में अनुदार दल की ओर से सदस्य हैं :—

भारतवर्ष की अंग्रेज़ी कंपनियों के डायरेक्टर

इस समय बृटिश पार्लिमेंट के कम से कम १२ सदस्य १३ ऐसी कंपनियो के डायरेक्टर हैं, जो भारतवर्ष में बैंकिंग, बीमा, रबर, सोना, चाय, रेल, मैंगनीज़, सीमेंट आदि का व्यवसाय कर रही हैं।

सरकारी उपनिवेशों के कंपनी डायरेक्टर

इसी प्रकार मालय, गोल्ड कोस्ट, नायगेरिया, ट्रिनिडाड, रोडेशिया, कीनिया, टगानायका, बेकुअन लैंड, दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका, बर्मूडा, बृटिश गायना, फाकलैंड, बर्मा, लंका, बोर्नियो, पैलेस्टाइन नामक सरकारी उपनिवेशों में भी व्यापार करने वाली कम से कम २५ अंग्रेज़ी कपनियो के डायरेक्टर पार्लिमेंट के १७ सदस्य हैं। फिर भी इसे यहाँ अंग्रेजी पूँजी-पतियों के स्वत्वों का केवल आंशिक दिग्दर्शन ही समझना चाहिए, कारण कि इसमे उन अनुदार पार्लिमेंटी सदस्यो का विचार नहीं किया गया है, जो इन कम्पनियों में अपना स्वत्व बतौर हिस्सेदार के रखते हैं। साथ ही इसमें उन अंग्रेजी बैंकों, बीमा कम्पनियों तथा इन्वेस्टमेंट ट्रस्टो की भी गिनती नही की गयी, जिनकी बहुत बड़ी रकम भारतवर्ष में तथा सरकारी उपनिवेशों में लगी हुई है और जिनका एक एक डायरेक्टर इस समय पार्लिमेंट में भी बैठता है। कुल पूँजी जो इस समय अंग्रेजों की केवल भारतवर्ष और लङ्का में लगी है क़रीब ४३ करोड़ ८० लाख पौंड बतलाई जाती है।

यहाँ एक बार हम फिर इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि अंग्रेजों का इन देशों के साथ हर एक सम्बंध केवल धन कमाने और कपनी के डायरेक्टरों तथा हिस्सेदारो के लिए अधिक से अधिक मुनाफा बटोरने की ही लालसा से स्थापित है और बृटिश पार्लिमेंट में साम्राज्य की ओर से यदि कुछ भी प्रतिनिधित्व पहुँचता है तो वह मुनाफे की चिंता में रहने वाले केवल इन्हीं कंपनी-डायरेक्टरों का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। एक अंग्रेज विद्वान के शब्दों में:—

"बृटिश-साम्राज्य-शाही के पिता माल उत्पन्न करने वाली, तैयार करने वाली, बेचने वाली तथा जहाज़ों मे भर भर कर ले जाने वाली कंपनियों के डायरेक्टर तथा ऐसी संस्थाओं के मैनेजर हैं जो राष्ट्र की इकठा की हुई बचत की रकम को अपने अधिकार में रखती हैं और उनको

मुनाफे के कामो मे लगाया करती हैं। यही लोग मन्त्रिमडल के सदस्य तथा राष्ट्र के मुखिया तक बन सकते हैं।"

अस्तु, भारतवर्ष मे तथा बृटिश साम्राज्य के अन्य भागो मे जो इस समय जनतन्त्रात्मक शासन का अभाव देखा जाता है उसे केवल उस जबर्दस्त शक्ति का परिणाम समझना चाहिए जो इन देशो मे स्वार्थ रखने वाले अग्रेज व्यापारियो के हाथ मे दे दी गयी है।

निस्सन्देह भारत-निवासियो को कुछ थोड़े से राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो चुके हैं। बृटिश भारत के करीब १५ प्रतिशत मनुष्य इस समय वोट देने के अधिकारी समझे जाते हैं, किंतु फिर भी उन्हे अभी केवल प्रातीय धारासभाओ के ही निर्वाचन का अधिकार मिला है। और यह अधिकार भी उन्हे सालो के आन्दोलन के पश्चात् प्राप्त हो सका है। इसमे सदेह नही कि ये अधिकार काफी महत्वपूर्ण हैं, किंतु फिर भी ये जनतन्त्रात्मक शासनाधिकारों से अभी कोसो दूर हैं। गवर्नमेट आफ इडिया ऐक्ट, जिसके विरोध मे कट्टर अनुदार पार्लिमेटी नेताओ ने अपनी जान लड़ा दी थी, भारतवर्ष को स्वराज देने के उद्देश्य से नहीं बनाया गया। प्रमाणस्वरूप इसके द्वारा जो नवीन शासन-विधान भारतवर्ष को प्राप्त हुआ है, उस के सम्बध मे अपने अनुदार भाई-बधुओ को समझाते हुए सर सैमुअल होरने बतलाया था कि.—

"भारतवर्ष मे गवर्नर-जेनरल, प्रातीय गवर्नरो तथा अन्य उच्च अधिकारियो की नियुक्ति अब भी बृटिश सम्राट के ही द्वारा की जायगी। सुरक्षित सरकारी नौकरियों तथा सघशासन एव प्रातीय शासन के बडे-बडे अफसरो की भर्ती एव सरक्षण का काम भी अभी पार्लिमेट के ही अधिकार मे रहेगा। इसके अतिरिक्त भारतीय सेना, जो की देश की वास्तविक शक्ति है, अभी सपूर्ण रूप से बृटिश पार्लिमेट के ही अधीन रहेगी। ये सारी बातें केवल कागजी नहीं है। शासन के अधिकारियों को इनके सम्बंध मे बडे जबर्दस्त अधिकार दे

दिये गये है और साथ ही उन अधिकारों को काम में लाने के लिए पूरे-पूरे साधन भी प्रयुक्त कर दिए गये हैं।"

फिर भी वृटिश पार्लिमेंट में अभी ऐसे अनुदार सदस्यो का बहुमत मौजूद है जिनका भारतीय कामनाओ के विरुद्ध, विशेपकर सघ-शासन के मामले में हार्दिक द्वेष और असहिष्णुता से भरा हुआ व्यवहार इस देश (इगलैंड) के नाम पर धब्बा लगाता है। उदाहरण के तौर पर मेजर-जेनरल सर अल्फ्रेड नॉक्स का निम्नलिखित वाक्य देखिए:—

"भारतवर्ष अभी जनतत्र-शासन के योग्य नही हुआ। साधारण भारतीय मतदाता अभी नागरिक अधिकारो के सम्बध में केवल उतनी बुद्धि रखता है, जितना एक छः वर्ष का बालक।"

वृटिश सरकार पर जैसा दबाव डाला जाता है उसी के अनुसार प्रायः उसका रुख भी भारतीय मॉगो की तरफ हुआ करता है। पार्लिमेंट में बैठने वाले दस अनुदार सदस्यो का भारत की अग्रेजी कपनियों मे डायरेक्टर होना उस जबर्दस्त आर्थिक स्वार्थ के मुकाबले में बिल्कुल तुच्छ सा है, जो पार्लिमेंट में और पार्लिमेंट के बाहर मौजूद है और जो अनुदार दल की नीति को सदा प्रभावित किया करता है। ये आर्थिक स्वार्थ भारत में केवल अग्रेजी हुकूमत के कायम रहने से ही कायम रह सकते हैं, और इनके साथ ही एक दूसरे क़िस्म का स्वार्थ भी मिला हुआ है, जिसका प्रतिनिधित्व पार्लिमेंट में मौजूद है। नमूने के तौर पर एक समुदाय तो यहाँ की वृटिश सेना है, जिसका स्वार्थ भारत में निश्चित रूप से दिखाई देता है:—

इन्हीं सैनिकों के साथ उन (अंग्रेज) अमीरो और बड़े-बडे जमींदारो की भी जबर्दस्त सहानुभूति मिली हुई है, जो इस देश मे अपने लड़कों के लिए ऊँची-ऊँची नौकरियाँ दिलाना चाहते हैं।"—हाब्सन साहब।

एक दूसरा समुदाय जो बृटिश साम्राज्य को कायम रखने में अपना स्वार्थ मानता है भारतीय सिविल सर्विस वालों का है। हाब्सन साहब, जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, कहते हैं कि:—

"साम्राज्यशाही के पक्ष का समर्थन करने के लिए विशुद्ध आर्थिक प्रेरणाओं की एक पूरी पल्टन सी खड़ी दिखाई पड़ती है—तमाम नौकरी पेशेवालो और व्यवसाइयो की एक भारी बिखरी हुई जमात, जो कि सैनिक और राजनैतिक नौकरियो की बृद्धि मे मोटी-मोटी तन्ख्वाह वाले ओहदों और लम्बे-लम्बे मुनाफे वाले रोजगारों की तलाश किया करती है और सैनिक आक्रमणो मे अपने इन्ही उद्देशो की पूर्ति के लिए नवीन क्षेत्रो के खुलने की आशा रखती है, जिनमे नयी पूँजी लगाने का अवसर मिले। इन सभी लोगों को आगे प्रेरित करने वाली तथा मार्ग दिखाने वाली केन्द्रीय शक्ति पूँजीपति की शक्ति है।"

सरकारी उपनिवेशो के पेन्शनयाफ्ता अफसरों को बिना गवर्नर की लिखित स्वीकृति के उपनिवेशो मे रोजगार करने वाली किसी कपनी के डायरेक्टर बनने का अधिकार नही रहता। पेन्शन पाने के पश्चात् प्रथम तीन वर्ष तक तो साधारणतः यह आज्ञा नही दी जाती, किंतु तीन वर्ष बीत चुकने के बाद आम तौर से देखा जाता है कि उपनिवेशो के ये पेन्शनयाफ्ता अफसर वहाँ की कपनियों में डायरेक्टर बन गये हैं और साथ ही अंग्रेजी हाउस आफ कामन्स में भी ये बहुधा सदस्य होते हुए पाये जाते हैं।

भारतवर्ष मे भी आई० सी० एस० के भूतपूर्व ऊँचे पदाधिकारी-गण तथा भारतीय सरकार मे ऊँचे दर्जे पर काम करने वाले पेन्शन-याफ्ता अफसर लोग बहुधा अंग्रेजी निर्वाचन-क्षेत्रों से खडे हो कर पार्लिमेंट के मेम्बर हो जाया करते हैं। उदाहरणार्थ सर जान वार्डला

मिल्ने (Sir John Wardlaw Milne, Conservative M. P. in 1922) इस समय भारतवर्ष की कितनी ही रेलवे, वैंकिग, तथा व्यवसायी कम्पनियो के डायरेक्टर बने हुए है, जिनमें वी० वी० ऐन्ड सी० आई रेलवे तथा बैंक आफ़ बाम्बे भी शामिल है। साथ ही वह पार्लिमेंट के सदस्य भी रह चुके हैं तथा भारतवर्ष में निम्नलिखित सरकारी पदो पर काम कर चुके हैं :—

सदस्य	.	बाम्बे म्युनिसिपल कार्पोरेशन
सरकारी प्रतिनिधि	...	बाम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट।
ट्रस्टी	.	बम्बई बन्दर।
चेयरमैन	...	बाम्बे चैम्बर आफ़ कामर्स।
ऐडिशनल मेम्बर	...	बम्बई की प्रातीय धारासभा।
ऐडिशनल मेम्बर	...	गवर्नरल जेनरल आफ़ इन्डिया कौंसिल
प्रेसिडेन्ट	...	गवर्नमेंट आफ़ इन्डिया की एडवाइजरी वार शिपिंग कमेटी।
लेफ़्टिनेन्ट कर्नल	..	इन्डियन डिफेन्स फ़ोर्स।

किंतु इस समय वृटिश सरकार को भारतवर्ष में जितना अधिकार प्राप्त है उससे कहीं अधिक ताकत उसे सरकारी उपनिवेशों में प्राप्त है। इन उपनिवेशो का सम्पूर्ण क्षेत्रफल बीस लाख वर्ग मील तथा आबादी छः करोड़ के लगभग है। वृटिश साम्राज्य-शाही के समर्थकगण बहुधा कहा करते हैं कि हम इन छः करोड़ आदमियों को स्वराज, स्वतंत्रता एवं जनतत्र-शासन के वृटिश आदर्शों की ओर ले जा रहे हैं। किंतु वास्तविक बात यदि देखी जाय तो इधर कितने ही वर्षों से एक भी उपनिवेश स्वराज की ओर नहीं बढ़ने दिया गया है।

प्रत्युत् माल्टा और साइप्रस के शासन-विधान तो बृटिश राष्ट्रीय सरकार ने छीन कर वापस ले लिये हैं। साथ ही लङ्का के शासन-विधान पर भी उसने आघात पहुँचाने की भरपूर चेष्टा की है। लङ्का का शासन-विधान जो कि इंग्लिस्तान की मजदूर सरकार द्वारा दिया गया था, इस समय तमाम सरकारी उपनिवेशो के शासन-विधान मे सब से अधिक दायित्वपूर्ण है, और कदाचित इसी से साम्राज्यशाही की आँखो मे गडता भी है। कुल पचास सरकारी उपनिवेशो मे से कम से कम पैंतालीस उपनिवेश ऐसे हैं, जिन्हे आज तक राजनैतिक अधिकार-प्रदान का कोई कागजी दिखावा तक नही किया गया। इस समय भी साम्राज्य के अंतर्गत ऐसे करोड़ो नागरिक पडे हुए हैं जिनको अपने यहाँ के शासन मे कोई भी मताधिकार नहीं मिला है। जे० ए० हाब्सन साहब ने सन् १६०२ मे जो निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी थीं, वे आज भी उसी प्रकार सही उतरती हैं.—

"जिस शासन के नीचे साम्राज्य मे हमारे बहुसंख्यक प्रजा-भाइयों को रहना पड़ता है उसका स्वरूप बृटिश आदर्शों के बिल्कुल ही विपरीत है, कारण कि वह शासित वर्ग की अनुमति पर निर्धारित नहीं किया गया, बल्कि सम्राजी अधिकारियो की निरङ्कुश इच्छा पर निर्धारित किया गया है। निस्सन्देह इसके रूपो मे बहुत सी भिन्नताएँ मौजूद हैं, किन्तु सबो का मुख्य लक्ष्य एक ही है, अर्थात् प्रजा की स्वतन्त्रता का अपहरण।"

जिस समय पार्लिमेंट की दोनो सभाओ मे सरकारी प्रतिनिधियो के साथ-साथ इन उपनिवेशों के कम्पनी डायरेक्टर लोग बैठते हैं, तो उन्हे देखकर जान स्टुअर्ट मिल के निम्नलिखित शब्द हमारे कानो मे गूँजने लगते हैं .—

"किसी देश का शासन यदि वहाँ के लोगों द्वारा हो तो वह एक वास्तविक सत्य है और उसके कुछ अर्थ जान पडते हैं। किंतु एक देश का शासन दूसरे देशवालो द्वारा किया जाना एक ऐसी बात है जो

न कभी होती है और न हो ही सकती है। एक देश के लोग दूसरे देश वालों को अपने बाड़े का पशु अथवा जंगल का शिकार मान कर तो रख सकते हैं और उन्हें अपने धन कमाने का साधन बना कर एक ऐसा इन्सानी मवेशीख़ाना समझ सकते हैं जिसके आदमियों को अपने मुनाफ़े के लिए इस्तेमाल किया जाय, किंतु यदि शासन का वास्तविक अर्थ शासित-वर्ग का हितसाधन है तो यह बिल्कुल असंभव है कि दूसरे देश वाले इसके लिए कुछ भी ध्यान दें।

इस समय सरकारी पक्ष के बहुत से पार्लिमेंटी सदस्य बृटिश उपनिवेशों में जो स्थान प्राप्त किये हुए हैं उसी से पता चलता है कि साम्राज्य में शासन वर्ग का कितना अधिक स्वार्थ है। इसके लिए उदाहरण अनेकों दिये जा सकते हैं, किन्तु यहाँ हम केवल दो ही तीन उदाहरणों का उल्लेख करेंगे। नीचे तीन ऐसे उपनिवेशों का हाल दिया जाता है, जिनकी चर्चा इधर समाचार पत्रों में बहुत अधिक सुनाई देता रहा है।

डियर-जेनरल सर विलियम अलेक्जेन्डर, तथा (३) सर अर्नल्ड ग्रिडले है।

उपरोक्त हड़ताल-सम्बधी दगा हो जाने के बाद उसकी चर्चा इगलिस्तान के अखबारो मे तथा पार्लिमेट मे भी की गई गयी। ६ जुलाई सन् १६३७ को त्रिनिदाद के सरकारी कोलोनियल सेक्रेटरी ने वहा की धारासभा मे एक भाषण दिया था, जिसमे उन्होने मजदूरो के प्रति कुछ सहानुभूति प्रकट की थी। इस पर मिस्टर कार्लटन ने पार्लिमेट मे सरकार का ध्यान दिलाते हुए कोलोनियल सेक्रेटरी के विचारो को अत्यत "असाधारण" ('Extreme') बतलाया था। उसके दूसरे ही दिन तारीख २८ जुलाई सन् १६३७ को दगे की जॉच के लिए एक शाही कमीशन नियुक्त किया गया, जिसकी रिपोर्ट सन् १६३७ के फरवरी मास मे प्रकाशित हुई। इस रिपोर्ट मे भी उक्त कोलोनियल सेक्रेटरी के भाषण की कड़ी आलोचना की गयी। इस भाषण के जो अश विशेष आपत्ति-जनक समझे गये वे इस प्रकार थे :—

"अतीत काल मे हमे अपनी कर्तव्य-बुद्धि को केवल पाखड-भरी बातो से ही फुसलाना पड़ा है और मजदूरो को भी कितनी ही बहाने-बाजियों के द्वारा शात रखना पड़ा है।" . .

"मैं अपनी इस राय को बहुत जोर देकर बतलाना चाहता हूँ कि किसी व्यवसाय मे उसके हिस्सेदारो को डिविडेन्ड मिलने का उस समय तक कोई अधिकार नही है जब तक कि उसके मजदूरो को मजदूरी मुनासिब तौर से न मिल जाय और उनके रहन-सहन मे भी उचित ढग का सुधार न कर दिया जाय।"

शाही कमीशन ने जो रिपोर्ट प्रकाशित की थी उसमे मजदूरो की दशा का इस प्रकार जिक्र किया गया था :—

"संक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि उपनिवेशियों के साधारण स्वास्थ्य पर बहुत सी बातों का असर पड़ा करता हैं, अर्थात् रोग,

पौष्टिक भोजनो का अभाव, जगह की तंगी, खराब मकान इत्यादि किसी एक कारण को अकेले ज़िम्मेदार नही ठहराया जा सकता।"

उपरोक्त अंग्रेज़ी कपनियाँ इस स्थान से जितना गहरा मुनाफ़ा उठा रही हैं वह ऊपर बतला चुके हैं। फिर भी उनके मज़दूरों की इस समय जो दशा है वह भी ऊपर के उदाहरण से प्रकट है। उनकी यह करुणीय दशा एक जमाने से चली आ रही है, किंतु आज तक किसी के कान मे जूँ न रेंगी और यदि कदाचित् यह हड़ताल-सम्बधी दंगा न हुआ होता तो अब भी उसकी कोई चर्चा न सुनाई देती।

त्रिनिदाद का 'टेट ऐन्ड लायल्स' (Tate & Lyle's) नाम का चीनी का कारखाना भी दुनिया भर में सब से प्रसिद्ध समझा जाता है। साम्राज्य के व्यवसायिक साधनो से लाभ उठाने वाली सब से बड़ी कपनियो में इसकी भी गणना है। इसके डायरेक्टर भी उसी प्रकार बृटिश अनुदार दल के कल-पुर्जे है, जैसे अन्य कपनियो के। इसके वर्तमान अध्यक्ष सर लेनार्ड लाइल के उत्तराधिकारी एक अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य के दामाद लगते है। अपने कारखाने के मजदूरो की मजदूरी बढ़ाने के विषय में आपका कहना है कि हब्शी मजदूरों को और अधिक मजदूरी नही दी जा सकती, कारण कि बृटिश मजदूरो के मुकाबले में इनकी विचार-शक्ति बहुत नीचे दरजे की है। साथ ही वे मजदूरो के आन्दोलन को केवल साम्यवादियो के भड़काने का परिणाम मानते है, जिसके उत्तर मे 'टाइम्स' नामक पत्र में लार्ड आलिवर लिखते हैं कि "लाइल साहब कम से कम इतना तो आसानी से समझ सकते हैं कि मरभुखे लोगो के अधिक मजदूरी के हेतु हाय-तोबा मचाने में बोल्शविज़्म की कोई ख़ास जरूरत नही है।"

चीनी के इस कारख़ाने मे मजदूरी बढ़ाने के विरुद्ध एक दूसरी दलील यह दी जाती थी कि कपनी को काफी मुनाफा नही हो रहा है। इसके उत्तर मे २० अगस्त सन् १९३८ के मैंचेस्टर गार्जियन

नामक पत्र मे ई० एम० गाइन्डर्स (E. M. Ginders) का एक पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसमे लिखा था..—

"अगर कारखानो के मजदूरो की आर्थिक दुर्दशा का एक मात्र कारण यही है कि उनके माल का भाव गिर गया है, तो जिन स्थानों मे माल की बिक्री से वेहद मुनाफा मिल रहा है वहॉ के मजदूरो की दशा तो बहुत ज्यादा अच्छी होनी चाहिए। लेकिन यह बात बिल्कुल झूठ है इसका प्रमाण त्रिनिदाद के मजदूरो की दशा से ही मिल सकता है, जहॉ तेल की कपनियॉ अपने हिस्सेदारो को वेतहाशा मुनाफा बॉट रही है। सच वात, जिस पर ध्यान नही दिया जाता, यह है कि किसी जगह की भी भूमि पर पूरी तौर से एकाधिकार स्थापित हो जाने से उन लोगो की दशा, जिनकी जमीन छीन ली गई है, स्वभावतः केवल उसी दरजे तक कायम रक्खी जाती है, जिसमे वे अपने प्राणों को शरीर मे अटकाये रह सकें, चाहे फिर उस माल की पैदावार से जितना भी मुनाफा हो जिसमे ये लोग काम करते हैं।"

अफ्रीका मे अंग्रेजो के कुछ उपनिवेश सब से बडे और मालदार हैं। इनमे से बहुतेरे पुरानी चार्टर-प्राप्त कम्पनियों की जायदाद हैं जो बाद मे बृटिश सरकार ने उनसे प्राप्त कर ली है। यद्यपि ये जायदाद कम्पनियो के हाथ मे बृटिश सेना की ही सहायता से आयी थी, फिर भी जब इनका शासन और राजनैतिक अधिकार बृटिश सरकार को सौंपा गया तो उसके वदले मे इन कम्पनियो को बहुत बड़ी-बडी रकमे मुआविजे के तौर पर दी गयी। इन अंग्रेजी कम्पनियो ने अफ्रीका का मार्ग खुलने के समय से ही अपनी घनिष्टता बृटिश पार्लिमेंट के साथ तथा दक्षिणी अफ्रीका की पार्लिमेंट के साथ खूब अच्छी तरह बढ़ा ली थी और इनके डायरेक्टर सदैव ऊँचे से ऊँचे ओहदे के अंग्रेज़ जमींदारो, भूतपूर्व मन्त्रियो तथा बडे-बडे पूँजी-पतियों के ही मडल से भर्त्ती किये जाते थे। इसी प्रकार जो लोग कम्पनी की नौकरी मे खूब धन और प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते थे और फिर कम्पनी के डायरेक्टर

बन जाते थे वे भी बृटिश पार्लिमेंट के अथवा दक्षिणी अफ्रीका की पार्लिमेंट के मेम्बर बन जाते थे।

इन अंग्रेजी कम्पनियो में से दो सब से बड़ी थी, जिनके नाम थे (१) डि बियर्स (De Beers); तथा (२) बृटिश साउथ अफ्रीका कंपनी। डि बियर्स कंपनी दक्षिणी अफ्रीका मे हीरे की खान का काम करती थी और बृटिश साउथ अफ्रीका कपनी रोडेशिया (Rhodesia) मे सोने की खान का काम करती थी।

'डि बियर्स' की स्थापना सन् १८८८ ई० में तीन ऐसे व्यक्तियो द्वारा की गयी थी जो उन्नीसवी शताब्दी के सब से प्रसिद्ध पूँजी-पति माने जाते थे और जिनके नाम थे (१) सीसिल रोड्स (Cecil Rhodes), (२) बार्नें बार्नेंटो (Barney Barnato) तथा (३) अल्फ्रेड बीट (Alfred Beit)। दक्षिणी अफ्रीका के किम्बर्ली (Kimberly) प्रात में पहले बहुत सी अंग्रेजी कपनियाँ खानो से हीरा निकालने का काम कर रही थी। किंतु सन् १८८८ ई० में रोड्स साहब के प्रयत्नो से ये सब कंपनियाँ एक में मिला दी गयी और इनका नाम "डि बयर्स कान्सालिडेटेड माइन्स" (De Bears Consolidated Mines) रक्खा गया। स्वय रोड्स साहब उसके मैनेजर बने, जिससे वह एक शाही आमदनी के हकदार हो गये और उनकी शक्ति अब बेहद बढ गयी। दक्षिणी अफ्रीका की पार्लिमेंट मे अब उन्हे कम से कम चार आदमियो को अपनी मर्जी से ही सदस्य बना कर भेजने का हक प्राप्त हो गया।

१२ मई सन् १८८८ को इस सम्मिलित कपनी के तमाम हिस्सेदारो की जो एक साधारण मीटिंग हुई थी उसमें रोड्स साहब ने इस के विषय मे कहा था कि :—

"इस कपनी की सम्पत्ति का मूल्य समस्त 'गुडहोप' अंतरीप के उपनिवेश की सम्पत्ति के बराबर है। अब हम एक ऐसे व्यवसाय के

मालिक हो गये हैं, जिसने गवर्नमेंट के अंदर एक दूसरी गवर्नमेंट स्थापित कर दी है।"

इस कपनी की वर्तमान पूँजी साढे चार लाख पौड से भी ऊपर है, और इसका मुनाफा सन् १६२३ तथा सन् १६२६ के बीच मे २०% से लेकर ६०% तक बॉटा गया था। सन् १६२६ से १६३६ तक कोई मुनाफा नहीं बँटा, किंतु सन् १६३७ मे फिर ३०% बॉटा गया। रोड्स साहब के दूसरे हिस्सेदार बार्ने बार्नेटो के उत्तराधिकारी उनके तीन भतीजे थे, जिनमे से सब से छोटा जैक बार्नेटो जोल (Jack Barnato Joel) अभी जीवित है और उसका एक लड़का बृटिश पार्लिमेंट का अनुदार पक्ष की ओर से मेम्बर भी है। इस कुटुम्ब के केवल तीन ही आदमी इस समय कम से कम पैंतालीस कपनियो के डायरेक्टर हैं जो दक्षिणी अफ्रीका मे सोने, हीरे और ताम्बे की खानों का काम कर रही हैं, और जिनकी कुल पूँजी ४ करोड़ ३० लाख पौड से भी उपर पहुँचती है। रोड्स साहब के तीसरे हिस्सेदार अल्फ्रेड बीट अविवाहित अवस्था मे मरे थे और करीब एक करोड़ पौड की सम्पत्ति छोड़ गये थे। उनके भतीजे सर अल्फ्रेड बीट इस समय अनुदार दल की ओर से बृटिश पार्लिमेंट के मेम्बर हैं और बृटिश साउथ अफ्रीका कपनी से विशेष सम्बध रखते हैं।

'डि बियर्स के वर्तमान चेयरमैन सर अर्नेस्ट ओपेनहीमर (Sir Ernest Oppenheimer) हैं, जो इस समय ३६ कपनियों के डायरेक्टर हैं। ये कपनियॉ दक्षिणी अफ्रीका मे हीरा, सोना और ताम्बे की खानों का कारबार करती हैं। हीमर साहब के भी एक साढू बृटिश पार्लिमेंट मे अनुदार पक्ष की ओर से सदस्य हैं, और स्वय हीमर साहब दक्षिणी अफ्रीका की पार्लिमेंट के सदस्य हैं।

यहाँ तक तो 'डि बियर्स' का वर्णन हुआ। अब बृटिश साउथ अफ्रीका कपनी का भी हाल सक्षेप मे सुन लीजिए। इसकी स्थापना भी उन्हीं त्रिमूर्तियों द्वारा की गयी थी जिन्होंने 'डि बियर्स' को स्थापित

किया था। किंतु इसके विषय में सरकारी सहायता प्राप्त करने के लिए पार्लिमेंट पर भी प्रभाव डाला गया था और कुछ ऐसे उपायो का सहारा लिया गया था, जो किसी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता। आयरलैंड में उन दिनो मिस्टर पार्नेल के नेतृत्व में होमरूल का आन्दोलन चल रहा था। अतएव पार्लिमेंट के राष्ट्रीय आयरिश सदस्यों को अपनी ओर करने के लिए रोड्स साहब ने उनके होमरूल फ़ंड में १०,००० पौड की चेक बतौर चन्दे के दे डाली और अनुदार सरकार ने भी उसे चुपचाप सहन कर लिया। निदान सन् १८८६ में बृटिश साउथ अफ्रीका कपनी के लिए एक रायल चार्टर प्राप्त हो गया जिससे उसे रोडेशिया प्रदेश के विस्तृत क्षेत्र में अपना पूरा पैर फैलाने का सपूर्ण अधिकार मिल गया।

इस समय इस कपनी का कारबार तमाम रोडेशिया में फैला हुआ है, जिसके उत्तरी प्रदेश का क्षेत्रफल १,४६००० वर्ग मील है और दक्षिणी प्रदेश का क्षेत्र फल २,६१००० वर्ग मील है। इस सम्पूर्ण भूमि पर उक्त कम्पनी को बृटिश चार्टर के अनुसार अपना एकछत्र राज्य करने का अधिकार मिला हुआ था। किंतु सन् १६२३ के १२ सितम्बर को दक्षिणी प्रदेश उसके हाथ से ले लिया गया और उसे बृटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश घोषित कर दिया गया। पश्चात् ३१ मार्च सन् १६२४ को उत्तरीय प्रदेश पर से भी कपनी ने अपना शसनाधिकार हटा लिया और वह बृटिश सरकार को सौप दिया गया।

किंतु इसके बदले मे कपनी को बृटिश सरकार से ३७,५०,००० पौड नक़द मिले और साथ ही उसे वहाँ अपने सोने की खानों का कारबार पूर्ववत जारी रखने का भी पूरा अधिकार दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त देश भर मे उसकी जहाँ-जहाँ रेलवे लाइने फैली हुई हैं उनके सम्बध में भी उसके कुल अधिकार सुरक्षित कर दिये गये हैं। यही नहीं,

उत्तर-पश्चिमी रोडेशिया मे जो भूमि सन् १९६४ ई० तक बेची जायगी उसके मूल्य मे भी इस कपनी का आधा हिस्सा रहेगा।

इस समय कपनी के पास लगभग ३५ लाख एकड़ भूमि रोडेशिया तथा बेकुआनालैंड मे मौजूद है, तथा करीब २७०८ मील लबी रेलवे लाइन पर भी यह अपना पूरा अधिकार रखती है। साथ ही रोडेशिया लैंड बैंक की भी मालिक यही कपनी है। इसके कई डायरेक्टर तथा उनके बधु-बाधवगण इस समय बृटिश पार्लिमेंट के अनुदार सदस्य हैं, और सरकारी नीति मे अपना प्रभावशाली हाथ रखते हैं।

इस प्रकार बृटिश सरकारी नीति और धन की सहायता से ये कपनियॉ अफ्रीका के उपनिवेशों मे अपना विशाल कारबार फैलाकर मनमाना मुनाफा कमा रही है। किंतु क्या इस "सरकारी नीति और धन की सहायता" का कुछ भी अश उन्होंने अपने अफ्रीकन मजदूरों की दशा सुधारने के लिए खर्च किया ? जिन लोगो ने उन्हे इस अपरिमित धनराशि का मालिक बनाने मे अपनी एड़ी और चोटी का पसीना एक कर दिया, उनकी गिरी हुई अवस्था को सुधारने अथवा उनके कष्टो को दूर करने की क्या कोई भी तदबीर की गई ?

अफ्रिकन निवासियो के साथ इन अग्रेजी कपनियो का कैसा व्यवहार होता रहा है इसका परिचय एक दूसरी कपनी के सम्बध मे प्रकाशित सरकारी उपनिवेश की रिपोर्ट से मिलता है, जो सितम्बर सन् १९३८ मे प्रकाशित हुई थी। इस रिपोर्ट मे अफ्रीका के सरकारी उपनिवेशो के निवासियो की जैसी दशा दिखाई गई है वह दृश्य बड़ा ही करुणाजनक है। एक स्थान पर गोरों की वस्ती बसाने के हेतु उनकी भूमि छीनी जाने का वर्णन इस प्रकार दिया हुआ है :—

"करीब १०,००० वर्गमील भूमि की जो स्वीकृति (गोरो के बसने के लिए) दी गयी है उसी से (मूल निवासियो के लिए) जमीन की कमी पड़ गई। दुर्भाग्यवश इस स्वीकृति के बाद ही

बहुसंख्यक मनुष्य अपनी भूमि से निकाल बाहर कर दिये गये, यद्यपि उस समय जमीन की कोई जरूरत न थी और न आज तक ही उसका उपयोग गोरी बस्ती के बसाने के लिए किया गया। परिणामस्वरूप जमीन का एक बड़ा विस्तृत भाग बिल्कुल बेकार पड़ा हुआ है, जहाँ किसी समय की खेती के चिन्ह अब भी आकाश से देखे जा सकते है। यहाँ के मूल निवासी अपनी भूमि के छिन जाने से अत्यत दुखी है इसमे जरा भी सदेह नही।......"

हाब्सन साहब के शब्दो मे "जब तक मूल निवासियो की भूमि पर गोरे खदान वालो तथा जमीन्दारो का अपने व्यक्तिगत व्यवसाय और अदूरदर्शी स्वार्थों के लिए इस प्रकार का आक्रमण होता रहेगा तब तक यह दावा करना कि हम इन निवासियो को आदमी बनाना चाहते हैं या इसी ढग की कोई और बाते केवल पाखड-प्रदर्शन के सिवाय कुछ नही है, चाहे वे किसी खदान के डायरेक्टर द्वारा कही जॉय अथवा किसी राजनीतिज्ञ द्वारा हाउस आफ़ कामन्स मे घोषित की जॉय।"

सरकारी उपनिवेशो के गवर्नर तथा अन्य अफसर लोग अपने उपनिवेश की किसी कपनी मे डायरेक्टर अथवा हिस्सेदार बिना विशेष आज्ञा प्राप्त किये नही हो सकते। किंतु यह प्रतिबध केवल कुछ निश्चित समय के लिए ही रखा गया है। उतना समय बीत जाने पर फिर वे न केवल इन पदो पर हो ही सकते है, बल्कि हुआ भी करते हैं। यही नही बृटिश कामन्स सभा की मेम्बरी की भी वे उम्मीदवारी कर सकते हैं। कहना न होगा कि ये सब भी केवल उसी एक वर्ग के पुर्जे हैं, जिनके अन्य अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य। सर जान एंडर्सन जो इस समय पार्लिमेट के अनुदार सदस्य हैं, सन् १६३२-३७ मे यहाँ बगाल के गवर्नर थे। इसी प्रकार मिस्टर एल० एस० एमरी *

*आजकल यही एमरी साहब भारतमंत्री हैं—अनुवादक

(L. S. Amery) भी जो सन् १९२४-२९ मे बृटिश मन्त्रि-मंडल के अन्दर उपनिवेश मत्री की हैसियय से और (सन् १९२५-२९ मे) डोमिनियन सेक्रेटरी की हैसियत से रह चुके हैं, इस समय दक्षिण-पश्चिमी अफ्रिका मे सोने की खदान का काम करने वाली एक सस्था के डायरेक्टर हैं तथा आस्ट्रेलिया मे भी तीन सोने की खान का काम करने वाली कपनियों के डायरेक्टर हैं। साथ ही एक ट्रस्ट कम्पनी के प्रेसिडेन्ट भी हैं जिसका करीब ३५ लाख पौंड कनाडा मे जमीन और जायदाद के कामों मे लगा हुआ है।

विदेशों में भी बृटिश पूँजी

बृटिश पूँजी-पतियों की एक बहुत बड़ी रकम विदेशों में भी लगी हुई है, और स्वभावतः इनमे से अनेकों पूँजी-पति बृटिश पार्लिमेंट मे सरकारी पक्ष के सदस्य हैं।

नीचे की सूची से प्रकट हो जायगा कि कितने पार्लिमेंटी मेम्बरों का किन-किन देशों मे इस समय व्यापारिक स्वार्थ है :—

देशों के नाम	पार्लिमेंटी सदस्यों की सख्या	व्यवसाय	डायरेक्टरशिप की सख्या
स्पेन	२	लोहा, खदान व जहाज़	२
जुगोस्लाविया ..	१	शीशा (Lead) ..	१
नार्वे .	२	व्हेल (Whaling)	२
मिश्र ...	२	नहर व बीमा ..	२

देश के नाम	पार्लिमेंट सदस्यों की संख्या	व्यवसाय	डायरेक्टरशिप की संख्या
ईराक़ ...	१	बीमा ...	१
चीन ...	१	बैंकिंग ...	१
मेक्सिको ...	३	तेल व सिमेंट ...	३
पनामा ...	१	टैंकर्स ...	१
कोलम्बिया ...	१	सोना ...	३
वेनेजुला ...	२	तेल ...	२
पेरू (Peru) ...	१	आटा ...	१
चिली (Chile) ...	१	आटा ...	१
ब्रेंजिल ...	२	सोना, क़हवा, रूई, पब्लिक वर्क्स	३
अर्जेन्टाइन ...	२	फिनान्स, रेलवे ...	२
युरागुवे (Uraguay)	२	फिनान्स ...	२

इनमें से कुछ व्यवसायिक स्वार्थ अभी हाल की महत्वपूर्ण घटनाओं से भी सम्बध रखते हैं। जून २३ सन् १९३८ को पार्लिमेंट में एक प्रस्ताव किया गया था कि स्पेन के विप्लवकारी जेनरल फ्रैंको के व्यापारी जहाजों पर बृटेन द्वारा रोक लगा दी जावे। इसके उत्तर में उस समय

उल्लेख पहिले एक स्थान पर किया जा चुका है। सन् १९३८ की अंग्रेजी स्टाक एक्सचेज इयर-बुक" (Stock Exchange Yearbook, 1938) मे इस कपनी के संबध में इस प्रकार लिखा है:—

"यह साबुन और मारगरीन के व्यवसाय मे समस्त बृटिश साम्राज्य मे तथा योरोप एव पृथ्वी के अन्य भागों मे भी अपना कब्जा रखती है। साथ ही वह २०० से अधिक दूसरी कंपनियों मे भी अपना हिस्सा रखती है, जिसमें आस्ट्रेलेशिया, कनाडा, और दक्षिण अफ्रिका के अन्दर शक्तिशाली व्यवसायिक स्वार्थ शामिल हैं........"

इस कपनी की पूँजी इस समय ६ करोड़ ७० लाख पौंड से भी अधिक है। साधारण शेयर पर इसका मुनाफा सन् १९३२ से १९३६ तक १५% बाँटा गया था।

इस प्रकार साम्राज्य भर में एवं सम्राज्य से बाहर भी अपना व्यवसायिक जाल फैला रखने वाली कंपनियों के डायरेक्टरों तथा सरकारी उपनिवेशों के भूतपूर्व कर्मचारियों का पार्लिमेंट की कामंस सभा मे बने रहना आज के लिये कोई नई बात नहीं है। पिछले योरपीय महायुद्ध के पहिले भी इसका जहरीला असर बृटिश राजनैतिक जीवन पर बराबर देखा जाता था :—

"दिन पर दिन इस देश मे अर्थात् (इगलैंड मे) भारतीय साम्राज्य तथा सरकारी उपनिवेशो से लौटे हुए ऐसे सैनिकों और राजनैतिक कर्मचारियों की सख्या बढ़ती जाती है, जिनके स्वभाव और रहन-सहन में वहाँ की हुकूमत भरी शान-शौकत और नवाबी तौर-तरीकों का रग पैदा हो चुका है। इनके साथ ही अनेको अंग्रेज व्यापारी, जमींदार, एंजीनियर तथा ओवरसीयर आदि जो इन देशों से लौटकर आते हैं वे भी अपने वहाँ के जहरीले विचारों, चरित्रों और भावनाओं को अपने साथ ही साथ यहाँ (इगलैंड में) लेते आते हैं।

इनमें जो लोग ज्यादा मालदार होते है वे अपनी राजनैतिक आकांक्षाओं को अधिक ऊँचा ले जाते हैं और फिर हमारी पार्लिमेंट की सभाओं के अंदर भी वे अपनी साम्राज्यशाही भावनाओं की स्वार्थपूर्ण और गंदी छूत फैलाया करते है, तथा अपने साम्राज्य-सबंधी अनुभवों एवं सबधो से लाभ उठाकर अपने निजी लाभ के लिए मुनाफे वाली कपनियाँ खड़ी करते एव उनके लिए हर प्रकार की सरकारी रियायतें किया करते है।"—हाब्सन

आज भी ये साम्राज्य के ज़हरीले वातावरण मे पले हुए तथा साम्राज्यशाही में अपना स्वार्थ रखने वाले बहुसख्यक गोरे पूर्ववत् क्रियाशील दिखाई देते हैं। इन्ही लोगो का प्रताप है कि आज इगलिस्तान में भी' सेडीशन ऐक्ट (Sedition Act), पब्लिक आर्डर एक्ट (Public Order Act), तथा ट्रेड्स-डिस्प्यूट ऐक्ट (Trades Disputes Act) जैसे कानून पास किये गये है। इस समय बृटिश अनुदार सरकार का पिष्टपोषण करने वाले इस प्रकार के कम से कम ७६ सैनिक जो साम्राज्य से नौकरी करके लौटे है, ४८ कपनी डायरेक्टर, जिनके कारखाने साम्राज्य भर में फैले हैं, तथा कितने ही सरकारी उपनिवेशो के भूतपूर्व गवर्नर पार्लिमेंट के अंदर अपनी क्रियाशीलता साम्राज्यशाही को मजबूत बनाने में प्रकट कर रहे हैं। हाब्सन साहब के शब्दो में "जो लोग इस देश (अर्थात् इगलिस्तान) के वैधानिक अधिकारो एवं रीतियो को कुचलने तथा प्रजा की स्वतत्रता पर कुठाराघात करने में यहाँ के नवाबो और अमीरो के उपेक्षापूर्ण और घृणाव्यजक व्यवहार पर आश्चर्य प्रकट करते हैं, वे कदाचित् उस ग़ैरजिम्मेदार हुकूमत के बढ़ते हुए जहर को ध्यान में नही लाते, जो हमारी ग़ुलाम बनाने वाली असहिष्णु और अग्रसर साम्राज्य से इस देश (अर्थात् इग्लिस्तान) में भी बराबर प्रवेश कर रहा है।"

टाइम्स नामक पत्र में मिस्टर हेराल्ड स्टैनर्ड के 'वेस्ट इन्डीज़' पर जो तीन लेख निकले हैं उसमें उन्होने कहा है:—

"अब भी समय है कि हमारे धन का वह हिस्सा, जो साम्राज्यवाद के नाम पर बाहर से बटोरा गया है और जिसे हमारी आत्मा अब बुरा कह रही है, वहाँ वापस भेज दिया जाय। (साम्राज्य की) प्रजा की दशा सुधारने वाली नीति तथा उसके लिए उचित उपाय सीधे इंग्लिस्तान से जारी किए जाँय। . आज जिस बात की आवश्यकता है वह है एक ऐसी उत्साहपूर्ण नैतिक लहर की जो हाउस आफ कामन्स से बहती हुई उपनिवेशी दफ्तरों को भली भाँति परिप्लुत करदे—ठीक वैसी ही नैतिक लहर जैसी गुलामी की प्रथा बन्द करने के समय दिखाई दी थी।"

इस प्रकार की लहर का स्वागत कौन नहीं करेगा? किंतु इसके लिए असली नेताओं की जरूरत है और ऐसे असली नेता, हम जानते हैं, वर्तमान अनुदार दल के सदस्यों में कहीं नहीं हैं, जो साम्राज्य में सेवा के भाव से दिलचस्पी दिखाने वालों का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकें। अस्तु, अब केवल एक ही उपाय है, जैसा कि हाब्सन साहब लिखते हैं:—

"सरकारी सहायता के बल पर राष्ट्र के साधनों को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए इस्तेमाल करने वाली साम्राज्यवादी शक्तियों का विनाश केवल सच्चे जनतन्त्र-शासन की स्थापना के द्वारा किया जा सकता है, जिसमें सार्वजनिक नीति का नियन्त्रण केवल प्रजा के हित के लिए उसी के चुने हुए ऐसे प्रतिनिधियों के हाथ में देना चाहिए, जिनपर प्रजा का पूरा अधिकार है"।

आज दुनिया के तमाम हिस्सों में एकतन्त्र शासन और जनतन्त्र शासन के बीच एक भयंकर संघर्ष चल रहा है। उपनिवेशी साम्राज्य भी इससे मुक्त नहीं। आज हम सबों के शिर पर एक महायुद्ध* की संभावना नाच रही है।* और कोई यह नहीं कह सकता कि इस

* अब यह संभावना वास्तविकता में परिणत हो चुकी है और रणचंडी का प्रलयकारी नृत्य योरोपीय आंगन में एक छोर से दूसरे छोर तक अपना विकराल रूप धारण कर रहा है। अब तक अनेकों देश अपनी स्वतन्त्रता को इसकी भेंट कर चुके हैं। आगे क्या होगा ईश्वर जाने। —अनुवादक।

महायुद्ध का अंतिम निर्णय करने में साम्राज्य के इन उपनिवेशो का भी एक महत्वपूर्ण भाग न रहेगा। किंतु जब इन उपनिवेशो के निवासियों को स्वय स्वशासन के अधिकार नहीं मिले हैं और न उन्हे देने के लिए बृटिश शासक वर्ग अभी तैयार ही है, तब भला ये जनतन्त्रवाद के युद्ध में क्या हौसला दिखायेगे ? स्वराज और जनतत्रवाद की रक्षा का जो दावा बृटिश अनुदार पक्ष अब तक करता आ रहा है वह इन उपनिवेश निवासियों की दृष्टि मे केवल पाखडियो का अद्भुत् पाखड मात्र जान पड़ेगा।

अनुदार पक्ष से शासित बृटेन यदि आज किसी सकट मे फँस जाय तो विश्वास रखना चाहिए कि सरकारी उपनिवेशो के निवासी उसकी सहायता करने से बिल्कुल इन्कार कर देंगे, और जहाँ कही वह अपने को समर्थ देखेंगे वहाँ शासको से शक्ति छीनने की चेष्टा करेंगे। सारा बृटिश साम्राज्य इस समय डगमग दशा मे दिखाई दे रहा है और कोई भी गहरा धक्का इस अवस्था का अत कर देने के लिए काफी होगा, जिसमें एक नन्हे से टापू का व्यापारी समुदाय दुनिया के एक बड़े भारी हिस्से पर हुकूमत चला रहा है।

वास्तव मे जनतत्रवाद के युद्ध में बृटिश साम्राज्य की स्थिति बड़ी ही नाज़ुक है, और इसका कारण है भीतरी फूट। फासिज्म द्वारा भी इसमें आतरिक झगड़े फैलाये जाने के भय मौजूद है। अभी हाल में फिलस्तीन मे जिस प्रकार अरबो की शिकायतो को उभाड़ कर इटली की तानाशाही ने अपना मतलब साधने के लिए गृह-युद्ध छिड़वा दिया था, वह उपरोक्त कथन की पुष्टि के लिए एक काफ़ी उदाहरण है। अस्तु, निश्चय है कि बृटिश साम्राज्य की शक्ति में दिन पर दिन कमजोरी आती जायगी, जब तक कि उस कमजोरी को मिटाने के लिए कोई वास्तविक उपाय न किया जाय। दूसरे शब्दो में अगर वर्तमान अनियत्रित शासन के बजाय उसमें सच्चा जनतंत्रशासन नही स्थापित किया जाता तो इस साम्राज्य के अलग-अलग टुकडे हो जाना अनिवार्य है।

बृटिश साम्राज्य की कमजोरी से उपनिवेश-निवासियो को भी नुक्सान पहुँच सकता है, कारण कि ऐसी दशा मे वे फासिज्म अर्थात् तानाशाही के शिकार आसानी से बन सकते है। किंतु अंग्रेजो के लिए तो वह एकबारगी विनाश का ही कारण बन सकता है, कारण कि साम्राज्य के भीतर और बाहर से जितनी अधिक सहायता की उन्हे आज जरूरत है उतनी पहले कभी नही हुई। और इस कमजोरी का सारा उत्तरदायित्व बृटिश अनुदार-दल के व्यापारियो पर है। इन्ही लोगो ने हमे (अर्थात् अंग्रेजो को) आज करोडो आदमियो की सहानुभूति और मित्रता से वंचित कर दिया है। बृटिश अनुदार सरकार के प्रति उपनिवेशी जनता के मन मे सिवाय अविश्वास और संदेह के दूसरा कोई भाव पैदा ही नही हो सकता। अनुदार दल और पूँजीवाद अब दोनो सदा के लिए एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये हैं।

अब जब तक कोई ऐसी बृटिश सरकार स्थापित न हो जो जनतंत्र-वाद मे अपना सच्चा विश्वास रखती हो और जो अपने कार्यो से भी यह सिद्ध करने के लिए तैयार हो कि वह साम्राज्य-निवासियो की स्वतंत्रता-प्राप्ति मे सहायता देने की सचमुच इच्छुक है, तब तक वह सहानुभूति कदापि नहीं प्राप्त की जा सकती, जिसे अनुदार सरकार ने इस शोक-जनक रीति से अपने हाथो गवाँ दिया है। यदि ऐसी सरकार स्थापित हो जाय तो वह जनतंत्र-राष्ट्रो का एक ऐसा संघ तैयार कर सकती है जो आपस मे प्रेम और मित्रता का नाता रखते हुए एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रह सके। ऐसे संघ को कोई भी न छोड़ना चाहेगा, यदि उसका संगठन सबो के हित की दृष्टि से किया गया हो और न केवल बृटिश शासकदल के व्यापारियो की ही स्वार्थसेवा के लिए हो। वर्तमान कमज़ोर अंग्रेजी साम्राज्य के स्थान पर एक ऐसा ज़बर्दस्त राष्ट्रों का संघ खड़ा दिखाई देगा, जो सारे संसार की शांति, सुख और स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने में बड़ी भारी सहायता पहुंचा सकता है।

छठवां अध्याय

हाउस आफ़ कामन्स में अंग्रेज़ी सामंतों या नवाबों का घराना

"अंग्रेज़ नवाबी घरानों का मूल रहस्य मुर्दों को जीवितों की मान-मर्यादा का उद्‌गम स्थान मान लेने में है तथा जीवित मनुष्यों की प्रतिष्ठा को उनके व्यक्तिगत चरित्र और आचरणों पर उतना निर्धारित न करके उनके मरे हुए पूर्वजों की ही हैसियत और कार्यों पर निर्धारित रखने में है। लेकिन चूँकि ये नवाबी घराने शेष जनसमुदाय से बिल्कुल अलग नहीं रह सकते तथा इनकी शाखायें और प्रतिशाखायें अनेक क्षेत्रों में पहुँचती हैं, और चूँकि समाज में इनका गहरा प्रभाव भी सामाजिक सम्बन्धों को सदा प्रभावित करता रहता है, इसलिए तमाम लोगों के मन अब धीरे-धीरे उसी विचारशैली में अभ्यस्त हो गये हैं, जिसे देखकर अन्यथा वे अपना मुँह सिकोड़ लिये होते।"—Lecky, "Rise and Influence of Rationalism," Vol. I.

अधिकांश अनुदार पार्लिमेंटी सदस्य, जिनका इस पुस्तक में उल्लेख किया जा चुका है, उपाधिधारी व्यक्ति हैं। इनके अतिरिक्त बहुतेरे और भी ऐसे हैं, जिनका उल्लेख नहीं किया गया है और जो अंग्रेजी सामंत घरानों के वंशज हैं। इस समय निम्न-लिखित व्यक्तियों को हम हाउस आफ़ कामन्स में सरकारी कुर्सियों पर बैठे हुए देखते हैं :—

(१) अर्ल विंटर्टन (Earl Winterton).
(२) मार्किस आफ टिचफील्ड (Marquess of Titchfield).

(३) मार्किस आफ क्लाइड्सडेल (Marques of Clydesdale).

(४) वाईकाउन्ट क्रेनबर्न (Viscount Craneborne)

(५) वाईकाउन्ट कैसूलरीग (Viscount Castlereagh)

(६) वाईकाउन्ट वुल्मर (Viscount Wolmar)

(७) लार्ड वैनियल (Loid Baniel)

(८) लार्ड बर्गले (Lord Burghley)

(९) लार्ड ऐप्सली (Lord Apsley)

(१०) लार्ड सी० क्रिश्टन-स्टुअर्ट (Loid C. Crichton-Stuart)

(११) लार्ड डनग्लास (Lord Dunglass)

(१२) लार्ड विलियम स्काट (Lord William Scott)

(१३) लार्ड विलोब डि एरिसबी (Lord Willoughby de Eiesby)

ये लोग प्रजावर्ग के मनुष्य नही है, किंतु फिर भी ये कामन्स सभा के मेम्बर हैं। ये सब के सब अनुदार दल के लोग हैं। लेकिन यह भी सरकारी पक्ष के केवल कुछ थोड़े ही से इने-गिने उपाधिधारी व्यक्तियों के नाम हैं। इनके अतिरिक्त ढेरो बैरोनेट, नाइट तथा आनरेबुल उपाधियों से भी विभूषित लोगों की भीड़ सरकारी कुर्सियो पर बैठा करती है। साथ ही बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो यद्यपि उपाधिधारी तो नहीं हैं, लेकिन फिर भी नवाबी घरानो के आदमी हैं।

साधारण लोगों मे यह विश्वास प्रचलित है कि वर्तमान राजनीति मे नवाबी घरानों का प्रभाव बहुत कम रह गया है, किंतु यह केवल एक भ्रम है। रईसो और नवाबों का राजनैतिक प्रभाव केवल लार्डस-सभा तक ही सीमित नही है। कामन्स-सभा मे तथा मन्त्रिमंडल मे भी